सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 80, नई दिल्ली, शुक्रवार 30 मई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

आदत किसी भी चीज की अच्छी नहीं होती, अति होने पर हमेशा कष्टदायक होती है।

03 भाजपा सरकार 100 दिन की अल्प अवधी में एक साकारात्मक सरकार की...
06 जनसंख्या विस्तार: भारत की महिलाओं पर मौन बोझ
08 धान का एमएसपी 3000 रुपये होगा: समाजवादी पार्टी

क्या आप जानते हैं की सड़क पर अगर दुर्घटना होती है तो सरकारी अधिकारियों के खिलाफ भी कानूनी कार्रवाई का आदेश है?

संजय बाटला

नई दिल्ली। सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जारी गेजेट नोटिफिकेशन के अनुसार किसी भी सड़क पर अगर कोई हादसा/ दुर्घटना होती हैं तो दिल्ली पुलिस, दिल्ली यातायात पुलिस, पीडब्ल्यूडी/सीपीडब्ल्यूडी अधिकारी का दायित्व बनता है की सड़क पर दुर्घटना की पूरी जांच कर अपनी रिपोर्ट दर्ज कर दुर्घटना / हादसे के कारण का निवारण करवाए। अगर सरकारी विभाग के अधिकारी अपना दायित्व नहीं निभा रहे तो उनके खिलाफ भी कानूनी कार्रवाई अनिवार्य है।

दिल्ली की सड़को पर प्रतिदिन हादसे/ दुर्घटनाएं हो रही हैं और कोई भी सरकारी विभाग अपना दायित्व नहीं निभा रहा जिससे कई ऐसे स्थान भी हैं जहां लगातार हादसे घटते रहते हैं और उसका कारण सरकारी विभाग के अधिकारी हैं जिन्होंने अपनी ड्यूटी का निर्वाह नहीं किया। यह हमारा दुर्भाग्य है की कानून होते हुए भी दिल्ली पुलिस का अधिकारी जिसको उस हादसे की जांच का कार्य सौंपा जाता हैं वह एफआईआर दर्ज करते समय उसमें अपना दायित्व ना निभाने वाले सरकारी विभाग के अधिकारियों का नाम दर्ज नहीं करते जिस कारण से सड़क पर उनके दायित्व की पूर्ति ना करने से हुई दुर्घटना की सजा से बचे रहते हैं।

उन अधिकारियों जिनकी लापरवाही के कारण

1. अमूल्य जीवन नष्ट हो रहा हैं
2. सड़के रक्त से रंगी हुई नजर आ रही हैं
3. सड़को पर जाम नजर आ रहा है
4. नारी का सुहाग उजड़ गया
5. मां के जिगर का टुकड़ा चला गया
6. पिता ने अपना लाल खो दिया
7. बहन ने अपना भाई खो दिया

और कानून के तहत सजा होने के बावजूद सिर्फ एक अधिकारी जिसे एफआईआर दर्ज करते समय एवं पूर्व सूचना में इन अधिकारियों के नाम जिनकी लापरवाही के कारण सड़क पर हुए हादसे में दर्ज नहीं करने से सजा पाने से बच रहे है।

जनता से अपील एक भी सड़क हादसे में किसी निर्दोष की जान जाने से बचाने के लिए आप भी अपने दायित्व को निभाए और भारत सरकार द्वारा कानून में लिखित ऐसे अधिकारियों जिनकी लापरवाही से किसी निर्दोष की जान गई है को सजा दिलवाने के लिए दुर्घटना की जांच के लिए नियुक्त आईओ (पुलिस अधिकारी) से सभी सरकारी विभागों के अधिकारियों का नाम दर्ज करवा कर सजा दिलवाए।

"जिस दिन एक भी सरकारी अधिकारी को उसकी लापरवाही की सजा मिलनी शुरू हो जाएगी उसी दिन से सड़के सुरक्षित और हादसे बन्द होते नजर आने शुरू हो जाएंगे।

आम बस ने एक और व्यक्ति को कुचल दिया: खंडगिरी में सड़क पर 8 बसें ध्वस्त हो गईं

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : राजधानी में आम बस से कुचलकर एक और व्यक्ति की मौत हो गई है। यह दुर्घटना आज शाम खंडगिरी चौक पर हुई। इस दुर्घटना में बुगुडा, गंजाम के त्रिनाथ बारिक (55) की मौत हो गई। घटना के बाद वहां काफी तनाव फैल गया। सैकड़ों आक्रोशित लोगों ने शव को सड़क पर रखकर जाम लगा दिया।उन्होंने बस चालक की लापरवाही को जिम्मेदार ठहराया। लोगों का गुस्सा यहीं नहीं थमा। उन्होंने गुस्से में 8 आम बसों को तोड़ डाला। करीब एक घंटे तक आक्रोशित लोगों में अफरातफरी मची रही। बड़ी मुश्किल से पुलिस ने लोगों को बातचीत कर शांत कराया। घटना के बाद मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने मृतक के परिवार को 4 लाख रुपये की सहायता राशि देने की घोषणा की। त्रिनाथ भीमटांगी में रहता था और ऐगिनिया स्थित एक बाइक शोरूम में सुरक्षा गार्ड का काम करता था। आज शाम वह काम से साइकिल से घर लौट रहा था। जब वह बारभुजा मार्केट कॉम्प्लेक्स के पास पहुंचा तो पीछे से आ रही एक बस ने उसे टक्कर मार दी और कुचल दिया। उसकी मौके पर ही मौत हो गई। यह देख स्थानीय लोगों ने हंगामा किया तो बस चालक वाहन छोड़कर खंडगिरी थाने में घुस गया। आक्रोशितों ने बस को घेर लिया, यात्रियों को जबरन उतार दिया और बस पर पथराव किया। लोगों का गुस्सा इतने पर भी शांत नहीं हुआ। उन्होंने पुलिस को शव सड़क से नहीं हटाने दिया। शव को सड़क पर रखकर जाम लगा दिया। इस दौरान खंडगिरी चौक पर चलने वाली सभी आम बसों को रोककर तोड़फोड़ की गई। 8 बसों पर आंदोलनकारियों ने हमला किया। लोगों का उग्र रूप देख कमिश्नरेट पुलिस की आड़ में पीछे हट गया। कुछ देर बाद पुलिस अधिकारियों ने लोगों से बातचीत कर स्थिति को नियंत्रित किया। सड़क जाम के कारण करीब एक घंटे तक यातायात बाधित रहा। पुलिस ने दुर्घटना करने वाली बस को जब्त कर लिया है और चालक को हिरासत में ले लिया है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए एम्स भेज दिया है।

दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन मांगो को पूरा ना होने पर पुष्कर धामी के खिलाफ किया भारी धरना प्रदर्शन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन, ने अपनी काफी पुरानी लंबित मांगो को पूरा ना होने पर उत्तराखंड भवन दिल्ली में उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर धामी जी के खिलाफ भारी धरना प्रदर्शन किया.

ट्रांसपोर्टर्स माता सुंदरी गुरद्वारे के पास इखट्ठा हुए और जलूस के रूप में पैदल उत्तराखंड भवन पर जाकर उत्तराखंड सरकार और उत्तराखंड परिवहन विभाग के खिलाफ जमकर नरेबाजी करी. और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर धामी जी के खिलाफ काफी नारे लगाए.

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन ने अपनी मांगो का ज्ञापन प्रधानमंत्री श्री नरेंदर मोदी जी और ग्रह मंत्री श्री अमित शाह जी को अपनी मांगो का ज्ञापन भी सौंपा.

एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट का कहना है की उत्तराखंड से बाहर के राज्यों की टैक्सी बसों को सिर्फ 15 दिन का ग्रीन कार्ड/हिल फिटनेस मिल रही है लेकिन उत्तराखंड की टैक्सी बसों को 6 महीने की.

इस से पेहले पूरे भारत की टैक्सी बसों को 6 महीने की फिटनेस मिलती थी और फीस 600 रुपए होती थी अब हर 15 दिन के बाद 600 रुपए हर बार देने पड़ रहे है बल्कि दलालो को भी 3 से 4 हजार रुपए अलग से देने पड़ रहे है, नहीं

तो परिवहन विभाग के कर्मचारी कोई ना कोई कमी निकाल कर गाडी फेल कर रहे हैं. बल्कि उत्तराखंड की लोकल ट्रांसपोर्टर्स यूनियन वहाँ के परिवहन विभाग के कर्मचारीयो से मिलकर रोज हमारी गाड़ियों में से पर्यटको को जबरजस्ती उतारकार अपनी गाड़ियों से चार धाम यात्रा करा रहे है, बल्कि हमारी टैक्सी बसों को जब्त भी करा कर भारी जुर्माना भी लगवा रहे है.

हमारी मांगे:-

(1)पूरे भारत की टैक्सी बसों को 6 महीने का ग्रीन कार्ड मिले जैसे उत्तराखंड की गाड़ियों को मिलता है.

(2) आल इंडिया टूरिस्ट परमिट की किसी भी टैक्सी बसों को उत्तराखंड के किसी भी जगह से पर्यटक को टूर कराने की इज्जाजत हो.

(3)उत्तराखंड में आने वाले पर्यटको और ड्राइवर्स को पूरी तरह सुरक्षा मिले.

(4)पुलिस और परिवहन विभाग को सख्त निर्देश दिए जाए की देव भूमि में किसी भी ड्राइवर को नाजायज तंग ना किया जाए.

(5)दिल्ली में उत्तराखंड भवन में दिल्ली एनसीआर की टैक्सी बसों को ग्रीन कार्ड बनाने के लिए प्रवधान किया जाए. जिस से हरिद्वार ऋषिकेश में ट्रैफिक जाम भी ना लगे.

(6)उत्तराखंड में बड़ी हुई पार्किंग फीस कम करी जाए.

(7)उत्तराखंड के एयरपोर्ट रेलवे स्टेशन पर किसी भी राज्य से आने वाली टैक्सी बसों को पिक उप करने की इज्जाजत हो और वहाँ से यूनियन के नाम पर गुंडागर्दी बंद की जाए.

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट का कहना है की अपनी मांगो के लिए हमने काफी पत्र श्री पुष्कर धामी जी को लिखें, बल्कि उत्तराखंड के पर्यटन मंत्री श्री सतपाल महाराज जी भी मिलकर उनको अपनी समस्याओ से अवगत कराया.

इसके साथ उत्तराखंड के ट्रांसपोर्ट सचिव, अतरिक्त सचिव, एस एस पी देहरादून से भी मिले.

श्री अजय टम्टा और श्री हर्ष मल्होत्रा जी ट्रांसपोर्ट राज्य मंत्री भारत सरकार से भी मिलकर अपनी मांगो का ज्ञापन भी दिया लेकिन कोई नतीजा आज तक नहीं निकला. इसलिए आज भारी धरना प्रदर्शन उत्तराखंड सरकार और प्रशासन के खिलाफ किया गया है.

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट का कहना है की अगर उत्तराखंड सरकार ने हमारे साथ भेदभाव किया आर हमारी मांगो को नहीं माना तो हमें भी मजबूरी में उत्तराखंड गाड़ियों को दिल्ली में आने से रोकना होगा और हम भी दिल्ली में उत्तराखंड नंबर की टैक्सी बसों को सवारी या पर्यटक नहीं उठाने देंगे. जिसकी जिम्मेदारी उत्तराखंड सरकार और प्रशासन की होंगी क्योकि उत्तराखंड सरकार हमारे ऊपर अत्याचार कर रही है.

"यातायात अनुशासन ही सुरक्षित यात्रा की नींव है"

– डॉ. अंकुर शरण, लॉजिस्टिक्स और रोड सेफ्टी विशेषज्ञ

जनपद बागेश्वर पुलिस द्वारा चलाए गए विशेष चेकिंग अभियान के तहत 83 लोगों के विरुद्ध की गई चालानी व कानूनी कार्यवाही न केवल एक सख्त संदेश है, बल्कि यह समाज को एक आवश्यक शिक्षा भी देती है—यात्रा का उद्देश्य केवल गंतव्य तक पहुँचना नहीं, बल्कि सुरक्षित रूप से पहुँचना होना चाहिए।

☞ रेट्रो साइलेंसर का प्रयोग करने पर दो वाहन सीज होना यह दर्शाता है कि अनावश्यक शोर न केवल ध्वनि प्रदूषण फैलाता है, बल्कि दूसरों की मानसिक शांति को भी भंग करता है। लॉजिस्टिक्स की दृष्टि से देखा जाए तो शोर से ग्रस्त मार्गों पर श्रवण प्रतिक्रिया में देरी होती है, जिससे दुर्घटनाएं बढ़ती हैं।

☞ 59 वाहन चालकों का यातायात नियमों के उल्लंघन के लिए चालान होना यह साबित करता है कि यातायात कानूनों की अनदेखी आम हो चली है, जो न केवल नियमों का उल्लंघन है, बल्कि जीवन के प्रति लापरवाही भी। एक लॉजिस्टिक्स प्रोफेशनल के रूप में मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि ट्रैफिक अनुशासन ही एक सुचारू सप्लाई चेन और जीवनशैली की रीढ़ है।

☞ सार्वजनिक व धार्मिक स्थलों पर शराब पीकर गंदगी फैलाने और हुड़दंग करने वालों पर कार्रवाई यह संदेश देती है कि आज़ादी का अर्थ अनुशासनहीनता नहीं है। यात्रियों को समझना होगा कि सार्वजनिक स्थल सभी के हैं, और वहाँ मर्यादा बनाए रखना सामाजिक जिम्मेदारी है।

सड़कें केवल रास्ते नहीं, जीवन की धड़कन हैं

आज के युग में जब हम तेज़ रफ्तार जीवन जी रहे हैं, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सड़क पर हर एक पल हमारे जीवन का हिस्सा है। सड़क पर अनुशासन बनाकर चलना, हेलमेट पहनना, सीट बेल्ट लगाना, गति सीमा का पालन करना और नशे की हालत में वाहन न चलाना—ये सभी नियम हमारी रक्षा के लिए हैं, न कि किसी दंड के लिए।

लॉजिस्टिक्स और यातायात अनुशासन: एक गहरा रिश्ता

लॉजिस्टिक्स की दुनिया में हर सेकंड का मूल्य होता है। एक छोटा सा ट्रैफिक जाम, एक छोटा सा एक्सीडेंट या एक गलती—पूरे सप्लाई चेन सिस्टम को बाधित कर सकता है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम ट्रैफिक रूल्स को 'अनिवार्य बाध्यता' न समझें, बल्कि 'सुरक्षा संस्कृति' का हिस्सा बनाएं।

बागेश्वर पुलिस का यह अभियान प्रशंसनीय है और इसे देशभर में उदाहरण के रूप में लिया जाना चाहिए। यात्रियों, युवाओं और लॉजिस्टिक्स सेक्टर से जुड़े सभी लोगों को यह समझना होगा कि जिम्मेदार नागरिक वही होता है जो नियमों का पालन करता है।

"अनुशासन से चलें, सुरक्षित रहें और दूसरों को भी सुरक्षित रखें।"

✍ डॉ. अंकुर शरण
लॉजिस्टिक्स विशेषज्ञ एवं रोड सेफ्टी अभियानकर्ता
संस्थापक – Dr. Logistics
drlogistics.ankur@gmail.com

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

उमा चतुर्थी व्रत आज

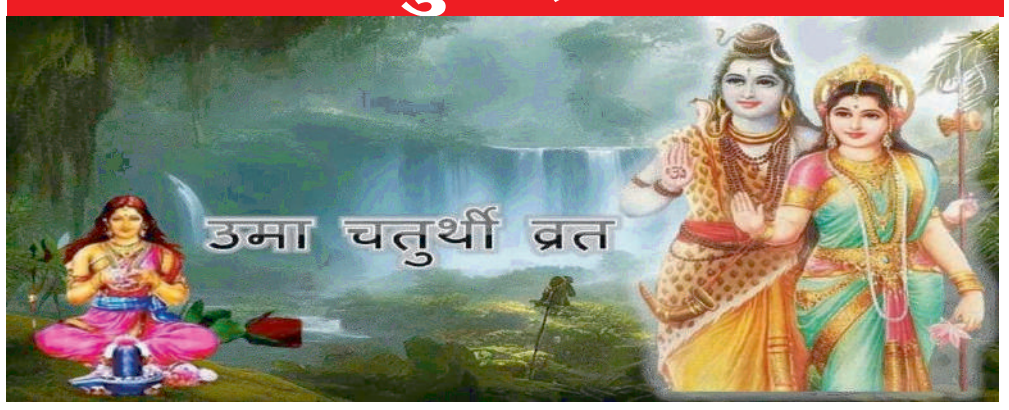

भारत के पूर्वी भाग पश्चिम बंगाल, झारखण्ड़, उडीसा में ज्येष्ठ मास की शुक्लपक्ष की चतुर्थी को उमा चतुर्थी के नाम से जाना जाता है। इस दिन देवी पार्वती की पूजा किये जाने का विधान है। यह माँ पार्वती को समर्पित है। पौराणिक कथाओं के अनुसार माता सती की मृत्यु के पश्चात उनके वियोग के कारण भगवान शिव में वैराग्य उत्पन्न हो गया था और उन्होने संसार को त्याग दिया था। संसार की भलाई के लिये देवी सती ने देवी पार्वती के रूप में पुनः जन्म लिया और भगवान शिव को पति के रूप में पाने के लिए कठोर तपस्या की थी। देवी पार्वती के द्वारा भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिये जो कठिन तप किया गया और जिसके फलस्वरूप देवी पार्वती और भगवान शिव का विवाह हुआ यह व्रत उसी तप और देवी पार्वती के दृढ़ निश्चय को समर्पित है। यह व्रत विवाहित स्त्रियाँ अपने परिवार की सुख-शांति के लिये करती है।

उमा चतुर्थी कब है?

==========

इस वर्ष उमा चतुर्थी व्रत 30 मई 2025 शुक्रवार के दिन किया जायेगा।

उमा चतुर्थी व्रत की विधि

==========

उमा चतुर्थी व्रत का अनुष्ठान उत्तर भारत में किये जाने वाले प्रसिद्ध हरतालिका व्रत के समान ही है। इस व्रत की विधि इस प्रकार है –

प्रातःकाल स्नानादि नित्य क्रिया से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करें।

पूजा स्थान पर पूर्व की ओर मुख करके देवी उमा (पार्वती) का ध्यान करें। उनकी प्रतिमा या चित्र स्थापित करें। उसके आगे दीपक जलायें। एक जल का कलश रखें।

माता पार्वती को रोली, चावल, हल्दी, मेहंदी इत्यादि श्रृंगार की सामगी चढ़ायें। देवी माँ को गुड़, लवण तथा जौ भी समर्पित करें।

माता को सफेद पुष्प अधिक प्रिय है इसलिये सफेद रंग के फूल देवी उमा को अर्पित करें। ऐसा माना जाता है कि इससे देवी माँ शीघ्र प्रसन्न होती है और मनोवांछित फल प्रदान करती है।

पूजन के बाद माता से अपनी त्रुटियों के लिये क्षमा माँगे। उसके बाद देवी माँ से अपना मनोरथ निवेदन करें।

इस दिन व्रत रखें और एक ही समय भोजन करें। व्रत रखने वाली स्त्री को चाहियें की सुहागिन महिलाओं, ब्राह्मणों तथा गाय का सम्मान करें।

उमा चतुर्थी व्रत के लाभ

==========

इस व्रत को कुंवारी लड़कियाँ और सुहागिन स्त्रियाँ करती है। मान्यताओं के अनुसार इस व्रत को पूरी श्रद्धा-भक्ति के साथ विधि-विधान से करने से

सुहागिनों का सुहाग अखण्ड़ रहता है।

पारिवारिक जीवन सुखमय होता है।

पति-पत्नी के संबन्ध मधुर होते है। रिश्तों में प्यार बढ़ता है।

पति की आयु लम्बी होती है।

कुंवारी कन्याओं को मनपसन्द जीवनसाथी मिलता है।

धन – धान्य में वृद्धि होती है।

माता उमा की कृपा प्राप्त होती है।

साधक की मनोकामना पूर्ण होती है।

बच्चों को 'जीनियस' बनाने के लिए दादी के टिप्स

बच्चों को 'जीनियस' बनाने के लिए दादी के टिप्स बच्चों के मानसिक विकास में माता-पिता और घर के माहौल का अहम रोल होता है। जिस प्रकार बच्चों का शारीरिक विकास के लिए उनका काफी ध्यान रखा जाता है उसी प्रकार मानसिक विकास के लिए भी आपको बच्चों को एक अच्छा माहौल और आपके प्यार और दुलार की जरूरत होती है। आजकल बढ़ती प्रतिस्पर्धा की दौड़ में आगे बढ़ने के लिए बच्चों को शार्प माइंडेड होना बहुत जरूरी है। उन्हें वो सबकुछ पता होना चाहिए, जो उनके लिए जानना जरूरी है। हर माता-पिता का सपना होता है कि उनका बच्चा बुद्धिमान बने और पढ़ाई में आगे निकले। लेकिन क्या आप जानते हैं बच्चों को बुद्धिमान बनाना आपके हाथ में है? जी हां, अगर बच्चों को एक खुशनुमा माहौल दिया जाए खाने में पौष्टिक आहार दिया जाए तो बच्चों को बुद्धिमान बनाना आसान हो जाता है। जानें बच्चों का दिमाग तेज करने के उपाय। दिमागी खेल के फायदे बच्चों के दिमागी विकास और उन्हें बुद्धिमान बनाने के लिए जरूरी है कि बच्चों के साथ छोटे-छोटे दिमागी खेल खेले जाएं। पहले उन्हें विस्तार से खेल का तरीका बताएं फिर उनके साथ बच्चा बनकर ही खेलें और गलती होने पर उन्हें अवश्य बताएं। जिससे वे उस गलती को दोबारा करने से बचेंगे। इन खेल की मदद से उनका दिमाग तो तेज होगा ही साथ उन्हें मजा भी आएगा। प्यार व दुलार वॉशिंगटन यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं द्वारा किए गए अध्ययन के मुताबिक जो महिलाएं अपने नवजात को ज्यादा प्यार व दुलार देती हैं। उनके बच्चों के दिमाग के हिप्पोकेंपस क्षेत्र में ज्यादा नर्व कोशिकाएं बनती हैं जिससे बच्चे का दिमाग तेज होता है। मां से लगाव होने पर बच्चों के दिमागी विकास पर काफी असर होता है। पौष्टिक आहार बच्चों के दिमागी विकास के लिए उन्हें पौष्टिक आहार की बहुत जरूरत होती है। बच्चों को खाने में हरी सब्जियां, फल, दूध, मेवे, अंडे आदि जैसे खाद्य पदार्थ दें। बच्चों को जंक फूड का सेवन कम से कम कराएं। हर रोज सुबह बच्चों को भीगे हुए बादाम की दो तीन गरियां खाने को दें। इससे उनकी याद्दाशत बढ़ती है। पर्याप्त नींद पोषक तत्वों के अलावा, पर्याप्त नींद आवश्यक है। अमरीका में हुए एक अध्ययन के मुताबिक दोपहर में खाना खाने के बाद क़रीब एक घंटे की नींद लेने से बच्चों की याददाश्त बढ़ती है। यूनिवर्सिटी ऑफ मैसाच्युसेट्स के शोधकर्ताओं के मुताबिक दिमाग को मजबूत बनाने और सीखने के लिए दोपहर की नींद बेहद अहम है। स्तनपान कराएं मां का दूध बच्चे के दिमागी विकास के लिए बहुत जरूरी है। नवजात के लिए मां के दूध से अच्छा कोई भी आहार नहीं होता है। एक तरफ जहां स्तनपान से बच्चों को गंभीर बीमारियों से बचाया जा सकता है वहीं यह बच्चों के दिमागी विकास के लिए भी महत्वपूर्ण माना जाता है। डैनिश शोधकर्ताओं के मुताबिक स्तनपान करने वाले बच्चे ज्यादा स्वस्थ और बुद्धिमान होते हैं। किताबों के शौकीन बच्चों के दिमागी विकास के लिए नयी-नयी तकनीक आ चुकी है लेकिन हम किताबों से मिलने वाले ज्ञान को कैसे भूल सकते हैं। ज्यादातर बच्चों को किताबें पढ़ने का शौक होता है। आपको बच्चे की इस शौक में बाधा बनने की जगह उन्हें किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए। यह हर उम्र के बच्चों के लिए बहुत ही फायदेमंद होता है। इससे उन्हें हर तरह का ज्ञान मिलता है। तो अब बच्चों का दिमागी विकास के लिए इन उपायों को अपनायें और अपने प्यारे को बनाए जिनियस। ध्यान रहे बच्चे आपसे ही सीखते हैं इसलिए जैसा आप बोलेंगे व्यवहार करेंगे वे भी वैसा ही करेंगे।

औरंगजेब से जुड़ी है नाथद्वार के श्रीनाथजी मंदिर का इतिहास, जानिए ये दिलचस्प किस्सा

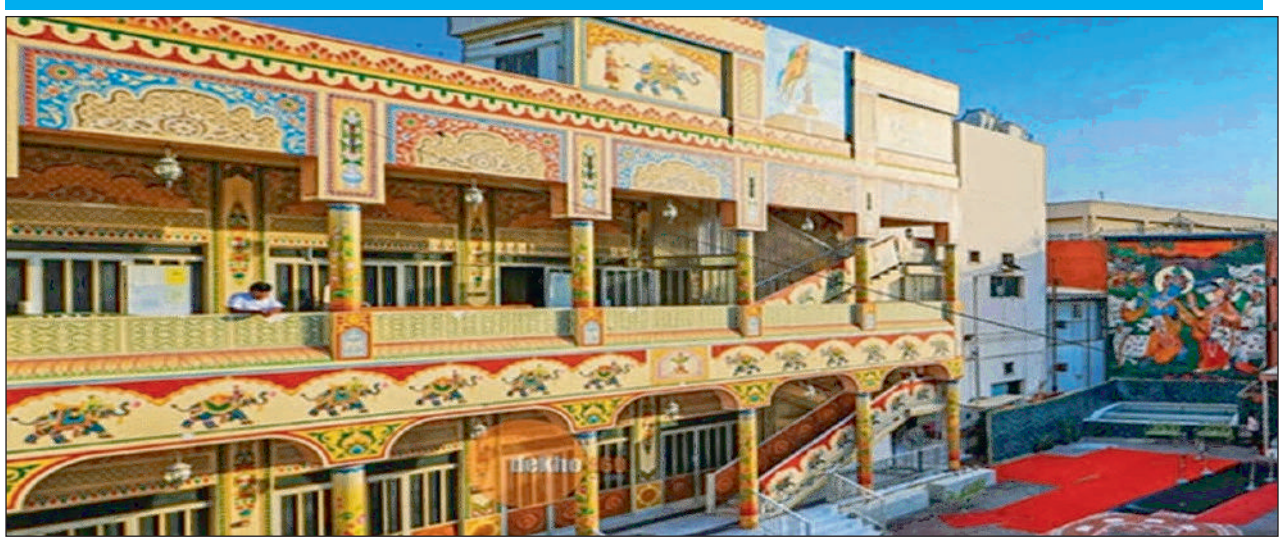

श्रीनाथजी को भगवान श्रीकृष्ण का बाल स्वरूप माना जाता है और देश के कोने-कोने से लाखों की संख्या में श्रद्धालु दर्शन के लिए यहां आते हैं। बता दें कि यहां पर श्रीनाथजी भगवान को यहां पर बाल स्वरूप में पूजा जाता है।

राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र में स्थित राजसमंद जिले का एक छोटा सा शहर नाथद्वार है। लेकिन इस शहर की काफी धार्मिक महत्ता काफी ज्यादा है, यह देशभर में काफी फेमस है। इस शहर का मुख्य आकर्षण का केंद्र श्रीनाथजी मंदिर है। श्रीनाथजी को भगवान श्रीकृष्ण का बाल स्वरूप माना जाता है और देश के कोने-कोने से लाखों की संख्या में श्रद्धालु दर्शन के लिए यहां आते हैं। बता दें कि यहां पर श्रीनाथजी भगवान को यहां पर बाल स्वरूप में पूजा जाता है।

नाथद्वार में स्थित श्रीनाथजी मंदिर में करीब 8 बार भगवान की अलग-अलग प्रकार की पूजा की जाती है। श्रद्धालुओं का मानना है कि श्रीनाथजी भगवान सभी की मनोकामनाएं पूरी करते हैं। फिर चाहे वह गरीब हो या अमीर, इस मंदिर में हर कोई अपनी मनोकामना लेकर दर्शन के लिए आता है। श्रीनाथजी नाथद्वार में एक भव्य हवेली में विराजमान है। इस हवेली को मेवाड़ के तत्कालीन महाराणा राज सिंह ने बनवाया था। इस हवेली की वास्तुकला देखने लायक है और यह हवेली मेवाड़ की शान का प्रतीक है।

श्रीनाथजी मंदिर की कहानी मुगल बादशाह औरंगजेब के समय से जुड़ी है। औरंगजेब ने अपने शासनकाल में देश के कई हिंदू मंदिरों को तोड़ने का आदेश दिया था। उस दौरान मथुरा में बनी भगवान श्रीकृष्ण की बाल स्वरूप वाली मूर्ति को सुरक्षित रखने के लिए दूर ले जाया गया था। इस मूर्ति को मेवाड़ लाया गया था और यहीं पर श्रीनाथजी मंदिर बनवाया गया। हिंदू धर्म के अनुयायियों के लिए यह मंदिर आज भी एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है।

मेवाड़ में वैष्णव संप्रदाय के लोगों द्वारा यह मूर्ति लाई गई थी। उस दौरान मेवाड़ के तत्कालीन शासक महाराणा राज सिंह ने मुगल सम्राट औरंगजेब से मूर्ति की रक्षा किए जाने जा आश्वासन दिया था। जिसके बाद मेवाड़ में इस मूर्ति की पूजा-अर्चना की शुरूआत हुई। बताया जाता है कि यह मूर्ति लाने के दौरान जिस स्थान पर बैलगाड़ी रुक गई थी, उसी स्थान पर एक भव्य हवेली का निर्माण श्रीनाथजी भगवान के लिए किया गया था।

कुंवारी कन्याओं द्वारा हनुमान जी की पूजा से विवाह में होती है देरी, जानिए इस मान्यता में है कितनी सच्चाई

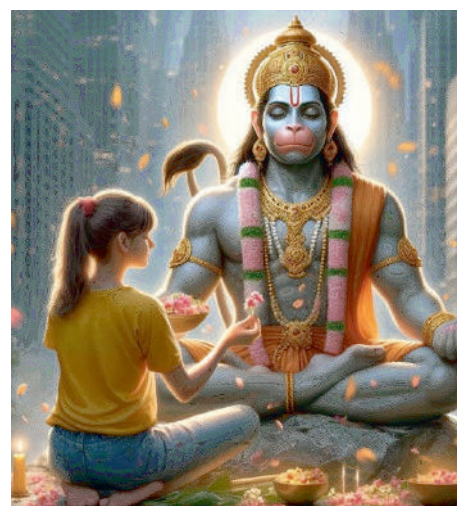

लोक मान्यता है कि यदि कोई कुंवारी कन्या हनुमान जी की पूजा-अर्चना करती है, तो उनकी शादी में देरी होने लग जाती है। इसलिए किसी भी कुंवारी कन्या को हनुमान जी की पूजा नहीं करनी चाहिए। ऐसे में आज हम आपको बताने जा रहे हैं कि इस लोक मान्यता में कितनी सच्चाई है।

हिंदू धर्म शास्त्रों में हनुमान जी की पूजा से जुड़े नियमों का वर्णन मिलता है। वहीं लोगों के बीच कई ऐसी मान्यताएं प्रचलित हैं, जिनका शास्त्रों में वर्णन नहीं मिलता है। इसमें से एक नियम है कि कुंवारी कन्या द्वारा हनुमान जी की पूजा नहीं करनी चाहिए। लोक मान्यता है कि यदि कोई कुंवारी कन्या हनुमान जी की पूजा-अर्चना करती है, तो उनकी शादी में देरी होने लग जाती है। इसलिए किसी भी कुंवारी कन्या को हनुमान जी की पूजा नहीं करनी चाहिए। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि इस लोक मान्यता में कितनी सच्चाई है। क्या वाकई में कुंवारी कन्या द्वारा हनुमान जी की पूजा करने से शादी में देरी होती है।

धार्मिक शास्त्रों में इस बात का उल्लेख मिलता है कि किसी भी महिला को हनुमान जी के पूजा के समय कई नियमों का पालन करना चाहिए। लेकिन शास्त्रों में यह वर्णन नहीं मिलता है कि कुंवारी कन्या द्वारा हनुमान जी की पूजा करने से विवाह में विलंब हो सकता है।

असल में यह लोगों द्वारा बनाई और फैलाई गई एक भ्रांति है। जिसके पीछे यह वजह हो सकती है कि हनुमान जी ने विवाह नहीं किया था। हनुमान जी बाल ब्रह्मचारी थे और इसी वजह से कुंवारी कन्याओं द्वारा हनुमानजी के पूजन और विवाह में देरी की मान्यता फैली है।

हालांकि शास्त्रों में इस बात का उल्लेख मिलता है कि यदि किसी महिला या फिर लड़की को भय लगे, या फिर उनको ऐसा लगने लगे कि किसी अन्य व्यक्ति द्वारा उनको नुकसान पहुंच सकता है। ऐसी स्थिति में हनुमान जी का नाम जप करने से भय और शत्रुओं का नाश होता है।

वहीं धार्मिक शास्त्रों में इस बात का भी उल्लेख मिलता है कि मासिक धर्म के समय पूजा-अर्चना से दूरी बना लेनी चाहिए। इसमें हनुमान जी की पूजा भी आती है। इसके अलावा जो भी महिलाओं और कन्याओं द्वारा हनुमान जी की पूजा से जुड़ी धारणाएं हैं। वह पूरी तरह से निराधार हैं।

जीवन हमें तराश रहा है। यदि हम इसकी छेनी की खरोंचों से घबराकर विरोध कर देंगें तो वह मूरत निखर नहीं पायेगी जो अभी कहीं गहरे में रूकी/ढंकी/बंद/आवृत पड़ी है।

उसके उभरने/अनावरण के लिए हमें जीवन की इन खरोंचों से गुजरना है। यकीन मानिए प्रत्येक के भीतर परमात्म की अतुल्य मूरत अनावरण का इंतजार कर रही है। यदि उसे निखारा जाये तो यह संसार बहुत सुंदर दिखाई देगा जैसे पहाड़/पत्थर में से छेनी/हथौड़े द्वारा किसी सुंदर मूरत को निकाला जाता है। यह सच है कि इस तराशने में वह मूरत समक्ष आई है लेकिन पहले कहीं गहरे में वह बंद/आवृत/ढंकी हुई सदा से मौजूद थी। उसे किसी कुशल शिल्पकार की आवश्यकता थी। उसे किसी खास/विशेष तरह की खरोंचों की आवश्यकता थी जिसने उसे निखार दिया। जब तक न निखरी थी तब तक एक ढूंठ/अनघड़ प्रस्तर मात्र थी। थोड़ी सी खरोंचें क्या मिलीं और उसका जीवन बदल गया। इसलिए हमें भी अपनी जिन्दगी की खरोचों से घबराना नहीं है। ध्यान रहे कि जीवन की यह परिक्षाएं हमें तराश रहीं हैं। प्रशंसा के पीछे का झूठ और निन्दा के पीछे का सच खोजने पर, हम धीरे-धीरे परिपक्वता की सीढ़ी चढ़ने लगतें हैं।

बेटों को भी होनी चाहिए मासिक धर्म की पूरी जानकारी ताकि वे बेटियों की समस्या समझ सकें: काजल कसेर

विश्व मासिक धर्म स्वच्छता दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम, एक कदम लैंगिक समानता की ओर

परिवहन विशेष न्यूज

जांजगीर, छत्तीसगढ़। सोशल एक्टिविस्ट काज़ल कसेर ने हॉकी टीम के किशोर खिलाड़ियों को मासिक धर्म संबंधित जानकारी दी और इसके अलग अलग सामाजिक, भौतिक पहलुओं पर चर्चा की, ताकि वह अपनी आस-पास की माता-बहनों और महिला खिलाड़ियों को जरूरत पड़ने पर मदद कर सकें और उनकी परेशानियों को समझ सकें। काज़ल ने कहा कि मासिक धर्म यानी पीरियड्स केवल लड़कियों या महिलाओं से जुड़ा एक जैविक अनुभव नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक और शैक्षिक मुद्दा भी है, जिससे हर किसी को अवगत होना चाहिए—खासकर लड़कों को। समाज में आज भी पीरियड्स को लेकर अनेक भ्रांतियां और चुप्पियां हैं, जिनकी वजह से किशोरियों को शर्म, असहजता और कई बार स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस स्थिति में बदलाव लाने के लिए लड़कों को भी पीरियड्स की सही जानकारी देना जरूरी है।

काज़ल का कहना है कि जब स्कूलों में लड़के-लड़कियों को समान रूप से मासिक धर्म की शिक्षा दी जाती है, तो वे न सिर्फ एक-दूसरे को बेहतर समझते हैं, बल्कि किशोर लड़के अपने घर और समाज में लड़कियों के लिए अधिक सहयोगी भूमिका निभा सकते हैं। कुछ स्कूलों ने इस दिशा में पहल की है, जहां स्वास्थ्य शिक्षा के तहत सभी छात्रों को पीरियड्स की जानकारी दी जाती है। इससे लड़कों में संवेदन शीलता और जागरूकता आती है, और वे माहवारी को एक सामान्य जैविक प्रक्रिया के रूप में देख पाते हैं।

काज़ल ने कहा कि मासिक धर्म पर खुलकर बात करना लड़कियों के आत्मविश्वास को बढ़ाता है और उन्हें स्कूल, खेलकूद व अन्य गतिविधियों में सक्रिय बनाए रखने में मदद करता है। जब लड़कों को भी इस विषय पर शिक्षित किया जाता है, तो वे महिलाओं के इस प्राकृतिक अनुभव को लेकर मजाक उड़ाने या शर्मिंदा करने की बजाय सहानुभूति और समर्थन दिखा सकते हैं।

काज़ल ने कहा कि भारत में मासिक धर्म जैसी सामान्य किन्तु अति अहम भौतिक प्रकिया को हमेशा से पुरुषों से छुपा कर रखा गया जिसके चलते स्त्रियाँ बहुत सारी परेशानियों को साझा नहीं करती और कई तरह की शारीरिक मानसिक समस्याओं का शिकार होती रही हैं। अपनी मासिक धर्म पर लिखित पुस्तक सुर्खलाल; प्रेमी या राक्षस को लड़कों को बाँटते हुए काजल ने रूढ़ियों को तोड़ने का संदेश दिया।

राजौरी गार्डन बंद पड़े मॉल के अंदर लगी आग आज दोपहर 1:40 के तेज धमाके से पूरे एरिया में धुआं हो गया जान का कोई नुकसान नहीं है माल का नुकसान हुआ है आग बुझाते हुए एक फायर कर्मी इसमें इंजर्ड हुआ फायर की दो गाड़ियों ने आग पर काबू पाया एक पीसीआर मौके पर लोकल पुलिस स्टाफ और डिजास्टर मैनेजमेंट की टीम आपदा मित्र मौके पर थे।

"भाजपा सरकार 100 दिन की अल्प अवधी में एक साकारात्मक सरकार की छवि बनाने में कामयाब हुई है"

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने आज एक पत्रकार सम्मेलन मे कहा की अरविंद केजरीवाल सरकार के 10 साल के कुशासन के बाद जनता ने फरवरी 2025 में भारतीय जनता पार्टी को पूर्ण बहुमत के साथ दिल्ली के विकास एवं रखरखाव का दायित्व सौंपा।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की कल दिल्ली में वर्तमान भाजपा सरकार 100 दिन का कार्यकाल पूरा करने जा रही है। 10 वर्ष के कुशासन के बाद सत्ता में आई सरकार के काम को आंकने के लिए 100 दिन बहुत कम हैं पर यह हर्ष का विषय है की भाजपा सरकार इस अल्प अवधी में एक साकारात्मक सरकार की छवि बनाने में कामयाब हुई है।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की रेखा गुप्ता सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि है की जहां अरविंद केजरीवाल अपनी विफलताओं को छुपाने के लिए केन्द्र सरकार, भाजपा एवं अधिकारियों पर दोषारोपण की नकारात्मक राजनीति करते थे वहीं भाजपा की रेखा गुप्ता सरकार प्रो एक्टिव सरकार है जो दिल्ली वालों की हर समस्या पर पहल लेकर काम कर रही है और इसका काम ही इसकी पहचान बन रहा है।

सचदेवा ने कहा है कल दिल्ली सरकार अपनी 100 दिन की उपलब्धियों को रखते हुए भविष्य का रोडमैप प्रस्तुत करेगी पर आम आदमी के दृष्टिकोण से देखें तो श्रीमती रेखा गुप्ता की सरकार के कुछ मुख्य सफलता बिंदु हैं :

1. आयुष्मान भारत कार्ड जारी कर बुजुर्गों को 10 लाख का हेल्थ कवर देना।
2. दिल्ली को 1 लाख करोड़ का मेगा विकास बजट देना।
3. यमुना सफाई पर कटिबद्धता से काम शुरू करते हुए यमुना में गिरने वाले नालों पर एस.टी.पी. लगाने का बजट आवंटन करना।
4. केजरीवाल सरकार चरमराई डी.टी.सी. सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था छोड़ कर गई उसे संभालते हुए 400 देवी योजना बसे चला कर स्थिती समभाली।
5. दिल्ली जलबोर्ड के टैंकरों में जी.पी.एस. लगा कर जहां झुग्गी क्लस्टर आदि की जल व्यवस्था सुधारी तो वहीं समर एक्शन प्लान ला कर पूरी दिल्ली की जल सप्लाई में भी सुधार लाया है।
6. सरकार ने आयुष्मान अरयोग्य मंदिरों का विकास शुरू कर दिया है जहां लोगों को दवा के साथ सभी स्वास्थ्य जांच एवं एक्स रे की सुविधा मिलेगी।
7. दिल्ली वालों को सड़कों पर परिवर्तन साफ दिख रहा है - लगभग 10 साल बाद नालों की, सीवरों का मेगा सफाई अभियान चल रहा है। दिल्ली नगर निगम की सड़क सफाई में भी सुधार दिख रहा है।
8. महिला सम्मान राशि पर नीतिगत निर्णय हो गया है, बजट भी आवंटित हुआ है, कमेटी काम कर रही है और शीघ्र इस पर कार्य योजना सामने आयेगी।
9. सरकार द्वारा लाये दिल्ली शिक्षा एक्ट से अभिवावकों की उम्मीद बढ़ी है।
10. केजरीवाल सरकार में जहां मंत्री केवल प्रेस कॉन्फ्रेंस में दिखते थे वहीं भाजपा सरकार के मंत्री मंत्रालय एवं सड़क पर समस्याओं से जूझते मिलते हैं।

मोदी सरकार ने पाकिस्तान को धूल चटाई, विपक्षियों के पेट में दर्द जगाई: राजेंद्र वर्मा

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भाजपा के वरिष्ठ ईमानदार, कर्मठ नेता राजेंद्र कुमार वर्मा ने कहा कि पुलवामा आतंकवादी घटना के बाद मोदी सरकार के दृढ़ निर्णय पर भारतीय सेना ने आतंकवाद को मिट्टी में मिला दिया, तथा पाकिस्तान को धूल चटा दी। भारत का विपक्षी दल एवं उनके चाटुकार लगातार कोशिश में है कि सरकार की कमियां निकाली जाए। भाजपा नेता राजेंद्र वर्मा ने कहा कि जब देश की एकता, अखंडता एवं संप्रभुता की बात हो तो इसमें राजनीति करना देशद्रोह जैसा है। उन्होंने कहा कि यह पहली बार हुआ है कि पाकिस्तान की धरती पर जाकर भारतीय सेना ने आतंकवादी ठिकानों को मिट्टी में मिला दिया। राजेंद्र वर्मा ने कहा कि भारत ने अपनी जो ताकत दिखाई है इससे विश्व में भारत का मान बढ़ा है। विश्व के कई देश आज भारत से हथियार खरीदने के लिए तैयार हैं। श्री वर्मा ने कहा कि भाजपा ही एकमात्र राष्ट्रवादी पार्टी है जिसे राष्ट्र के चिंता है नहीं तो देश के अंदर भी गद्दारों की फौज खड़ी है। इन्हें भी सबक सिखाना जरूरी है तथा इस पर कड़ी नजर रखना भी जरूरी है।

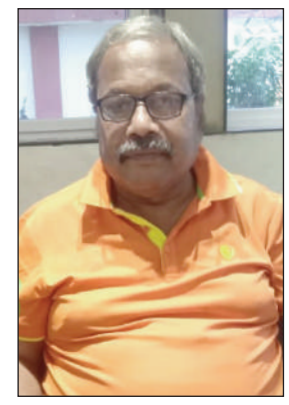

आर्यन कुमार की जबरदस्त डेब्यू फिल्म 'नफ़रतें' का दमदार पोस्टर हुआ रिलीज़, दिखा इंटेंस अंदाज़

मुख्य संवाददाता

इस हफ़्ते अपकमिंग फिल्म नफ़रतें का पोस्टर रिलीज़ होते ही सोशल मीडिया पर सनसनी फैल गई। पोस्टर में डेब्यू कर रहे आर्यन कुमार एक बेहद तीखे और रौबदार लुक में नज़र आ रहे हैं — कैमरे की तरफ उनकी उभरी हुई पीठ, मुंह में सुलगती सिगरेट, और फ्रेम के आग जैसे रंगों में उभरता ग़ुस्सा — सब मिलकर एक ज़बरदस्त प्रभाव छोड़ते हैं। टैगलाइन ₹नफ़रत की राख से, मोहब्बत उठती है₹ फिल्म के दिल में छिपे भावनात्मक संघर्ष की झलक देती है।

नफ़रतें से आर्यन कुमार बॉलीवुड में अपना डेब्यू कर रहे हैं, और उनके इस प्रभावशाली लुक ने पहले ही फैन्स और सिनेप्रेमियों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। फिल्म में आर्यन के अपोज़िट नज़र आएंगी एक्ट्रेस तनिष्क तिवारी।

फिल्म का निर्देशन जॉय भट्टाचार्य और उनकी टीम ने किया है, जबकि निर्माण महेंद्र धारीवाल ने किया है — जो भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में एक जाना-पहचाना नाम हैं। पोस्टर से यह साफ है कि फिल्म एक रॉ और ग्रिट्टी एक्शन ड्रामा होगी, जिसमें बदले, बदलाव और भावनात्मक उथल-पुथल जैसे गहरे विषयों को छुआ जाएगा।

फिल्म का संगीत संजीव चतुर्वेदी ने दिया है और पूरी टीम इस प्रोजेक्ट को एक यादगार सिनेमाई अनुभव बनाने की दिशा में काम कर रही है। *'नफ़रतें' * इस गर्मियों में सिनेमाघरों में रिलीज़ होने जा रही है।

सिर्फ पोस्टर से ही जिस तरह का क्रेज़ बना है, वह आर्यन कुमार की डेब्यू फिल्म और *'नफ़रतें' * की संभावनाओं को लेकर उत्सुकता को दर्शाता है। अगर फिल्म ने अपने विज़ुअल वादों को निभाया, तो यह नया सितारा इंडस्ट्री में तहलका मचा सकता है।

7 जून को आयोजित होने वाली इस वैश्विक प्रतियोगिता में भाग लें और भारत का प्रतिनिधित्व करें

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली।: दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र को इस वर्ष एक अनूठा गौरव प्राप्त होने जा रहा है क्योंकि वर्ल्ड क्विज़ चैंपियनशिप (WQC) 2025 का आयोजन 7 जून को अमृता विश्व विद्यापीठम के फरीदाबाद परिसर में दोपहर 3:00 बजे से किया जाएगा। यह प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता दिल्ली और आस-पास के क्षेत्रों के ज्ञानप्रेमियों को भारत का प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्रदान करती है।

लंदन स्थित इंटरनेशनल क्विज़िंग एसोसिएशन (IQA) द्वारा आयोजित और IQA-एशिया व अमृता विश्व विद्यापीठम के सहयोग से भारत में समन्वित इस प्रतियोगिता का आयोजन एक साथ विश्व के 100 से अधिक स्थानों पर होगा। भारत में इस वर्ष 10 आधिकारिक केंद्र हैं, जिनमें से फरीदाबाद दिल्ली-एनसीआर का एकमात्र केंद्र है।

प्रतियोगिता की विशेषताएं:

x तीन घंटे की लिखित परीक्षा जिसमें 240 प्रश्न होंगे

x आठ श्रेणियों में प्रश्नः विज्ञान, इतिहास, संस्कृति, समसामयिक घटनाएं, मनोरंजन, खेल, जीवनशैली और मीडिया

x प्रतियोगिता सभी के लिए खुली है – उम्र या शैक्षिक पृष्ठभूमि की कोई बाध्यता नहीं

प्रतिभागियों को मिलेगाः

x आधिकारिक प्रमाण पत्र जो उनकी भारत प्रतिनिधि के रूप में भागीदारी को दर्शाता है

x प्रश्नों की प्रिंटेड बुकलेट

x वैश्विक रैंकिंग जो उनके प्रदर्शन के आधार पर प्रदान की जाएगी

भारत की क्विज़ विरासतः

भारत ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई क्विज़ प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। वर्ष 2023 और 2022 में एशिया-पैसिफिक क्विज़ चैंपियनशिप में भारत ने स्वर्ण पदक जीतकर अपनी बौद्धिक क्षमता का प्रदर्शन किया था। नील ओ'ब्रायन डीआई ओपन क्विज़, जो अब अपने 55वें संस्करण में है, भारतीय क्विज़िंग संस्कृति की गहराई को दर्शाता है।

अमृता विश्व विद्यापीठम की प्रतिबद्धताः

भारत के शीर्ष शिक्षण संस्थानों में से एक अमृता विश्व विद्यापीठम नवाचार और अनुसंधान को प्राथमिकता देता है। यह विश्वविद्यालय उद्योग, सरकारी संगठनों और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के साथ मिलकर विभिन्न क्षेत्रों में शोध करता है। वर्ल्ड क्विज़ चैंपियनशिप की मेज़बानी अमृता की वैश्विक जुड़ाव और बौद्धिक विकास की प्रतिबद्धता को सशक्त करती है।

यह वैश्विक स्तर पर समन्वित प्रतियोगिता उन सभी के लिए एक अनूठा अवसर है जो अपनी सामान्य ज्ञान की क्षमता को अंतरराष्ट्रीय मंच पर परखना चाहते हैं।

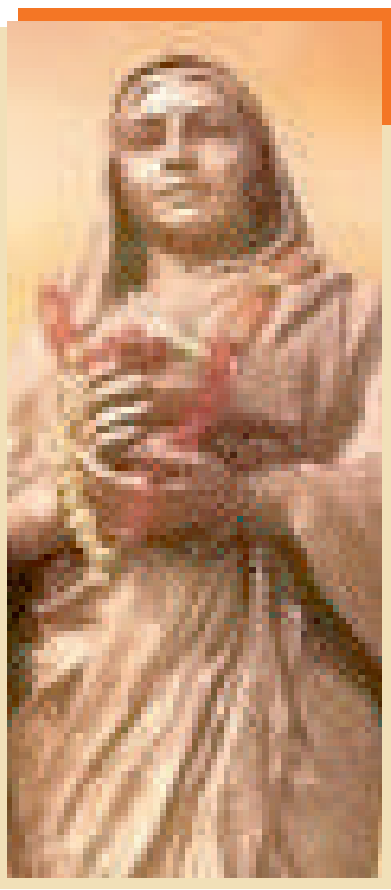

पुण्यश्लोक अहिल्याबाई: सिंहासन की नहीं, सेवा की रानी

जब समय की धूल भरे पन्नों को पलटते हैं, तब एक नाम ऐसा उभरता है जो न केवल इतिहास को रोशन करता है, बल्कि हर हृदय में साहस, करुणा और समर्पण की लौ जगा देता है — अहिल्याबाई होलकर। 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के चौंडी गाँव में जन्मी यह साधारण बालिका नियति की कठिन अग्निपरीक्षाओं से गुजरकर मराठा साम्राज्य की ऐसी युग-प्रवर्तक रानी बनी, जिसने शासन को सेवा, समर्पण और न्याय का पर्याय बना दिया। 'पुण्यश्लोक' अहिल्याबाई होलकर की गाथा केवल इतिहास की कहानी नहीं, बल्कि एक जीवंत दर्शन है, जिसने अपनी सूझबूझ, अटूट दृढ़ता और असीम करुणा से एक युग को नई दिशा दी। वे नारी शक्ति की वह अडिग मूर्ति थीं, जिन्होंने इंदौर को समृद्धि के शिखर पर पहुँचाया और भारतीय संस्कृति को उदारता, धर्म और न्याय के रंगों से सजाया। उनकी जयंती पर उनकी गौरवमयी गाथा को स्मरण करना केवल अतीत को दोहराना नहीं, बल्कि उस अमर चेतना को पुनर्जनन करना है, जो हमें सिखाती है कि सच्चा नेतृत्व सिंहासन की भव्यता में नहीं, बल्कि जन-जन के हृदय में बसने वाली निस्वार्थ सेवा और अटल विश्वास में निहित है।

अहिल्याबाई का जन्म एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। उनके पिता मनकोजी शिंदे ने उन्हें शिक्षा और संस्कारों का ऐसा आलोक दिया, जो उनकी असाधारण प्रतिभा को उजागर करता गया। उनकी बुद्धिमत्ता और संवेदनशीलता ने मराठा सरदार मल्हारराव होलकर का ध्यान खींचा, जिन्होंने उन्हें अपने पुत्र खंडेराव की वधू बनाया। परंतु जीवन ने उनके लिए कांटों भरा रास्ता चुना। 1754 में खंडेराव की युद्ध में मृत्यु, 1766 में ससुर मल्हारराव का निधन और फिर पुत्र मालेराव की असमय मृत्यु — इन त्रासदियों ने उनके जीवन को झकझोर दिया। लेकिन अहिल्याबाई वह अग्निकणिका थीं जो आंधियों में और प्रज्वलित होती हैं। उन्होंने दुखों को अपनी शक्ति बनाया और इंदौर की बागडोर संभालकर एक ऐसे युग का सूत्रपात किया, जो आज भी सुशासन की मिसाल है।

उनका शासनकाल (1767-1795) मराठा इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। अहिल्याबाई ने शासन को केवल सत्ता का खेल नहीं, बल्कि प्रजा के कल्याण का पवित्र कर्तव्य माना। वे प्रातःकाल दरबार में बैठतीं, हर छोटे-बड़े की फरियाद सुनतीं और त्वरित, निष्पक्ष न्याय देतीं। उनकी नीतियों में किसानों को कर में राहत, व्यापारियों को सुगम व्यापारिक मार्ग और प्रजा को आधारभूत सुविधाएँ देने का भाव झलकता था। उन्होंने नदियों पर घाट, कुएँ, बावड़ियाँ और तालाब बनवाए, जो आज भी उनकी दूरदर्शिता के साक्षी हैं। सड़कों का जाल बिछाकर उन्होंने व्यापार और संपर्क को नई गति दी। यात्रियों के लिए धर्मशालाएँ और विश्रामगृह बनवाए, जिससे इंदौर न केवल एक समृद्ध राज्य बना, बल्कि एक ऐसी मिसाल बन गया, जहाँ प्रजा का सुख सर्वोपरि था।

अहिल्याबाई की धार्मिक उदारता उनके व्यक्तित्व का एक और अनमोल रत्न थी। उन्होंने काशी विश्वनाथ, सोमनाथ, रामेश्वरम, द्वारका, बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, हरिद्वार और उज्जैन जैसे पवित्र तीर्थस्थलों का जीर्णोद्धार कराकर उन्हें नवजीवन प्रदान किया, जिससे ये स्थान आध्यात्मिकता के केंद्र के रूप में और सशक्त हुए। पर उनकी भक्ति संकीर्ण नहीं थी। उन्होंने सभी धर्मों का सम्मान किया, मस्जिदों और अन्य धार्मिक स्थलों की देखभाल की और हर समुदाय को समान अवसर दिए। उनके लिए धर्म केवल मंदिर-मस्जिद तक सीमित नहीं था, बल्कि वह जीवन का वह दर्शन था जो मानवता को एक सूत्र में बाँधता था। उनकी यह उदारता और समावेशी सोच आज के विभाजनकारी युग में भी एक प्रेरक मशाल है, जो हमें सौहार्द और सहअस्तित्व का मार्ग दिखाती है।

अहिल्याबाई का व्यक्तित्व एक अनुपम मिश्रण था—एक ओर वीरता से भरा योद्धा, जो युद्धभूमि में मराठा साम्राज्य की ढाल बनकर सेनाओं का नेतृत्व करता था, तो दूसरी ओर करुणामयी माता, जो प्रजा के दुख-दर्द को हृदय से महसूस कर उनकी सेवा में तत्पर रहती थीं। शाही वैभव और ठाठ-बाट से कोसों दूर, सादे वस्त्रों में, बिना आभूषणों के सजीं, उनकी सादगी ही उनकी सबसे बड़ी शक्ति थी। वह सत्ता की ऊँचाइयों पर बैठकर भी जमीन से जुड़ी रहीं। उनके लिए शासन केवल आदेश देने की कला नहीं, बल्कि माता-पिता की तरह प्रजा की रक्षा और पालन करने का पवित्र कर्तव्य था। उनकी हर नीति, हर निर्णय में यह ममत्व और दायित्व झलकता था, जो उन्हें एक युग-प्रवर्तक शासक बनाता है। उनकी यह विरासत आज भी हमें सच्चे नेतृत्व का अर्थ सिखाती है।

13 अगस्त 1795 को, जब अहिल्याबाई ने इस नश्वर संसार को अलविदा कहा, उन्होंने पीछे छोड़ा एक ऐसा अमर विरासत, जो आज भी भारत के कण-कण में जीवंत है। वे सिर्फ इंदौर की रानी नहीं थीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और आत्मा की सच्ची रक्षिका और सेविका थीं। उनका जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची शक्ति सत्ता के ताज में नहीं, बल्कि प्रजा के प्रति निस्वार्थ सेवा, अटूट समर्पण और अडिग न्याय में बसती है। अहिल्याबाई नारी शक्ति की वह प्रखर दीपशिखा थीं, जिन्होंने यह सिद्ध किया कि नारी केवल कोमलता की प्रतीक नहीं, बल्कि साहस, बुद्धि, नेतृत्व और करुणा की जीवंत मूर्ति भी हो सकती है।

आज अहिल्याबाई की जयंती पर हम केवल उनकी गौरवगाथा को नहीं दोहराते, बल्कि उस प्रचंड अग्नि को प्रज्वलित करते हैं, जो हमें सिखाती है कि चाहे चुनौतियाँ कितनी भी विशाल हों, साहस, करुणा और दृढ़ संकल्प से उन्हें पराजित किया जा सकता है। उनका जीवन एक ऐसा निर्मल दर्पण है, जो हमें हमारी जिम्मेदारियों का साक्षात्कार कराता है और सच्चे नेतृत्व का अर्थ समझाता है—वह नेतृत्व, जो प्रजा के हृदय में अमर हो, उनके सुख-दुख में सहभागी बने और उनके जीवन को सार्थक बनाए। अहिल्याबाई की गाथा केवल मराठा साम्राज्य तक सीमित नहीं, बल्कि यह समस्त भारत की आत्मा की पुकार है—एक ऐसी प्रेरणा, जो हमें अपने कर्तव्यों को निष्ठा, नम्रता और समर्पण के साथ निभाने का आह्वान करती है। उनकी विरासत हमें प्रेरित करती है कि हम समाज के लिए ऐसा कुछ रचें, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए गर्व का स्रोत बने। अहिल्याबाई होलकर का नाम मात्र एक इतिहास नहीं, बल्कि एक जीवंत चेतना है—वह शक्तिशाली संदेश, जो हमें पुकारता है: उठो, कर्म करो, और विश्व को उज्जवल बनाओ।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

महाराणा प्रताप की जयंती के अवसर पर पर स्वास्थ्य पर विशेष चर्चा : डॉ हृदयेश कुमार

विश्व पाचन स्वास्थ्य दिवस स्वास्थ्य : पोषण से समृद्धर है, जो स्वस्थ पाचन तंत्र को योगासनों से मिलता है लाभ डॉ हृदयेश कुमार

अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट द्वारा बल्लबगढ़ के सिटी पार्क अंबेडकर चौक पर महाराणा प्रताप की जयंती के अवसर पर आमजन के स्वास्थ्य को गंभीरता से लेते हुए सबसे पहले

महाराणा प्रताप की की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए बताया स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए अन्यथा अपने स्वास्थ्य के हम स्वयं ही जिम्मेदार होंगे इस अवसर पर डॉ हृदयेश कुमार ने बताया कि विश्व पाचन स्वास्थ्य दिवस स्वास्थ्य: पोषण से समृद्धर है, जो स्वस्थ पाचन तंत्र को उचित पोषण की भूमिका पर स्वास्थ्य मुख्य रूप में काम करता है

विश्व पाचन स्वास्थ्य दिवस हर साल 29 मई को मनाया जाता है। इस दिन का उद्देश्य पाचन स्वास्थ्य के महत्व का जागरूक करना है। डब्ल्यूजीओ के मुताबिक, पाचन तंत्र शरीर को इस तरह से सहारा देता है,और पौष्टिक आहार विकल्पों को अपनाकर, लोग अपनी जीवन शक्ति और जीवन की गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं।

पाचन स्वास्थ्य समग्र स्वास्थ्य का आधार बनता है, जो न केवल शारीरिक जीवन शक्ति को प्रभावित करता है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक संतुलन को भी प्रभावित करता है। कुछ ऐसी आदतें हैं जो आपके पेट और पाचन स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद कर सकती हैं।

फल, सब्जियां, फलियां और साबुत अनाज जैसे खाद्य पदार्थ घुलनशील और अघुलनशील फाइबर से भरपूर होते हैं। फाइबर नियमित मल त्याग में मदद करता है, स्वस्थ आंत बैक्टीरिया को पोषण देता है और कब्ज और सूजन को रोकने में मदद करता है।

सही तरीके से चबाने से भोजन छोटे-छोटे टुकड़ों में टूट जाता है और लार में मौजूद पाचन एंजाइमों के साथ मिल जाता है। साथ ही, धीरे-धीरे खाने से अधिक खाने, गैस और सूजन को कम करने में मदद मिलती है।

पूरे शरीर पर असर डालता है थायराइड, नजरअंदाज करना हो सकता है हानिकारक

विश्व पाचन स्वास्थ्य दिवस की मुख्य थीम ₹आपका पाचन स्वास्थ्य: पोषण से समृद्धर है, जो स्वस्थ पाचन तंत्र को सहारा देने में उचित पोषण की भूमिका निभाता है। विश्व गैस्ट्रोएंटरोलॉजी संगठन (डब्ल्यूजीओ) के द्वारा चुनी गई यह थीम संतुलित आहार, पानी और खाने की आदतों के महत्व पर जोर देती है। 2025 का अभियान पाचन समस्याओं का जल्द पता लगाने को प्रोत्साहित करता है और आंत के स्वास्थ्य के बारे में दुनिया भर में बातचीत को

बढ़ावा देता है।

विश्व पाचन स्वास्थ्य दिवस की शुरुआत सबसे पहले 2004 में विश्व गैस्ट्रोएंटरोलॉजी संगठन की 45वीं वर्षगांठ मनाने के लिए की गई थी। तब से, यह 98 से अधिक सदस्य देशों और पाचन स्वास्थ्य वकालत और शिक्षा के लिए प्रतिबद्ध 49000 से अधिक पेशेवरों द्वारा समर्थित एक वैश्विक पहल के रूप में विकसित हुआ है।

दुनिया भर में लाखों लोग पाचन संबंधी विकारों का सामना कर रहे हैं, इसलिए यह दिन जागरूकता बढ़ाने, जानकारी साझा करने और लंबे समय तक आंत के स्वास्थ्य के लिए स्वस्थ जीवनशैली विकल्पों को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर के रूप में काम करता है।

पाचन स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए इन योगासनों का अभ्यास कर सकते हैं

स्वस्थ पाचन तंत्र के महत्व को समझाता है और जीवनशैली और खानपान में बदलाव के माध्यम से पेट से जुड़ी बीमारियों को रोकने का संदेश देता है। पाचन तंत्र को दुरुस्त करने में योगासन असरदार है।

इस विश्व पाचन स्वास्थ्य दिवस के मौके पर कुछ प्रभावी

इस आसन के अभ्यास से गैस, कब्ज और अपच की समस्या दूर होती है।

पवनमुक्तासन पाचन तंत्र को मजबूत करता है और ब्लोटिंग कम करता है।

ये आसन पेट और जांघों की चर्बी कम करने में सहायक है।

पीठ के बल लेटकर दोनों पैर सीधे रखें।

दाएं घुटने को मोड़कर छाती के पास लाएं और दोनों हाथों से पकड़ें।

सिर उठाते हुए घुटने से नाक मिलाने की कोशिश करें।

10-15 सेकंड तक इस स्थिति में रहें, फिर धीरे-धीरे वापस आएं।

ये प्रक्रिया दूसरे पैर के साथ दोहराएं।

दिन में 3-5 बार करें।

वज्रासन

खाने के बाद बैठने वाला इकलौता योगासन है, जो तुरंत डाइजेशन में मदद करता है।

वज्रासन से एसिडिटी, गैस और कब्ज की समस्या दूर होती है।

इसका अभ्यास पेट की चर्बी कम करने में भी मदद करता है।

खाने के तुरंत बाद 5-10 मिनट वज्रासन करने से पाचन तेज होता है।

घुटनों के बल

पेट के बल लेटकर पैरों को सीधा रखें और हाथों को कंधों के नीचे रखें।

गहरी सांस लेते हुए छाती को ऊपर उठाएं और सिर को पीछे ले जाएं।

इस स्थिति में 15-20 सेकंड तक रहें।

सांस छोड़ते हुए धीरे-धीरे वापस सामान्य स्थिति में आएं।

ये क्रिया 3 से 4 बार दोहराएं।

सभा को संबंधित वेद प्रकाश पाराशर ने किया साथ में सुबोध कुमार साह, शिव शंकर राय, सुष्मिता भौमिक, सपनों का आशियाना ट्रस्ट की संस्थापिका राधिका गुप्ता, लाली देवी रेणु देवी रहीश खान रवि शंकरऔर करिश्मा देवी आदि उपस्थित रहे

जानकारी व जागरूक करने के लिए बताया है। उपरोक्त लेख में उल्लेखित संबंधित बीमारी के बारे में अधिक जानकारी के लिए अपने डॉक्टर से परामर्श अवश्य लें।

ओडिशा-झारखंड सीमा पर विस्फोटक लुट कांड में एनआईए का पदार्पण

कार्तिक कुमार परिच्छा,स्टेट हेड झारखंड

मनोहरपुर (प०सिंहभूम), राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एन आई ए) ने बृहस्पतिवार को ओडिशा के सुन्दरगढ़ जिले में माओवादियों द्वारा भारी लूटी गई विस्फोटक की जांच आरंभ कर दी है । ओडिशा के सुन्दरगढ़ में उप महानिरीक्षक (डीआईजी), पुलिस अधीक्षक (एसपी) और एडिशनल एसपी समेत एनआईए के वरिष्ठ अधिकारियों ने राउरकेला का दौरा किया। एनआईए ने मंगलवार को सुंदरगढ़ जिले के बांको में पत्थर खदान में ले जाए जा रहे जिलेटिन के करीब 200 पैकेटों की माओवादियों द्वारा लूट मामले की जांच शुरू कर दी है।

पश्चिमी रेंज के डीआईजी बृजेश राय ने राउरकेला में आज संवाददाताओं को बताया, "विस्फोटकों की लूट की जांच के लिए ओडिशा पुलिस एनआईए को सभी आवश्यक सहायता प्रदान कर रही है।"

उन्होंने बताया कि पुलिस ने विस्फोटक सामग्री ले जा रहे ट्रक के चालक के बयान के आधार पर इस संबंध में मामला दर्ज कर लिया है।

यह लूट झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले के सारंडा के जंगलों के निकटवर्ती क्षेत्र में हुई, जिसे माओवादियों का गढ़ माना जाता है। कथित तौर पर सशस्त्र बदमाशों ने ड्राइवर को बंदूक के बल पर धमकाया और पास के जंगल में गाड़ी ले जाने को कहा, जहां माओवादियों के एक समूह ने लगभग चार टन विस्फोटक लूट लिया। इस बीच, ओडिशा पुलिस ने झारखंड और सीआरपीएफ के सुरक्षाकर्मियों के साथ मिलकर ओडिशा-झारखंड सीमा क्षेत्र में अभियान तेज कर दिया

एमएसपी में वृद्धि :कृषि और किसान कल्याण को गति !

हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने विपणन(मार्केटिंग) सीजन 2025-26 के लिए 14 खरीफ फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में वृद्धि को मंजूरी दी है, यह कृषि और किसान कल्याण के विचार से एक स्वागत योग्य कदम कहा जा सकता है। अच्छी बात है कि आज भारत सरकार कृषि उत्पादन बढ़ाने के साथ ही साथ उत्पादन की लागत घटाने की दिशा में लगातार अपना फोकस कर रही है। बहरहाल, अच्छी बात यह भी है कि सरकार ने वित्त वर्ष 2025-26 के लिए संशोधित ब्याज छूट योजना के अंतर्गत ब्याज छूट को जारी रखने और आवश्यक निधि व्यवस्था को भी मंजूरी दी है। पाठकों को बताता चलूं कि पिछले वर्ष की तुलना में एमएसपी में सबसे अधिक वृद्धि रामतिल (820 रुपये प्रति क्विंटल) के लिए की गई है, इसके बाद रागी (596 रुपये प्रति क्विंटल), कपास (589 रुपये प्रति क्विंटल) और तिल (579 रुपये प्रति क्विंटल) के लिए एमएसपी में वृद्धि की गई है। निश्चित ही एमएसपी में वृद्धि से उत्पादकों को उनकी उपज के लिए लाभकारी मूल्य सुनिश्चित हो सकेगा। कहना ग़लत नहीं होगा कि खरीफ सीजन 2025-26 के लिए 14 खरीफ फसलों पर न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में बढ़ोतरी का यह एक ऐतिहासिक निर्णय है। सभी फसलों की एमएसपी में वृद्धि देशभर की औसत उत्पादन लागत का कम से कम 1.5 गुना सुनिश्चित करते हुए की गई है। वास्तव में सरकार का यह निर्णय हमारे देश के किसानों को सशक्त, समृद्ध और आत्मनिर्भर बनाने तथा उनकी आय बढ़ाने की दिशा में बड़ा कदम कहा जा सकता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार किसानों को उनकी उत्पादन लागत पर अपेक्षित मार्जिन बाजरा (63 प्रतिशत) के मामले में सबसे अधिक होने का अनुमान है, उसके बाद मक्का (59 प्रतिशत), तुअर (59 प्रतिशत) और उड़द (53 प्रतिशत) का स्थान है. शेष फसलों के लिए, किसानों को उनकी उत्पादन लागत पर मार्जिन 50 प्रतिशत होने का अनुमान है। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि आज कृषि और किसान कल्याण के क्षेत्र में लगातार काम हो रहा

है। मसलन, आज किसानों को आज क्रेडिट कार्ड के तहत कम ब्याज पर ऋण उपलब्ध हो रहा है। किसानों को सस्ती खाद,बीज उपलब्ध करवायें जा रहे हैं और फर्टिलाइजर पर भी सब्सिडी प्रदान की जा रही है। इतना ही नहीं, प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि भारत सरकार की एक पहल है, जो किसानों को न्यूनतम आय सहायता के रूप में प्रति वर्ष ₹6,000 तक देती है। पाठकों को बताता चलूं कि इस पहल की घोषणा पीयूष गोयल ने 1 फरवरी 2019 को भारत के अंतरिम केंद्रीय बजट 2019 के दौरान की गई थी। हाल फिलहाल, फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में वृद्धि के तहत सामान्य धान के लिए एमएसपी में 3% की वृद्धि की गई है, जो अब ₹2,369 प्रति क्विंटल निर्धारित की गई है, जबकि ग्रेड ए किस्म ₹2,389 प्रति क्विंटल पर उपलब्ध होगी। ये पिछले वर्ष की तुलना में ₹69 की वृद्धि को दर्शाती है। दालों में, तुअर (अरहर) के लिए एमएसपी को ₹450 बढ़ाकर ₹8,000 प्रति क्विंटल कर दिया गया है, जबकि उड़द में ₹400 की वृद्धि करके ₹7,800 प्रति क्विंटल कर दिया गया है। मूंग के एमएसपी को एडजस्ट किया गया है, जो ₹86 बढ़ाकर ₹8,768 प्रति क्विंटल कर दिया गया है। बहरहाल, अच्छी बात है कि सरकार ने खरीफ की फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा जरूर कर दी है लेकिन अब जरूरत इस बात की है कि सरकार इस पर प्रभावी निगरानी रखें और यह सुनिश्चित करें कि इसका क्रियान्वयन भी धरातल पर सही तरीके से हो सके। इसके साथ ही सरकार को विभिन्न दीर्घकालिक कृषि सुधारों पर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। पाठक जानते हैं कि भारत विश्व का एक बड़ा कृषि प्रधान देश है और यहां की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। ऐसे में फसलों के समर्थन मूल्यों में बढ़ोत्तरी से भारतीय कृषि क्षेत्र निश्चित ही मजबूत और सुदृढ़ हो सकेगा। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि एमएसपी यानी कि न्यूनतम समर्थन मूल्य व्यवस्था की स्थापना वर्ष 1965 में कृषि मूल्य आयोग (एपीसी) (जिसे बाद में सीएसीपी नाम दिया गया) की स्थापना करके की गई थी, जो राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा को बढ़ाने और किसानों को बाजार मूल्यों में महत्वपूर्ण गिरावट से बचाने के लिए बाजार हस्तक्षेप का एक रूप था। दूसरे शब्दों में कहें तो एमएसपी दरअसल वह तयशुदा मूल्य होता है, जो किसानों को बाजार में उनकी उपज के मूल्य से अप्रभावित रहते हुए दिया जाता है। पाठकों को बताता चलूं कि न्यूनतम समर्थन मूल्य या यूं कहें कि एमएसपी का फायदा यह होता है कि बाजार में फसलों की कीमतों में भले ही कितना ही उतार चढ़ाव क्यों न हो, यदि किसी फसल की एमएसपी(न्यूनतम समर्थन मूल्य) तय होती है तो भी किसान को फसल का न्यूनतम समर्थन मूल्य (सरकार द्वारा तय) तो मिलता ही है। मतलब यह है कि बाजार में फसलों की कीमतों में होने वाले उत्तार-चढ़ाव का असर किसानों पर नहीं पड़ता है। गौरतलब है कि फसलों के हर मौसम से पहले सरकार कृषि लागत एवं मूल्य आयोग (सीएसीपी) की सिफारिश पर एमएसपी(न्यूनतम समर्थन मूल्य) तय करती है ।ताजा निर्णय के तहत ज्वार, बाजरा और रागी इत्यादि फसलों की एमएसपी भी बढ़ा दी गई है। विभिन्न कारणों से आज भारतीय कृषि में खेती की लागत लगातार बढ़ रही है। किसानों को असामान्य जलवायु परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, जैसा कि भारतीय कृषि को 'मानसून का जुआ' कहा जाता है। वैश्विक मंदी के कारण आज बाजार भी लगातार अस्थिरता से जूझ रहे हैं। ऐसे समय में सरकार द्वारा धान एवं दालों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि से जहां एक ओर देश के लाखों-करोड़ों किसान लाभान्वित हो सकेंगे, वहीं दूसरी ओर उन्हें कृषि उत्पादन बढ़ाने हेतु प्रोत्साहन मिल सकेगा। इससे देश की खाद्य सुरक्षा भी कहीं न कहीं सुनिश्चित हो सकेगी, लेकिन कहना ग़लत नहीं होगा कि एमएसपी का प्रभावी कार्यान्वयन बहुत ही जरूरी और महत्वपूर्ण है, क्योंकि बिचौलिए आज भी एक बड़ी समस्या हैं। अंत में यही कहूंगा कि किसान और कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की असली रीढ़ हैं। आज जरूरत इस बात की है कि खेती से बिचौलियों की भूमिका को खत्म करने की दिशा में आवश्यक व जरूरी कदम उठाए जाएं। कृषि क्षेत्र में आज फसलों के भंडारण की समस्या भी बहुत बड़ी समस्या है। हमारे यहां विदेशों की भांति पारदर्शी खरीद तंत्र विकसित नहीं है। फसलों की बाजार तक पहुंच भी सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। आज भारतीय कृषि में दीर्घकालिक सुधारों की आवश्यकता है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि कृषि में दीर्घकालिक सुधार का अर्थ है एक ऐसी प्रणाली विकसित करना जो खाद्य उत्पादन, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए, कृषि क्षेत्र को टिकाऊ और लाभदायक बना सके ।इस सुधार में भूमि पुनर्जनन, जैव विविधता का संरक्षण, और नई तकनीकों(सिंचाई, गुणवत्तापूर्ण बीज, तकनीकी सहायता व प्रशिक्षण) का उपयोग शामिल है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार,

कानपुर में मोदी के लिए सुरक्षा के कड़े इंतजाम , यातायात परिवर्तन

सुनील बाजपेई

- करेंगे 21 हज़ार करोड़ रुपये की परियोजनाओं का शिलान्यास उद्घाटन

कानपुर। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने देशव्यापी दौरे में आज शुक्रवार को कानपुर पहुंचेंगे। इसके लिए कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के साथ ही यातायात भी बड़े पैमाने पर परिवर्तित किया गया है।

पीएम मोदी के शहर आगमन पर आज 30 मई को तड़के 4 से रात 8 बजे तक विभिन्न स्थानों पर रूट डायवर्जन रहेगा। इस दौरान पूर्व में जारी किए गए सभी वाहन पास निरस्त रहेंगे। यातायात विभाग ने अपील की है कि कार्यक्रम के दिन शहर में वीआईपी रोड और जीटी रोड से गुजरने के बजाए वैकल्पिक मार्गों से गुजरें।

आज कानपुर आगमन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करीब 21 करोड़ रुपये लागत वाली परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास करेंगे। वह मोदी इस दौरे के दौरान पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए शुभम द्विवेदी के परिजनों से भी मुलाकात कर सकते हैं। अपने इस एक दिवसीय दौरे में वह यहां कई विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन भी करेंगे। वह 2,120 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली कानपुर मेट्रो रेल परियोजना के चुन्नीगंज मेट्रो स्टेशन से कानपुर सेंट्रल मेट्रो स्टेशन तक के खंड का उद्घाटन करेंगे।

इसके अतिरिक्त, मोदी जीटी रोड के सड़क चौड़ीकरण और सुदृढ़ीकरण कार्य का भी उद्घाटन करेंगे। साथ ही बिजली उत्पादन क्षमता को बढ़ावा देने के लिए कई परियोजनाएं शुरू की जाएंगी। प्रधानमंत्री क्षेत्र की बढ़ती ऊर्जा मांगों की पूर्ति के लिए गौतम बुद्ध नगर के यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (वाईईआईडीए) के सेक्टर 28 में 220 केवी उपकेंद्र की (डिजिटल माध्यम से) आधारशिला रखेंगे। वह ग्रेटर नोएडा के इकोटेक-8 और इकोटेक-10 में 320 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाले 132 केवी सबस्टेशन का उद्घाटन भी (डिजिटल माध्यम से) करेंगे।

प्रधानमंत्री कानपुर में 8,300 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली 660 मेगावाट की 'पनकी थर्मल पावर एक्सटेंशन' परियोजना का उद्घाटन करेंगे जिससे उत्तर प्रदेश की ऊर्जा क्षमता बढ़ेगी। वह घाटमपुर थर्मल पावर परियोजना की 9,330 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली तीन 660 मेगावाट की इकाइयों का भी उद्घाटन करेंगे। पीएम की सभा में सा में लोगों को लाने की लगभग 800 से बसों का भी इंतजाम किया गया है। जहां तक सुरक्षा का सवाल है। इसके लिए कई जिलों का फोर्स भी बाहर से बुलाया गया है ।

अमेरिका ने दुनियाँ भर में अपने दूतावासों पर नए स्टूडेंट वीजा के लिए इंटरव्यू पर रोक लगाई

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ का हर देश यह महसूस कर रहा है कि, डोनाल्ड ट्रंप के अमेरिका के राष्ट्रपति चुने जाने से वे अपने चुनाव प्रचार में किए गए वादों को पूर्ण करने में तेजी से जुटे हुए हैं, अगर हम ट्रंप के चुनावी प्रचार की करीब-क़रीब हर सभा को देखें तो उसमें उन्होंने अमेरिकी फर्स्ट, टैरिफ, यूक्रेन-रूस युद्ध विराम, हमास-इजरायल युद्ध विराम सहित अनेको ऐसे वादे किए थे जो अमेरिका को फिर नंबर वन पर लाने में सहायक सिद्ध होंगे। पूरी दुनियाँ देख रही है कि ट्रंप अपने किए गए वादों को, एक के बाद एक पूरा करते हुए चले जा रहे हैं। इसी कड़ी में नए स्टूडेंट्स के लिए अमेरिका वीजा रोकने का फैसला भी देखा जा रहा है। मेरा मानना है कि अगर विदेशी छात्रों को अमेरिका पढ़ने के लिए आने के लिए रोकेंगे तो, स्थानीय छात्रों को अधिक मौका मिलेगा जिससे अमेरिका फर्स्ट का वादा पूरा होगा। दूसरे एंगल से अगर हम देखें तो हमने कई मौका पर अनेक विवादों में अमेरिका में पढ़ने आए विदेशी छात्रों द्वारा दूतावासों पर जाकर प्रदर्शन आंदोलन कर माहौल खराब करने की कोशिश की जाती है, जिसका संज्ञान शायद ट्रंप साहब ने लिया होगा। कुल मिलाकर इस फैसले से आंदोलनप्रदर्शन आतंकवाद समर्थन पर रोक तथा अमरीक फर्स्ट दोनों लक्ष्यों का आभास होता है, हालांकि यह रोक टेंपवरी है जब इसे कंटिन्यू किया जाएगा तो, वीजा की चाहना रखने वाले छात्रों को सोशल मीडिया के हर प्लेटफार्म पर 2019 से अपने रिकार्ड को दिखाने की शर्त हो सकती है,जो रेखांकित करने वाली बात है ।चूँकि अमेरिका ने दुनियाँ भर में अपने दूतावासों पर नए स्टूडेंट वीजा के लिए इंटरव्यू पर रोक लगाई है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, अमेरिका में छात्र वीज़ा पर रोक आतंकवादी या कट्टरपंथी संगठनों के छात्र बहरूपिया में आने से रोकना ? या अमेरिकी फर्स्ट नीति का हिस्सा हो सकता है ?

साथियों बात अगर हम अमेरिका द्वारा छात्र वीजा पर रोक लगाने को समझने करें तो, अमेरिकी दूतावासों और वाणिज्य दूतावासों को छात्र और विनिमय आगंतुक वीजा के लिए नई नियुक्तियां निर्धारित करना बंद करने का निर्देश दिया, जबकि अमेरिकी विदेश विभाग अंतर्राष्ट्रीय छात्रों की सोशल मीडिया स्क्रीनिंग का विस्तार करने की तैयारी कर रहा है। विदेश विभाग ने एक बयान में कहा, हम अपने वीज़ा स्क्रीनिंग और जांच में सभी उपलब्ध जानकारी का उपयोग करते हैं। हालांकि बयान में यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि किस सामग्री को आपत्तिजनक माना जा सकता है, लेकिन वीज़ा आवेदकों से उनके फ़ॉर्म पर 2019 से लेकर अब तक की सोशल मीडिया जानकारी देने के लिए कहा गया है ।विदेश मंत्री का यह आदेश ट्रम्प प्रशासन द्वारा हार्वर्ड विश्वविद्यालय को कथित यहूदी विरोधी भाषण और गाजा में इजरायल की कार्रवाई की आलोचना को नियंत्रित करने में विफल रहने के लिए दंडात्मक निशाना बनाये जाने के बीच आया है। हाल के वर्षों में उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका को चुनने वाले भारतीय छात्रों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है, तथा अब अमेरिका कनाडा के बाद दूसरे स्थान पर हैं,जिन लोगों ने पहले ही इंटरव्यू अप्वाइंटमेंट स्लॉट बुक कर लिए थे, उन पर इस फैसले का कोई असर नहीं होगा ।अमेरिका का ये निर्णय ऐसे समय पर आया है, जब राष्ट्रपति ट्रंप की सरकार विदेशी छात्रों के सोशल मीडिया अकाउंट की सख्ती से जांच के लिए नियम बनाना चाहती है ।इस फैसले से बहुत से छात्र अपने भविष्य को लेकर चिंतित हैं ।आदेश में साफ तौर पर कहा गया है कि सिर्फ नई बुकिंग शेड्यूल नहीं करनी है। लेकिन जिन लोगों ने पहले से ही अप्वाइंटमेंट बुकिंग की हुई है, वे वीजा इंटरव्यू दे सकते हैं और उसे पास कर स्टूडेंट वीजा हासिल कर सकते हैं। इस तरह पहले से बुकिंग रखने वाले छात्रों को राहत है।

साथियों बात अगर हम छात्र वीजा पर रोक लगाने के पीछे संभावित कारणों की करें तो, ट्रंप सरकार का वीजा अप्वाइंटमेंट बुकिंग रोकने का ये फैसला ऐसे समय पर आया है, जब राष्ट्रीय सुरक्षा खतरों और कैंपस में अशांति की चिंताओं का हवाला देकर पहले ही विदेशी छात्रों की एंट्री मुश्किल बना दी गई है ।विदेशी मंत्री ने पहले ही विदेशी छात्रों को लेकर कड़ा रुख अख्तियार करने का संकेत दिया था। मार्च में उन्होंने कहा था कि कुछ छात्र ऐसे हैं, जो अमेरिका में पढ़ने नहीं, बल्कि प्रदर्शन करने आ रहे हैं। कैंपस में प्रदर्शन करने को लेकर पहले ही कई सारे छात्रों का वीजा रद्द किया गया है। तोड़फोड़-हंगामा करने के लिए नहीं मिलेगा वीजा, विदेश मंत्री ने कहा कि

टफ्ट्स यूनिवर्सिटी की डॉक्टरेट की छात्रा को गाजा के समर्थक में एक ऑप-एड लिखने के बाद गिरफ्तार किया गया। लेकिन फिर उन्हें जमानत पर रिहा कर दिया गया। इस केस का हवाला देते हुए कहा, अगर आप अमेरिका में आने और छात्र बनने के लिए वीजा के लिए अप्लाई करते हैं। फिर आप हमें बताते हैं कि आप यूएस में इसलिए आ रहे हैं, क्योंकि आप सिर्फ ऑप-एड ही नहीं लिखना चाहते हैं, बल्कि प्रदर्शनों में हिस्सा लेना चाहते हैं। ऐसे प्रदर्शनों में जिसमें यूनिवर्सिटी में तोड़फोड़, छात्रों को परेशान करना, इमारतों पर कब्जा करना, हंगामा करना जैसी चीजें शामिल हैं, तो हम आपको वीजा नहीं देंगे ।दरअसल, अमेरिका में पिछले साल कॉलेज कैंपसों में फिलिस्तीन समर्थक प्रदर्शन देखने को मिले। इसमें विदेशी छात्रों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। कुछ कैंपसों यहूदी विरोधी घटनाएं भी सामने आईं। ऐसे में अमेरिका चाहता है कि किसी भी ऐसे छात्र को वीजा नहीं मिले, जो इस तरह के प्रदर्शनों में शामिल हो सकता है या किसी आतंकी संगठन का समर्थन करता हो। ऐसे छात्रों की पहचान उनके सोशल मीडिया अकाउंट से हो रही है। वीजा देने से पहले आवेदकों के सोशल मीडिया अकाउंट की जांच करने का प्लान बनाया गया है। हालांकि, आधिकारिक तौर पर अभी इस संबंध में कुछ नहीं कहा गया है।

साथियों बात अगर हम अमेरिका की छात्र वीजा रोक नीति का असर भारत पर पढ़ने की करें तो, भारतीय विदेश राज्य मंत्री ने संसद के 2024 के मानसून सत्र के दौरान एक लिखित उत्तर में विदेश में पढ़ रहे भारतीय छात्रों के बारे में नवीनतम डेटा प्रदान किया। 2024 में विदेश में पढ़ने वाले 1,335,878 भारतीय छात्रों में से लगभग 427,000 कनाडा में और 337,630 अमेरिका में थे, जिससे यह दूसरा सबसे पसंदीदा गंतव्य बन गया अमेरिकी दूतावास के सूत्रों के अनुसार, भारत में अमेरिकी मिशन ने पिछले पांच वर्षों में 2018, 2019 और 2020 की तुलना में अधिक छात्र वीजा जारी किए हैं, जब संयुक्त संख्या एक लाख से भी कम छात्र वीजा थी। विभिन्न अमेरिकी संस्थानों में प्रवेश के लिए 2022 और 2023 में भारतीय छात्रों को क्रमशः कुल 115,115 और 130,730 छात्र वीजा दिए गए। हालाँकि 2024 में यह संख्या घटकर 86,110 रह गई, फिर भी छात्र वीजा जारी करने के मामले में भारत पहले स्थान पर है, जो चीन से आगे है, जिसके पास लगभग 82,000 छात्र वीजा थे अमेरिका भारतीय छात्रों के लिए शीर्ष गंतव्य कैसे बन गया ? - संयुक्त राज्य अमेरिका 4,000 से अधिक शैक्षणिक संस्थानों के साथ अवसरों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है, जिनमें से अधिकांश चार वर्षीय डिग्री कार्यक्रम प्रदान करते हैं। जबकि कई अमेरिकी संस्थानों को आईईएलटीएस स्कोर की आवश्यकता नहीं होती है, छात्रों को अभी भी अंग्रेजी में अपनी दक्षता साबित करने की आवश्यकता होती है। अमेरिकी अधिकारियों ने अमेरिकी विश्वविद्यालयों को बढ़ावा देने और अधिक भारतीय छात्रों को आकर्षित करने के लिए भारत भर में सक्रिय रूप से शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

अतः अगर हम अपने विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि अमेरिका ने दुनियाँ भर में अपने दूतावासों पर नए स्टूडेंट वीजा के लिए इंटरव्यू पर रोक लगाई अमेरिका की छात्र वीज़ा पर रोक-आतंकवादी या कट्टरपंथी संगठन सदस्यों के बहरूपिए छात्रों क़े आने पर रोक? या अमरीकी फर्स्ट नीति का हिस्सा ?आंदोलनों प्रदर्शनों में भाग लेने वाले वीज़ा आवेदक छात्रों की पहचान सोशल मीडियाके अनेकों प्लेटफॉर्म्ससे करउनको वीजा नहीं देना इस आदेश का उद्देश्य हो सकता है

ऐलन मस्क ने छोड़ा रिटायरमेंट प्लान; बने रहेंगे अगले 5 साल तक सीईओ, टेस्ला की भारत में एंट्री पर क्या होगा असर ?

परिवहन विशेष न्यूज

इलेक्ट्रिक वाहन कंपनी टेस्ला के मालिक Elon Musk ने कहा है कि वे राजनीति से दूर रहेंगे और अगले 5 साल तक टेस्ला के सीईओ बने रहेंगे। यह खबर टेस्ला के भारत में प्रवेश की तैयारी के बीच आई है। कंपनी भारत में शोरूम के लिए जगह देखने के साथ जॉब पोस्टिंग भी निकाल चुकी है। मस्क के इस फैसले का टेस्टा की भारत में एंट्री पर क्या असर पड़ेगा?

नई दिल्ली। इलेक्ट्रिक वाहन कंपनी Tesla के मालिक Elon Musk ने हाल ही में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X पर एक पोस्ट करके लिखा कि वह अब राजनीति से दूर हो रहे हैं और टेस्ला के सीईओ के तौर पर कम से कम अगले 5 साल तक बने रहेंगे। एलन मस्क की यह खबर तक सामने आई है, जब Tesla भारत में एंट्री की करने की तैयारी कर रही है। आइए विस्तार में जानते हैं कि मस्क के इस फैसले का टेस्ला की भारत में एंट्री का क्या असर पड़ेगा?

टेस्ला की एंट्री को लेकर अब तक क्या हुआ?

Tesla पिछले कुछ वर्षों से भारत में एंट्री मारने की तैयारी कर रही है। अप्रैल 2025 में एलन मस्क ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से एक फोन कॉल के दौरान कहा था कि इस साल के अंत तक वह भारत आएंगे और टेक्नोलॉजी व इनोवेशन को लेकर भारत-अमेरिका के बीच सहयोग पर बात करेंगे। इसको लेकर कंपनी अभी तक कई कदम उठा चुकी है। कंपनी ने मुंबई, दिल्ली, और बेंगलुरु में अपने शोरूम के लिए जगह देखना शुरू कर दिया है, जिसमें से मुंबई में एक ऑफिस भी ले लिया है।

कंपनी भारत में 13 जॉब पोस्टिंग्स भी निकाल चुकी है। वहीं, जिन लोगों ने मॉडल 3 के लिए 2016 में बुकिंग की थी, उनके रिफंड भी वापस कर रही है, ताकि वह भारत में अपनी गाड़ियां लॉन्च कर सकें। इसी बीच मई 2025 में टेस्ला इंडिया के हेड ने इस्तीफा दे दिया, जिसके बाद अब टेस्ला चाइना की टीम भारत में होने वाली चीजों को संभाल रही है।

भारत में टेस्ला की चुनौतियां

भारत में टेस्ला की एंट्री आसान नहीं रही है। इसके पीछे की एक वजह भारत में इलेक्ट्रिक गाड़ियों पर लगने वाला हाई इंपोर्ट ड्यूटी है। पहले यह 70% तक लगता था। मार्च 2024 में भारत सरकान ने एक नई ईवी पॉलिसी लेकर आई, जिसमें विदेशी कंपनियों को 15% की कम ड्यूटी पर 8,000 गाड़ियां हर साल इंपोर्ट करने की छूट दी गई। इसमें भी एक शर्त रखी गई, जो है उन्हें भारत में अपना मैन्युफैक्चरिंग प्लांट लगाना होगा।

अभी भी भारत में इलेक्ट्रिक गाड़ियों की बिक्री कुल गाड़ियों की बिक्री का 3 फीसद से कम है। भारत की टाटा मोटर्स और महिंद्रा जैसी कंपनियां सस्ती इलेक्ट्रिक गाड़ियों की बिक्री करती है। टेस्ला की भारत में लॉन्च होने वाली इलेक्ट्रिक कार के बेस मॉडल की कीमत करीब 30 लाख रुपये के ऊपर होने की उम्मीद है, जो लोगों के लिए महंगी हो सकती है।

कावासाकी की दोनों बाइक में कितना अंतर?

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। Kawasaki Versys X 300 को भारत में लंबे समय के बाद भारत में लॉन्च किया है। यह मोटरसाइकिल एक रोड-बायस्ड एडवेंचर टूरर है, जो खुद की कंपनी की पॉपुलर Ninja 300 स्पोर्सबाइक में मिलने वाले 296cc पैरेलल-ट्विन इंजन के समान है। जिसे देखते हुए हम यहां पर कावासाकी की इन दोनों बाइक (Kawasaki Versys X 300 vs Ninja 300) के बीच क्या-क्या अंतर है, इसके बारे में बता रहे हैं।

इंजन में कितना अंतर?

Versys X 300 और Ninja 300 दोनों में ही 296cc, ट्विन-सिलेंडर, लिक्विड-कूल्ड इंजन दिया गया है। भले ही दोनों में एक ही इंजन दिया गया है, लेकिन वर्सेस एक्स में दिया गया इंजन 40hp की पावर जनरेट करता है, जबकि निंजा 300 का इंजन 39hp की पावर जनरेट करता है।

दोनों में ही 6-स्पीड गियरबॉक्स दी गई है, लेकिन Versys X में फाइनल ड्राइव गियरिंग छोटा है। इसमें 46-टूथ रियर स्प्रॉकेट दिया गया है, जबकि Ninja 300 में 42-टूथ मिलता है। इस अंतर से Versys ऑफ-रोड राइडिंग के लिए बेहतर हो जाती है। Ninja का गियरिंग हाईवे और स्पोर्टी राइडिंग के लिए ज्यादा बेहतर है।

सस्पेंशन और एर्गोनॉमिक्स

यह दोनों ही बाइक में काफी अलग दिया गया है। दोनों में ही टेलिस्कोपिक फ्रंट फोर्क और रियर मोनोशॉक सस्पेंशन मिलता है, लेकिन वर्सिस-X में फ्रंट में 130mm और रियर में 148mm ट्रैवल, जबकि निंजा 300 में फ्रंट में 120mm और रियर में 132mm ट्रैवल मिलता है।

वर्सिस में 19-इंच फ्रंट और 17-इंच रियर स्पोक व्हील्स दिए गए हैं, जबकि निंजा में दोनों तरफ 17-इंच अलॉय व्हील्स मिलते हैं।

वर्सिस-X 300 में 815mm सीट हाइट और 180mm ग्राउंड क्लीयरेंस मिलता है, जबकि निंजा 300 में 785mm सीट हाइट और 140mm ग्राउंड क्लीयरेंस दिया गया है।

दोनों ही बाइक का वजन 179 किलोग्राम और 17-लीटर फ्यूल टैंक है, लेकिन राइडिंग पोजिशन में काफी अंतर है।

कीमत में कितना अंतर?

Kawasaki Versys X 300 को भारत में 3.80 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है, जबकि Kawasaki Ninja 300 की एक्स-शोरूम कीमत 3.43 लाख है। Versys निंजा से 37,000 रुपये ज्यादा महंगी है।

क्रिकेटर अर्शदीप सिंह ने मां को गिफ्ट की टाटा कर्व एसयूवी, सोशल मीडिया पर हुआ वीडियो वायरल

भारतीय क्रिकेटर अर्शदीप सिंह ने अपनी मां को एक शानदार Tata Curvv SUV गिफ्ट की है जिसकी वीडियो उन्होंने सोशल मीडिया पर साझा की। टाटा मोटर्स इस कार को तीन इंजन विकल्पों के साथ पेश करती है जिसमें दो पेट्रोल और एक डीजल इंजन शामिल हैं। इसमें छह एयरबैग और 360 डिग्री कैमरा जैसे कई सेफ्टी फीचर्स हैं। Tata Curvv की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 9 .99 लाख रुपये है।

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम और पंजाब किंग्स के तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह (Arshdeep Singh) इन दिनों न केवल मैदान में लोगों की वाहवाही बटोर रहे हैं, बल्कि बाहर भी सुर्खियां बटोर रहे हैं। IPL 2025 में अपना शानदार परफॉर्मेंस देने के साथ-साथ एक ऐसा काम किया है, जिसने उनके फैंस का दिल जीत लिया है। उन्होंने अपनी मां का को एक प्रीमयम कार गिफ्ट की है। जिसकी वीडियो उन्होंने सोशल मीडिया पर शेयर भी किया है। आइए जानते हैं कि अर्शदीप सिंह को Tata Curvv SUV को इतनी ज्यादा क्यों अच्छी लगी कि उन्होंने अपनी मां को ये कार गिफ्ट कर दी।

मां को गिफ्ट की Tata Curvv

अर्शदीप ने अपनी मां को लग्जरी कार Tata Curvv SUV को गिफ्ट किया है। उन्होंने इस खूबसूरत पल का वीडियो अपने youtube चैलन जरिए शेयर किया है। इसमें टाटा कर्व को खरीदने की पूरी कहानी दिखाई गई है। यह वीडियो इतना भावुक है कि इसे देखकर फैंस भी भावुक हो गए।

Tata Curvv का इंजन

टाटा मोटर्स इसे तीन इंजन ऑप्शन के साथ पेश करती है, जिसमें दो पेट्रोल और एक डीजल इंजन है। पहला ऑप्शन 1.2 लीटर रेवोट्रॉन पेट्रोल इंजन, दूसरा 1.2 लीटर हाइपेरियॉन पेट्रोल इंजन और तीसरा 1.5 लीटर के क्रायोजेट डीजल इंजन है।

Tata Curvv के फीचर्स

इसमें लोगों की सेफ्टी के लिए छह एयरबैग, आई-टीपीएमएस, ट्रैक्शन कंट्रोल, थ्री पाइंट सीटबेल्ट, सीट बेल्ट रिमाइंडर, 360 डिग्री कैमरा, रियर पार्किंग सेंसर, रियर डिफॉगर, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज, इमोबिलाइजर, हिल होल्ड कंट्रोल, हिल डीसेंट कंट्रोल, ईपीबी, एबीएस, ईबीडी, Level-2 ADAS जैसी सुविधाएं मिलती है। इसके अलावा, 12.5 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, जेबीएल और हरमन ऑडियो सिस्टम, 10.25 इंच डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, एपल कार प्ले, एंड्राइड ऑटो, रेन सेंसिंग वाइपर्स जैसे प्रीमियम फीचर्स भी मिलते हैं।

Tata Curvv की कीमत

Tata Curvv की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 9.99 लाख रुपये है। इसके Hyperion इंजन की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 13.99 लाख रुपये है। इसके डीजल इंजन वाले वेरिएंट्स की शुरुआती एक्स शोरूम कीमत 11.49 लाख रुपये है। कर्व के टॉप वेरिएंट की एक्स-शोरूम कीमत 7.69 लाख रुपये है।

होण्डा ईवीओ होंडा की पहली इलेक्ट्रिक बाइक चीन में हुई पेश, जानें फीचर्स और रेंज

परिवहन विशेष न्यूज

जापान की मोटरसाइकिल निर्माता होंडा ने चीन में अपनी पहली इलेक्ट्रिक बाइक Honda E Vo को पेश कर दिया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक वुयांग के साथ साझेदारी में बनाई गई इस कैफे रेसर डिजाइन वाली बाइक किस तरह के फीचर्स को दिया गया है। कितनी दमदार बैटरी और मोटर को दिया गया है। किस कीमत पर इसे ऑफर किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जापान की प्रमुख दो पहिया वाहन निर्माता Honda की ओर से दुनिया के कई देशों में बेहतरीन तकनीक और फीचर्स के साथ बाइक्स और स्कूटर्स की बिक्री की जाती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक निर्माता की ओर से अपनी पहली इलेक्ट्रिक बाइक Honda E Vo को चीन में पेश कर दिया गया है। इस बाइक में किस तरह के फीचर्स दिए गए हैं। कितनी दमदार बैटरी और मोटर को दिया गया है। क्या इसे भारत में लाया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

पेश हुई Honda की पहली इलेक्ट्रिक बाइक

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक होंडा की ओर से अपनी पहली इलेक्ट्रिक बाइक Honda E Vo को चीन में पेश कर दिया गया है। निर्माता ने इस बाइक को अपने साझेदार वुयांग के साथ मिलकर बनाया गया है। कैफे रेसर डिजाइन के साथ लॉन्च की गई बाइक में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जा रहा है।

कैसे हैं फीचर्स

Honda E Vo इलेक्ट्रिक बाइक में निर्माता की ओर से 14 और 16 इंच के अलॉय व्हील्स, ड्यूल चैनल एबीएस, इको, नॉर्मल और स्पोर्ट राइडिंग मोड्स, एलईडी हेडलाइट, एलईडी टेल लाइट, सात इंच टीएफटी डिस्प्ले, सात इंच की एक और स्क्रीन दी गई है जिसमें नेविगेशन, टीपीएमएस, बैटरी आदि की जानकारी मिलेगी। इसके साथ ही इसे रियर डैश कैम, ब्लैक और वाइट रंगों के विकल्प के साथ ऑफर की जा सकती है।

कितनी दमदार बैटरी और मोटर

निर्माता की ओर से बाइक में दो बैटरी के विकल्प दिए गए हैं। इसमें 4.1 और 6.2 किलोवाट आवर की बैटरी दी गई हैं। जिससे इसे 120 और 170 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है। इसमें लगी मोटर से इसे 15.3 किलोवाट की पावर मिलती है। बाइक की बैटरी को घर में लगे चार्जर से 1.30 और 2.30 घंटे में चार्ज किया जा सकता है।

कितनी है कीमत

होंडा की पहली इलेक्ट्रिक बाइक Honda E Vo के 4.1 kWh वेरिएंट को 30 हजार युआन में ऑफर किया जा सकता है जो भारतीय रुपये में करीब 3.56 लाख रुपये होते हैं। वहीं इसके 6.2 kWh वेरिएंट की कीमत 37 हजार युआन में ऑफर किया जा सकता है जो भारतीय रुपये में 4.39 लाख रुपये होते हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक होंडा की ओर से इस बाइक को चीन में साझेदार के साथ मिलकर बनाया गया है, इसलिए इसे भारतीय बाजार में लॉन्च किए जाने की उम्मीद नहीं है।

टोयोटा फॉर्च्यूनर और लीजेंडर ने मिलकर बनाया रिकॉर्ड, पार किया 3 लाख यूनिट्स का आंकड़ा

परिवहन विशेष न्यूज

भारत में लोकप्रिय SUV है जिसने 3 लाख यूनिट्स की बिक्री का आंकड़ा पार कर लिया है। 2009 में लॉन्च के बाद से यह D-सेगमेंट SUV मार्केट में नंबर 1 है। Fortuner अपनी दमदार रोड प्रजेंस मजबूत बिल्ड क्वालिटी और शानदार ऑफ-रोडिंग के लिए पसंद की जाती है। इसमें लेदर सीट्स टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम और 7 एयरबैग्स जैसे कई बेहतरीन फीचर्स दिए जाते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में सबसे ज्यादा पॉपुलर SUV में से एक है। इसे खरीदने का सपना बहुत से लोगों का होता है। इसने लोगों के दिल में जगह बनाने के साथ ही नया रिकॉर्ड भी हासिल किया है। कंपनी ने एलान किया है कि Fortuner और प्रीमियम वेरिएंट Legender ने मिलकर 3 लाख यूनिट्स की बिक्री के आंकडे को पार कर लिया है। वहीं, साल 2009 में लॉन्च होने के बाद से यह D-सेगमेंट SUV मार्केट में नंबर 1 बनी हुई है। इसके प्रीमियम मॉडल Legender को साल 2021 में लॉन्च किया गया था। आइए जानते हैं कि Toyota Fortuner और Legender इतनी डिमांड क्यों है और इनमें क्या खास है?

लोगों को क्यों पसंद है Fortuner?

यह उन असली SUVs में से एक है, जो आज भी भारतीय बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध है। लोग इसे कई वजहों से पसंद करते हैं। इसमें दमदार रोड प्रजेंस, मजबूत बिल्ड क्वालिटी, शानदार ऑफ-रोडिंग मिलती है। वहीं, टोयोटा की गाड़ियां अपनी रिलायबिलिटी के लिए जानी जाती हैं।

Toyota Fortuner के फीचर्स

Fortuner और प्रीमियम वेरिएंट Legender में कई बेहतरीन फीचर्स दिए जाते हैं, जो इसे एक लग्जरी SUV बनाते हैं। इसमें लेदर सीट्स और वेंटिलेटेड, पावर्ड फ्रंट सीट्स, डुअल-ज़ोन क्लाइमेट कंट्रोल, रियर AC वेंट्स, 8-इंच टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, 11-स्पीकर JBL साउंड सिस्टम, वायरलेस फोन चार्जर, जेस्चर-कंट्रोल्ड पावर्ड टेलगेट, एम्बिएंट लाइटिंग और मल्टी-इंफॉर्मेशन डिस्प्ले जैसे प्रीमियम फीचर्स मिलते हैं।

वहीं, पैसेंजर्स की सेफ्टी के लिए भी भरपूर फीचर्स दिए जाते हैं। इसमें लोगों की सुरक्षा के लिए 7 एयरबैग्स, इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी कंट्रोल (ESC), हिल स्टार्ट असिस्ट, फ्रंट और रियर पार्किंग सेंसर और रियर पार्किंग कैमरा जैसे बेहतरीन सुविधाएं दी जाती है।

इंजन और परफॉर्मेंस

Toyota Fortuner को दोन इंजन ऑप्शन के साथ पेश किया जाता है, जो 2.7-लीटर पेट्रोल इंजन और 2.8-लीटर डीजल इंजन है। इसका 2.7-लीटर पेट्रोल इंजन 164 हॉर्सपावर और 245 न्यूटन-मीटर टॉर्क जनरेट करता है। इसमें 5-स्पीड मैनुअल या 6-स्पीड ऑटोमैटिक गियरबॉक्स का ऑप्शन मिलता है। वहीं, इसका 2.8-लीटर डीजल इंजन 201 हॉर्सपावर और 420 न्यूटन-मीटर टॉर्क जनरेट करता है। इसे 6-स्पीड मैनुअल या 6-स्पीड ऑटोमैटिक गियरबॉक्स ऑप्शन के साथ पेश किया जाता है। Toyota Fortuner Legender को केवल डीजन इंजन के साथ पेश किया जाता है, जिससे यह ज्यादा पावर जनरेट करता है।

कितनी है कीमत?

Toyota Fortuner की एक्स-शोरूम कीमत 35 लाख रुपये से लेकर 50 लाख रुपये के बीच है। वहीं, Toyota Fortuner Legender को 44.11 लाख रुपये से लेकर 48.09 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में ऑफर किया जाता है।

घरेलू कपड़ा उद्योग में वृद्धि की उम्मीद

विजय गर्ग

ऋग्वेद सहित धार्मिक और ऐतिहासिक ग्रंथों के अध्ययन से पता चलता है कि भारत प्राचीन काल से ही कपास उत्पादन, कपड़ा बनाने और रंगाई में अग्रणी रहा है और इसलिए यहां कपड़े पहनने और लपेटने के कई तरीके प्रचलित रहे हैं। ऋग्वेद तथा अन्य संस्कृत ग्रंथों में भी वस्त्रों का विस्तृत वर्णन मिलता है। इन ग्रंथों में विभिन्न प्रकार की वेशभूषा का वर्णन है। भारत में भूगोल, जलवायु, ऋतु, राशि, जाति और धर्म के आधार पर वस्त्र शैलियों में विविधता है।

पर्यटन और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के बाद प्रधानमंत्री ने अब भारतीय वस्त्र उद्योग को नई ऊंचाइयों पर ले जाने का संकल्प लिया है। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में आयोजित निवेशकों के सम्मेलन में उन्होंने मध्य प्रदेश को कपड़ा उद्योग क्षेत्र में 'कपास राजधानी' बताया। इसका कारण यह है कि देश के कुल जैविक कपास उत्पादन का 25 प्रतिशत यहीं से आता है। चंदेरी, माहेश्वरी और खजुराहो जैसे क्षेत्रों में स्वदेशी साड़ियों का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है। यह उद्योग ज्ञान परंपरा और स्वदेशी उपकरणों की मदद से सदियों से चल रहा है। यदि इसमें पर्याप्त पूंजी निवेश के साथ प्रौद्योगिकी आधारित आधुनिकीकरण किया जाए तो न केवल उत्पादन बढ़ेगा, बल्कि इन उत्पादों के लिए वैश्विक बाजार भी उपलब्ध होगा।

ऋग्वेद सहित धार्मिक और ऐतिहासिक ग्रंथों के अध्ययन से पता चलता है कि भारत प्राचीन काल से ही कपास उत्पादन, कपड़ा बनाने और रंगाई में अग्रणी रहा है और इसलिए यहां कपड़े पहनने और लपेटने के कई तरीके प्रचलित रहे हैं। ऋग्वेद तथा अन्य संस्कृत ग्रंथों में भी वस्त्रों का विस्तृत वर्णन मिलता है। इन ग्रंथों में विभिन्न प्रकार की वेशभूषा का वर्णन है। भारत में भूगोल, जलवायु, ऋतु, राशि, जाति और धर्म के आधार पर वस्त्र शैलियों में विविधता है। उत्सवों, खेलों, नृत्यों और युद्ध के दौरान अलग-अलग वेशभूषा पहनी जाती थी। भारत में कपास उत्पादन और उससे वस्त्र बनाने की परंपरा पांच हजार वर्ष से भी अधिक पुरानी है।

कारीगर कपड़े बनाने के लिए चरखे पर कपास कातते थे। वे धागे और कपड़े को रंगने की तकनीक में भी कुशल थे। यह स्पष्ट है कि भारत प्राचीन काल से ही विभिन्न प्रकार के वस्त्र बनाने और पहनने में माहिर रहा है। इसीलिए इसे सूती वस्त्र उद्योग का नाम मिला। यह उद्योग अपनी विस्तृत मूल्य श्रृंखला, स्थानीय कच्चे माल की उपलब्धता और विनिर्माण कला में विशेषज्ञता के कारण विश्व के प्रमुख वस्त्र उद्योगों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। एक ओर, छोटे कारीगर वस्त्र निर्माण में लगे हुए हैं। दूसरी ओर आधुनिक मशीनों से कपड़े बनाने वाले बड़े उद्यमी भी सक्रिय हैं। जब अंग्रेजों ने व्यापार के बहाने इस उद्योग पर अपनी नजरें गड़ाईं तो उन्होंने इस पारंपरिक हस्तकला को नष्ट कर दिया और ब्रिटेन से लाई गई मशीनों से कपड़े का उत्पादन शुरू कर दिया। 1818 में कोलकाता के पास फोर्ट ग्लूसेस्टर में पहला सूती वस्त्र उद्योग स्थापित किया गया था। इसके बाद 1854 में मुंबई में बॉम्बे स्पिनिंग मिल की नींव रखी गई। आज देश में करीब 3400 कपड़ा उद्योगों के जरिए 10 करोड़ लोग अपनी आजीविका कमा रहे हैं। इसके अलावा बड़े पैमाने पर कपड़ा उत्पादन हथकरघा, हस्तशिल्प, लघु विद्युत करघे और पारंपरिक तरीकों से भी किया जाता है।

ये लघु एवं कुटीर उद्योग स्थानीय स्तर पर लाखों लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं। इस उद्योग में कपास, प्राकृतिक और मानव निर्मित रेशे, रेशम आधारित कपड़े और बुने हुए कपड़े शामिल हैं। भारत के कुल निर्यात में वस्त्र उद्योग का योगदान 4.5 प्रतिशत है तथा निर्यात आय में इसका योगदान 15 प्रतिशत है। हालाँकि, विदेशी वस्त्रों के आयात ने इस घरेलू उद्योग को कमजोर कर दिया है। निर्यात में भी गिरावट आई है। बांग्लादेश और वियतनाम जैसे देश कपड़ा निर्यात में भारत से आगे निकल गए हैं। मध्य प्रदेश पहले से ही वस्त्र निर्माण में अग्रणी रहा है। ग्वालियर में जे.सी. मिल्स, इंदौर में हुकमचंद मिल्स और उज्जैन में विनोद मिल्स जैसे बड़े कपड़ा उद्योग सत्तर के दशक तक सक्रिय थे। लेकिन कर्मचारी संगठनों की हड़तालों ने उन्हें लगभग नष्ट कर दिया।

बिड़ला का कपड़ा उद्योग आज भी नागदा में मौजूद है। इसके अलावा चंदेरी और महेश्वर में हाथ से चरखे चलाकर बड़े पैमाने पर साड़ियों का उत्पादन जारी है। असली चंदेरी साड़ी को जीआई टैग प्राप्त होता है, जो इसकी प्रामाणिकता और गुणवत्ता को प्रमाणित करता है। इससे ग्राहकों को नकली साड़ियों से सुरक्षा मिलती है। हाल ही में ग्वालियर में आर्यप्रताप सिंह ने वैदिक विज्ञान पर आधारित वस्त्र निर्माण का कार्य शुरू किया है। आजकल युवाओं में वास्तु और ज्योतिष के प्रति रुचि बढ़ रही है। इसे ध्यान में रखते हुए वैदिक ज्योतिष, ग्रह-नक्षत्रों के प्रतीक चिन्हों वाले वस्त्रों का उत्पादन शुरू किया गया है।

इनकी कीमत 80,000 रुपये से लेकर 4 लाख रुपये तक है। कंप्यूटर साइंस इंजीनियर और गॉड कंपनी के सीईओ आर्य प्रकाश सिंह बताते हैं कि वह ग्राहकों की जन्मतिथि, स्थान, समय और हस्तरेखा के आधार पर कपड़े बनाते हैं। इन्हें राशि पर रंग, रत्न और धातु के प्रभाव के अनुसार डिज़ाइन किया गया है। इन कपड़ों की ब्रांडिंग और मार्केटिंग सोशल मीडिया, वेबसाइट और इंस्टाग्राम के जरिए की जा रही है। आर्यप्रताप को यह प्रेरणा रामायण और उस पर बनी फिल्मों और धारावाहिकों को पढ़ने से मिली। यह हमारी अज्ञानता है कि हम पश्चिमी देशों को विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अग्रणी मानते हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि भारत, विशेषकर ब्रिटेन, उस समय बहुत आगे था, जब ब्रिटेन ने हमारे कपड़ा उद्योग पर कब्जा कर लिया था।

उस समय हमारे कारीगर 2400 से 2500 काउंट तक के महीन धागे बनाने में माहिर थे। वे एक दाने के वजन में 29 गज लम्बा सूत तैयार कर सकते थे। आज की सबसे आधुनिक तकनीक के साथ भी केवल 400 से 600 काउंट का धागा ही उत्पादित किया जा सकता है। मुर्शिदाबाद में 2400 से 2500 काउंट के धागे बनाए जाते थे। अंग्रेजों ने इस कला को खत्म करने के लिए कारीगरों के अंगूठे काट दिए, जिसके बाद भारत में ब्रिटिश कपड़ा उद्योग की स्थापना हुई। यह तकनीक किताबों में दर्ज नहीं थी, बल्कि ज्ञान-परंपरा और घरेलू प्रशिक्षण के माध्यम से कारीगरों के दिमाग में समा गई थी।

भारतीय वस्त्र उद्योग की यह समृद्ध परंपरा अंग्रेजों के दमन से प्रभावित हुई। उनकी क्रूरता का सबूत उनकी डायरियों में मिलता है। सूरत से जो कपड़ा ब्रिटेन भेजा जाता था, वह कारीगरों द्वारा जबरन बनवाया जाता था। समय पर काम पूरा न करने पर भारी जुर्माना लगाया गया। कंपनी कारीगरों को इतना कम भुगतान करती थी कि वे वही माल डच, पुर्तगाली या अरब व्यापारियों को बेच देते।

इसलिए उन्हें बहुत ऊंची कीमत मिलती है। कारीगरों को इस हद तक मजबूर किया गया कि वे इस पेशे को छोड़ भी नहीं सके। उनकी स्वतंत्रता पर कई प्रतिबन्ध लगाये गये। इस उद्योग में निवेश से न केवल इसका पुनरुद्धार होगा बल्कि लाखों लोगों को रोजगार भी मिलेगा। यह भारत की प्राचीन समृद्धि को पुनर्जीवित करने का अवसर है।

कक्षा 12 में औसत अंकों के साथ छात्रों के लिए शीर्ष कैरियर पथ

विजय गर्ग

जॉब मार्केट अब गतिशील, कौशल-आधारित विकल्पों के साथ काम करता है जो रचनात्मकता, नवाचार और व्यक्तिगत हितों को महत्व देते हैं। जॉब मार्केट अब गतिशील, कौशल-आधारित विकल्पों के साथ काम करता है जो रचनात्मकता, नवाचार और व्यक्तिगत हितों को महत्व देते हैं। पीढ़ियों से, हमें यह विश्वास करने के लिए वातानुकूलित किया गया है कि अंक सफलता का अंतिम उपाय हैं। यह विचार कि केवल शीर्ष स्कोरर जीवन में महान चीजों को प्राप्त करते हैं, गहराई से अंतर्वर्धित हो गए हैं, यह आकार देते हुए कि युवा शिक्षार्थियों को कैसे निर्देशित और आंका जाता है। लेकिन जैसा कि ब्रूस ली ने प्रसिद्ध कहा, ₹सफल योद्धा औसत आदमी है, जिसमें लेजर जैसा फोकस है।₹ इसलिए, यदि आप अपने आप को बीच में कहीं पाते हैं और अपनी क्षमता पर संदेह कर रहे हैं, तो यह जान लें - आपकी यात्रा बहुत दूर है।

निर्माता अर्थव्यवस्था यदि आप कहानी, डिजाइन या आत्म-अभिव्यक्ति से प्यार करते हैं, तो डिजिटल और रचनात्मक अर्थव्यवस्था अंतहीन संभावनाएं प्रदान करती है। ₹क्रिएटिव हस्टलर₹ की दुनिया में आपका स्वागत है - जहां मौलिकता अवसर को पूरा करती है। अनुभव सिंह बस्सी, भुवन बम, तकनीकी गुरुजी या प्राजक्ता कोली जैसे रचनाकारों के बारे में सोचें। उन्होंने पारंपरिक मार्गों का पालन नहीं किया, लेकिन निरंतरता, रचनात्मकता और साहस के साथ, वे भारत के कुछ सबसे मान्यता प्राप्त डिजिटल सितारे बन गए हैं।

चाहे आपका जुनून यूट्यूब ,एनीमेशन, ग्राफिक डिज़ाइन, संगीत, नृत्य, फिल्म निर्माण, या वॉयस-ओवर कलात्मकता में निहित हो - आपके लिए एक जगह है। सबसे अच्छा? आपको फैंसी डिग्री की आवश्यकता नहीं है, बस सीखने और बनाने की इच्छा, ईडीएएस और यूट्यूब जैसे प्लेटफ़ॉर्म आपके कौशल को तेज करने और अपने जुनून को पेशे में बदलने में मदद करने के लिए मुफ्त और सशुल्क पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं।

फैशन और जीवन शैली

यदि फैशन, सौंदर्य, या जीवन शैली की सामग्री आपको उत्तेजित करती है, तो ₹रनवे टू रियल लाइफ₹ में आपका स्वागत है - ट्रेंडसेटर के लिए एक ग्लैमरस अभी तक प्रतिस्पर्धी उद्योग। कैरियर विकल्पों में मेकअप कलात्मकता, हेयरस्टाइल, फैशन डिजाइनिंग, कॉस्ट्यूम डिज़ाइन, मॉडलिंग, फोटोग्राफी, फिटनेस कोचिंग, डायटेटिक्स, सोशल मीडिया प्रबंधन और सार्वजनिक संबंध शामिल हैं।

जबकि इनमें से कुछ करियर के लिए औपचारिक शिक्षा और इंटर्नशिप की आवश्यकता होती है, कई अन्य अल्पकालिक प्रमाणपत्र या प्रशिक्षुता के माध्यम से शुरू कर सकते हैं। यह स्थान आत्मविश्वास, रचनात्मकता और दृढ़ता की मांग करता है - लेकिन पुरस्कार, रचनात्मक और वित्तीय दोनों, अपार हो सकते हैं। सेवा उद्योग यदि आप लोगों के साथ जुड़ने और उन्हें मूल्यवान महसूस कराने का आनंद लेते हैं, तो आतिथ्य और सेवा क्षेत्र एक महान फिट हो सकता है। ये ₹एक्सपीरियंस मेकर्स₹ हैं - ऐसे व्यक्ति जो दूसरों के लिए यादगार पलों को तैयार करने में मदद करते हैं।

केबिन क्रू, शेफ, होटल और इवेंट मैनेजमेंट, वेडिंग प्लानिंग, ट्रैवल कंसल्टेंसी, ह्यूमन रिसोर्स, मोटिवेशनल स्पीकिंग, केयरगिविंग, नर्सिंग, चाइल्डकेयर, काउंसलिंग और थेरेपी में करियर ऑप्शन स्पैन। जबकि कुछ भूमिकाओं के लिए पेशेवर प्रशिक्षण या डिग्री की आवश्यकता होती है, सबसे आवश्यक विशेषता दूसरों की मदद करने और उनके जीवन में बदलाव लाने की वास्तविक इच्छा है।

कॉर्पोरेट करियर यदि एक संरचित 9-से-5 जीवन, सॉफ्टवेयर, कोडिंग, या कॉर्पोरेट बोर्डरूम की चर्चा आपसे अपील करती है, तो आपको ₹क्लब कॉर्पोरेट₹ के लिए तैयार किया जा सकता है। यहां, आप एसऐपी सलाहकार, ऐआई या मशीन लर्निंग इंजीनियर, डेटा वैज्ञानिक, व्यवसाय विश्लेषक, उत्पाद प्रबंधक या वेब / ऐप डेवलपर बन सकते हैं।

जबकि एक कंप्यूटर विज्ञान की डिग्री मदद करती है, इनमें से कई भूमिकाएं प्रमाणपत्र और परियोजना का अनुभव उतना ही महत्व देती हैं। आप वित्तीय योजनाकार, विश्लेषक, जोखिम प्रबंधक, या एक्चुअरी जैसी वित्त भूमिकाओं का भी पता लगा सकते हैं - आमतौर पर अर्थशास्त्र, वाणिज्य या वित्त में डिग्री के साथ शुरू होता है, इसके बाद सीएफपी, सीएफए या एफआरएम जैसे प्रमाणपत्र होते हैं।

मार्केटिंग एक और तेजी से बढ़ने वाला क्षेत्र है, जिसमें डिजिटल मार्केटिंग, ब्रांड प्रबंधन और उच्च मांग में सोशल मीडिया रणनीति में भूमिकाएं हैं। व्यवसाय या विपणन में एक डिग्री, हाथों पर अनुभव के साथ जोड़ा गया, रास्ता प्रशस्त कर सकता है।

कौशल-आधारित नौकरियां ये "स्किल स्मिथ" हैं - पेशेवर जो हमारे आसपास की दुनिया का निर्माण और ठीक करते हैं। इनमें इलेक्ट्रीशियन, प्लंबर, मैकेनिक, विमान तकनीशियन, एचवीएसी विशेषज्ञ, बढ़ई, कृषि तकनीशियन, नर्स और पैरामेडिक्स शामिल हैं।

इस तरह के करियर की शुरुआत अक्सर आईटीआई डिप्लोमा, पॉलिटेक्निक कोर्स या अप्रेंटिसशिप से होती है। उन्हें कभी-कभी गलत तरीके से ₹कम भुगतान₹ या "कम प्रतिष्ठित" के रूप में लेबल किया जाता है, लेकिन वास्तव में, कुशल पेशेवरों की अत्यधिक मांग की जाती है और वे अनुभव के साथ सुंदर कमाई कर सकते हैं।

सरकारी नौकरियां अंत में, हम बारहमासी पसंदीदा में आते हैं - ₹सरकारी नौकरी का सपना।₹ यदि आप अनुशासित, धैर्यवान और राष्ट्र की सेवा करने के लिए उत्सुक हैं, तो सरकारी करियर शक्ति, प्रतिष्ठा, स्थिरता और एक अच्छी तरह से सम्मानित जीवन शैली प्रदान करते हैं।

किसी भी क्षेत्र में स्नातक की डिग्री के साथ, आप यूपीएससी, राज्य सिविल सेवाओं जैसी परीक्षाओं की तैयारी कर सकते हैं, या एनडीए या एसएसबी के माध्यम से रक्षा बलों में शामिल हो सकते हैं। एसएससी परीक्षा विभिन्न सरकारी विभागों में भूमिकाएं खोलती है, और पुलिस और अर्धसैनिक बलों में भी विकल्प हैं।

अंतिम विचार औसत अंक वाले सभी छात्रों को जो खोया या अनिश्चित महसूस करते हैं - निराश न हों। निशान सिर्फ संख्या हैं, न कि आपकी पहचान या भाग्य। अपने जुनून की खोज करें, अपने कौशल का निर्माण करें, और आगे बढ़ते रहें। जैसा कि स्वामी विवेकानंद ने एक बार कहा था, "अगर कड़ी मेहनत आपकी आदत बन जाए, तो सफलता आपकी नियति बन जाएगी।"

श्रीनिवास रामानुजन: एक स्लेट ओर चाक से कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय तक

विजय गर्ग

श्रीनिवास रामानुजन का जन्म 1887 में दक्षिणी भारत के इरोड नामक एक छोटे से गाँव में हुआ था। उनका परिवार गरीब था, और एक बच्चे के रूप में, उनके पास उन्नत गणित में उचित पुस्तकों या औपचारिक शिक्षा तक बहुत कम पहुंच थी। लेकिन कम उम्र से उन्होंने संख्याओं के बारे में एक असाधारण जिज्ञासा दिखाई।

15 साल की उम्र में, उन्होंने गणित की एक पुरानी किताब की एक प्रति पर ठोकर खाई - G.S. द्वारा शुद्ध और अनुप्रयुक्त गणित में प्राथमिक परिणामों की एक सारांश। Carr। पुस्तक केवल हजारों प्रमेयों और सूत्रों की एक सूची थी, जिसमें कोई स्पष्टीकरण नहीं था। लेकिन रामानुजन के लिए, यह एक सोने की खान थी। उन्होंने अपने दम पर इन सूत्रों के माध्यम से काम करके खुद को उन्नत गणित सिखाना शुरू किया - अक्सर चाक और एक छोटे स्लेट का उपयोग करना, क्योंकि कागज बहुत महंगा था।

कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं होने के बावजूद, उन्होंने कई मूल प्रमेय विकसित किए, अक्सर दुनिया के शीर्ष गणितज्ञों द्वारा की गई खोजों को फिर से विकसित किया - और यहां तक कि उनसे बहुत आगे निकल गया।

लेकिन उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। गणित के साथ उनके जुनून ने उन्हें अन्य विषयों में विफल कर दिया, और उन्हें कॉलेज से बाहर निकलना पड़ा। वह बेरोजगार और संघर्ष कर रहा था, लेकिन उसने लगातार गणित पर काम करना जारी रखा।

निर्णायक 1913 में, रामानुजन ने विश्वास की छलांग लगाई। उन्होंने अपने गणितीय निष्कर्षों से भरा एक पत्र जी.एच. हार्डी, इंग्लैंड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में एक प्रमुख गणितज्ञ। हार्डी ने पहले सोचा था कि पत्र एक शरारत हो सकती है - सूत्र अजीब, मूल और कभी-कभी शब्दों में गलत थे - लेकिन कई आश्चर्यजनक रूप से सटीक और गहराई से व्यावहारिक थे।

हार्डी इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने रामानुजन को कैम्ब्रिज में आमंत्रित किया। बहुत अनुनय (और धार्मिक और सांस्कृतिक चुनौतियों पर काबू पाने) के बाद, रामानुजन ने 1914 में इंग्लैंड की यात्रा की।

एक नई दुनिया कैम्ब्रिज में, रामानुजन के पास अंततः एक विश्व स्तरीय गणितीय वातावरण तक पहुंच थी। उन्होंने और हार्डी ने संख्या सिद्धांत, अनंत श्रृंखला और विभाजन - क्षेत्रों में ग्राउंडब्रेकिंग कार्य पर सहयोग किया जो अभी भी रामानुजन के योगदान से गहराई से प्रभावित हैं।

लेकिन ठंडी अंग्रेजी जलवायु, युद्धकालीन भोजन की कमी और उनके शाकाहारी आहार ने उनके स्वास्थ्य को कमजोर कर दिया। रामानुजन ने तपेदिक विकसित किया और अंततः भारत लौट आए, जहां 1920 में 32 साल की छोटी उम्र में उनकी मृत्यु हो गई।

परंपरा अपने छोटे जीवन के बावजूद, रामानुजन ने लगभग 4,000 मूल प्रमेयों को पीछे छोड़ दिया, जिनमें से कई उनके समय से आगे थे। उनका काम अभी भी आधुनिक गणित को प्रभावित करता है, जिसमें स्ट्रिंग सिद्धांत और ब्लैक होल भौतिकी जैसे क्षेत्र शामिल हैं।

उनकी जीवन कहानी एक शक्तिशाली अनुस्मारक है कि कच्ची प्रतिभा, जुनून और दृढ़ता किसी भी कठिनाई के माध्यम से चमक सकती है। संसाधनों, मेंटरशिप या औपचारिक शिक्षा के बिना भी, रामानुजन दुनिया के अब तक के सबसे महान गणितज्ञों में से एक बन गए हैं।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार

कहानी: पेट

विजय गर्ग

दुकान बंद करने का समय हो आया था। तभी दो औरतें और आ गईं

"भैया साड़ियां दिखा देना कॉटन की, चुनरी प्रिंट में"

आज मेरी खुशी का ठिकाना नहीं है।आज पाँच महीने हो गए हैं, अपनी ये छोटी सी दुकान खोले। आज से पहले कभी ऐसा नहीं हुआ। आज सुबह से दस पंद्रह कस्टमर आ चुके हैं। और बिक्री भी ठीक ठाक हो गई है।सच बोलूं तो इस दुकान का किराया निकालना भी बहुत मुश्किल हो रहा था। रोज एक या दो साड़ी तो कभी एक सूट बेच पाता था। या कभी सिर्फ एक दो दुपट्टे ही। मैंने माँ की सारी जमा पूंजी लगा दिया है। सोचा था,माल ठीक रखूंगा तो लोग आएंगे ही। लेकिन लोग आते ही नहीं थे।दुकान भी मेन रोड से सटे एक पतली सी गली में मिली है। लोगों को तो ठीक से दिखता भी नहीं होगा। पर एक बोर्ड मेन रोड पर लगा रखा है मैंने। सामने मेन रोड पर ही एक सरदार जी की साड़ियों की दुकान है। इस छोटे शहर के ज्यादातर लोग उन्हीं की बड़ी दुकान से कपड़े लेते हैं। रोज सैकड़ों कस्टमर उनके दुकान पर आते हैं।पर लगता है, माँ के आशीर्वाद से उनके दुकान की रौनक मैं अब, कुछ कम कर दूँगा। आज खुशी के साथ हैरानी भी हो रही है।कल ही तो माँ से मैं फोन पर दुकान बंद कर गली से निकलते हुए बातें कर रहा था

"माँ चाचा ने ठीक ही कहा था कोई छोटी मोटी नौकरी कर ले। दुकान चलाना तेरे बस की बात नहीं।और इतनी पगड़ी देकर दुकान भी मिली तो एक गली में जहां ग्राहक ही नहीं पहुंच पाते। सारे ग्राहक तो मेन रोड पर बड़ी दुकान पर चले जाते हैं।

किराया निकालना भी मुश्किल हो रहा है। परिवार कैसे चलेगा माँ, और बच्चों को कहां से पढ़ा पाऊंगा" मैं कल बहुत मायूस था। और परेशान भी। सच बताऊँ तो कल मैं रो पड़ा था माँ से ये सब कहते हुए।

"कोई नहीं बेटा।अब दुकान खोल ही लिया है तो धैर्य रख। किसी चीज़ में सफलता अचानक नहीं मिलती। देखना भगवान सब ठीक करेंगे"

माँ का आशीर्वाद ही है।कल ही उन्होंने कहा और आज दुकान पर थोड़ी रौनक हो आई है

"ये दोनों पैक कर दीजिए" उन्हें साड़ियां पसंद आ गई थीं। मैं उनका बिल बना रहा था तभी एक औरत बोल पड़ी

"सरदार जी ने ठीक कहा कि कॉटन की साड़ियां भी अच्छी मिल जाएगी यहां और दाम भी ठीक लगाते हैं"

"जी कौन सरदार जी ?"

"यही अपने बूटा जी साड़ी वाले।उनके पास चुनरी प्रिंट की साड़ियां नहीं थीं"

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। बूटा जी अपने कस्टमर यहां क्यों भेज रहे हैं।उनके यहां तो खुद सारे कलेक्शन होते हैं। मैंने पैसे लेकर गल्ले में रख लिया। दुकान बंद कर उनके दुकान पर पहुंचा। वे भी दुकान बंद ही कर रहे थे।

"बूटा सिंह जी, आपने अपने ग्राहकों को मेरी दुकान पर भेजा ?

"ओए नहीं जी! बस उन्हें जो चाहिए था वो मेरी दुकान पर नहीं था तो आपका दुकान बता दिया"

मैं जानता हूँ। इनके दुकान पर सब होता है। उनके वर्कर साड़ियां समेट रहे थे। उनमें कुछ वैसी ही साड़ियां भी थी। मैं ये देख फिर उनकी तरफ देखा

"इसमें आपका नुकसान नहीं होगा बूटा सिंह जी ?"

"नुकसान की क्या बात है जी, सबकी गृहस्थी चलनी चाहिए। तुम्हारा भी तो परिवार है।"

शायद इन्होंने कल फोन पर माँ से मेरी बात सुन ली थी

"मैं इस बात पर खुश हो रहा था कि ये सब माँ के आशीर्वाद से हो रहा है पर ये सब आप .. ?"

"ओए नहीं पुत्तर! ये सब माँ का ही आशीर्वाद है, हम सब की माएँ तो एक सी ही तो होती हैं ना!"

उन्हें देख, मैं खुद अपनी सोच पर शर्मिंदा था। मेरी आँखें नम हो आईं। वे मेरे कंधे पर हाथ रख ये कहते हुए निकल गए

"मेरी माँ ने मुझसे ये कहा था,अपने साथ साथ दूसरों के पेट का भी थोड़ा ख्याल रखना"

इस कॉम्पटीशन के दौर में ऐसी बातों की, कतई उम्मीद नहीं थी..!

जनसंख्या विस्तार: भारत की महिलाओं पर मौन बोझ

विजय गर्ग

1.45 बिलियन की आबादी के साथ, भारत ने 2023 में दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाला देश बनने के लिए चीन को पीछे छोड़ दिया।

फिर भी, विरोधाभासी रूप से, देश में अधिक बच्चे पैदा करने के लिए बढ़ती कोलाहल है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख ने जोड़ों से कम से कम तीन बच्चे पैदा करने को कहा है. वह अकेला नहीं है। आंध्र प्रदेश (एपी) और तमिलनाडु (टीएन) के मुख्यमंत्री भी अपने राज्यों के लोगों से अपने पारिवारिक आकार को बढ़ाने का आग्रह कर रहे हैं।

ऐसी मांगों के लिए दिए गए कारणों में से एक है प्रजनन दर में गिरावट, खासकर एपी और टीएन में। कुल प्रजनन दर (टीएफआर) इन दोनों दक्षिणी राज्यों में प्रति महिला दो जन्मों के प्रतिस्थापन स्तर से नीचे है।

दशकों से दो बच्चों या उससे कम के लिए जोर देने के बाद, ज्यादातर महिलाओं को लक्षित करने वाली जबरदस्ती परिवार नियोजन नीतियों के माध्यम से, अब जब 29 राज्यों में से 17 में वांछनीय टीएफआर प्राप्त करने का लक्ष्य प्राप्त हो गया है, तो यह अब वांछनीय क्यों नहीं है?

एपी और टीएन के लिए, यह संसदीय सीटों और राजनीतिक दबदबे पर हारने का डर है।

1976 में हर राज्य की संसदीय सीट का हिस्सा उनकी 1971 की आबादी के आधार पर 25 साल के लिए जम गया था.

यह उन्हें आश्वस्त करना था कि यदि जनसंख्या को कम करने के लिए नीतियों को लागू करने के परिणामस्वरूप उनकी आबादी कम हो जाती है, तो संसदीय सीटों का उनका कोटा नहीं बदलेगा।

2001 में, जब यह सीट शेयर नीति समीक्षा के कारण थी, तो 25 वर्षों के लिए राज्य की आबादी के बावजूद समान सीटों के साथ जारी रखने का निर्णय लिया गया था।

पिछले एक साल से, ऐसे संकेत मिले हैं कि यह अगले साल (2026) को बदलने वाला है जब इसकी समीक्षा होने वाली है। जनसंख्या-आधारित परिसीमन के साथ, एपी और टीएन की संसदीय सीटें तेजी से गिरेंगी। आबादी वाले उत्तरी राज्यों ने जनसंख्या वृद्धि को धीमा करने के साथ-साथ प्रदर्शन नहीं किया है, दक्षिणी राज्यों की कीमत पर लाभ होगा जिन्होंने अपने टीएफआर को नीचे लाने के लिए अच्छा प्रदर्शन किया है।

यह कहा गया है, संघवाद की भावना के खिलाफ होगा। इन सभी तर्कों में, एक बार भी इस बात का कोई उल्लेख नहीं किया गया है कि इसका महिलाओं पर क्या प्रभाव पड़ेगा, हालांकि वे वे हैं जो जनसंख्या नीतियों के केंद्र में हैं।

यहां तक कि जब 1992 में दो-बच्चे की नीति शुरू की गई थी, तो केवल दो या कम बच्चों वाले लोगों को पंचायत और स्थानीय शहरी निकाय चुनावों में लड़ने की अनुमति दी गई थी, महिलाओं के प्रजनन और मानवाधिकारों के बारे में कोई विचार नहीं दिया गया था। अगर महिलाएं उम्मीदवार होती और उनके दो से ज़्यादा बच्चे होते तो उन्हें गर्भपात कराना पड़ता या अपने बच्चे को छोड़ देना पड़ता. यदि वे प्रतियोगियों के जीवनसाथी थे, तो उन्हें जबरन गर्भपात या परित्याग का सामना करना पड़ा। वे दोनों स्थितियों में पीड़ित थे। यह दिखाने के लिए कई उदाहरण और अध्ययन हैं कि दो-बच्चे के आदर्श पितृसत्ता की पारंपरिक संरचनाओं को लाभ और मजबूत करते हैं।

फिर भी, यह जनसंख्या 'नियंत्रण' के नाम पर कई राज्यों में जारी है। अब जब कुछ राजनीतिक निर्णय लेने वाले जनसंख्या में वृद्धि चाहते हैं, तो कुछ राज्यों में एपी का पालन करने की संभावना है, जिसने हाल ही में दो-बच्चों के आदर्श के साथ दूर किया है। लेकिन क्या इस फ़ैसले से महिलाओं को फ़ायदा होगा? कन्या भ्रूण हत्या और पुत्र वरीयता कानूनों के बावजूद गंभीर वास्तविकता बनी हुई है।

पिछले महीने, हरियाणा सरकार ने लड़कियों के खिलाफ घटते लिंगानुपात के जवाब में सेक्स-चयनात्मक गर्भपात और प्री-नेटल डायग्नोस्टिक टेक्नीक (पीएनडीटी) अधिनियम के उल्लंघन को रोकने के लिए प्रत्येक जिले में समर्पित पुलिस कोशिकाओं की स्थापना की घोषणा की।

चिंताजनक रूप से, यह सिर्फ हरियाणा में नहीं है जहां गर्भ में महिला बच्चे को मार दिया जाता है। कौन गारंटी दे सकता है कि अधिक बच्चों के जन्म को प्रोत्साहित करने से महिलाओं के प्रजनन और यौन स्वास्थ्य और अधिकारों का अधिक उल्लंघन नहीं होगा?

बातचीत के लिए महिलाओं के प्रजनन अधिकार क्यों होने चाहिए जब यह वे हैं जिन्हें यह तय करने का अधिकार है कि वे कब और कितने बच्चे चाहते हैं?

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद् स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

"हम नहीं देख पाए, वो अब भी गा रहे थे: गांव की बाल्कनी से उड़ती स्मृतियाँ"

शहरों की भीड़ में रहते हुए हम जैसे संवेदना शून्य होते चले जाते हैं। वहां सुबह मोबाइल अलार्म से होती है, यहां मुर्गे की बांग से। वहां हवा एसी की होती है, यहां आम के पेड़ की। वहां आसमान धुंध से भरा होता है, यहां पक्षियों की उड़ान से।

प्रियंका सौरभ

शहर की चमचमाती सड़कों, ऊंची इमारतों और बंद खिड़कियों के पीछे जब हम जीवन को व्यस्तताओं की कैद में जी रहे होते हैं, तब कहीं दूर गांवों की बाल्कनियों में जीवन अब भी खुले आकाश के नीचे साँस ले रहा होता है। वहां सुबहें अब भी चिड़ियों की चहचहाहट से शुरू होती हैं, दोपहरें कोयल की तान से सजी होती हैं, और रातें उल्लुओं की टेर में गूंजती हैं। यह लेख उन्हीं स्मृतियों और अनुभवों की यात्रा है — एक गांव की बाल्कनी में बैठकर महसूस की गई उस दुनिया की, जो कभी हमारी थी, लेकिन जिसे हमने शहर के शोर में कहीं खो दिया।

जब मैं हाल ही में गांव आई, तो एक शाम अपनी बाल्कनी में बैठी थी। अचानक एक चिड़िया ने ध्यान खींचा। वो जानी-पहचानी सी लगी — भूरे और सफेद रंग की, फुर्तीली और बेहद चंचल। उसे देखते ही जैसे मन के किसी कोने से आवाज़ आई — ₹धौरेंईया !₹ हाँ, यही तो कहते थे हम बच्चे जब नानी के घर आया करते थे। गर्मियों की छुट्टियों में जब पूरा कुनबा गांव में इकट्ठा होता, तो आंगन में बैठकर हम सब बच्चे इन्हीं चिड़ियों के पीछे भागते, उन्हें दाना डालते, और उनके नामों पर बहस करते। ₹ये गौरैया नहीं, धौरेंईया है,₹ मेरा चचेरा भाई अकड़कर कहता।

शहर में रहते हुए पक्षियों की पहचान ही सीमित हो जाती है। कौए, कबूतर, तोते और कभी-कभार गौरैया — बस यही दिखाई देते हैं। लेकिन यहां गांव में जैसे किसी भूली-बिसरी किताब के पन्ने फिर से खुल गए हों। मेरी बाल्कनी के सामने ही एक पेड़ है, जिस पर सुबह-सुबह मैना और बुलबुल आती हैं। दूर खेतों में मोर नाचते हैं, और उनकी कूक जैसे किसी पारंपरिक संगीत का हिस्सा हो। नीलकंठ की एक झलक भी दिखती है, और वो नीला रंग आंखों को ताजगी देता है।

टिटहरी की टिट-टिट, जलमुर्गी की फुर्ती, कोयल की कुहू-कुहू, और तितर की दौड़ — ये सब मिलकर एक ऐसी सजीव दुनिया रचते हैं जिसे शहरों में हमने कभी ठीक से जाना ही नहीं।

शहरों की भीड़ में रहते हुए हम जैसे संवेदना शून्य होते चले जाते हैं। वहां सुबह मोबाइल अलार्म से होती है, यहां मुर्गे की बांग से। वहां हवा एसी की होती है, यहां आम के पेड़ की। वहां आसमान धुंध से भरा होता है, यहां पक्षियों की उड़ान से।

रात के सन्नाटे में जब गांव में दो उल्लू नियमित रूप से आकर एक पुराने नीम के पेड़ पर बैठते हैं, तो एक अलग ही एहसास होता है। शहर में उल्लू शब्द एक अपमान या अंधविश्वास से जुड़ा होता है, लेकिन यहां वो जैसे रात के शिक्षक हों —

प्रकृति का संतुलन बनाए रखने वाले मौन प्रहरी। जब मैंने अपनी नानी से पूछा कि इस चिड़िया को धौरेंईया ही कहते थे न, तो उन्होंने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया, ₹हाँ बिटिया, यही तो है। अब ये शहरों में कहां दिखती है। तुम लोग ही कहां रहते हो वहां, जो देख पाओगे।"

इस बात ने भीतर तक झकझोर दिया। क्या सचमुच ये पक्षी विलुप्त हो रहे हैं, या हम ही उन जगहों से विलुप्त हो गए हैं जहां जीवन और प्रकृति एकसाथ सांस लेते हैं?

गांव की यह बाल्कनी एक खिड़की बन गई थी — केवल बाहर देखने की नहीं, बल्कि अपने भीतर झांकने की। मुझे याद आने लगीं नानी की कहानियाँ, वो दोपहरें जब पेड़ की छांव में बैठकर चिड़ियों के घोंसलों को निहारा करते थे, वो मटर के खेत जिनमें तीतर भागते थे, और वो पोखर जहां जलमुर्गियाँ अपने बच्चों के साथ तैरती थीं।

हमारी पीढ़ी ने मोबाइल की स्क्रीन पर बर्ड इमोजी तो देखी, लेकिन उनके असली रंग नहीं। हमने गूगल पर बर्ड कॉल्स सुने, लेकिन कभी खुले आसमान के नीचे बैठकर चिड़ियों की सुबह की सभा नहीं देखी।

गांव आकर यह एहसास हुआ कि हमारी भागदौड़ में हमने वो सब पीछे छोड़ दिया है, जिसे देखकर हमारी आत्मा मुस्कुराया करती थी। पक्षी केवल उड़ने वाले प्राणी नहीं हैं, वो हमारे अतीत के हिस्से हैं। हमारे लोकगीतों, कहानियों, और भावनाओं में बसे हुए साथी हैं। ₹कागा सब तन खाइयो, चून-चून खइयो मांस₹ — कबीर के इस दोहे से लेकर मीराबाई की कोयल और तुलसी की चातक तक, हर पक्षी हमारी संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा रहा है।

मुझे याद है जब पहली बार शहर आई थी, तो सोचती थी कि वहां की चकाचौंध ही जीवन का लक्ष्य है। लेकिन अब समझ में आता है कि रोशनी जरूरी है, पर हर रोशनी सूरज नहीं होती। कुछ रोशनियाँ ऐसी भी होती हैं जो आंखों को चौंधिया देती हैं, पर मन को अंधेरा कर देती हैं।

गांव की इस बाल्कनी में बैठे-बैठे एक नन्ही सी चिड़िया बार-बार आती है, कुछ पल बैठती है, फिर उड़ जाती है। उसे देखकर लगता है जैसे वो मेरी स्मृतियों में पंख लगा रही हो। हर बार जब वो उड़ती है, एक पुरानी याद हवा में तैर जाती है।

हम प्रकृति से जितना दूर होते जा रहे हैं, उतना ही खालीपन हमारे भीतर बढ़ता जा रहा है। मानसिक स्वास्थ्य से लेकर सामाजिक दूरी तक, आधुनिक जीवन के संकटों का एक बहुत बड़ा कारण यह भी है कि हम जमीन से, पेड़ों से, पक्षियों से और अपने मूल से कटते जा रहे हैं।

यह लेख एक आग्रह है — खुद से, और आप सबसे भी। गांवों में जाइए, खुली हवा में सांस लीजिए, चिड़ियों की आवाज़ पहचानिए, बच्चों को उनके नाम सिखाइए, और महसूस कीजिए कि जीवन केवल इंसानी शोर में नहीं, चहचहाहट में भी होता है।

शहर हमें ऊँचाई देता है, पर गांव गहराई देता है। शहर विकास की दौड़ है, गांव विरासत की गोद। और सबसे जरूरी बात — ये पक्षी विलुप्त नहीं हुए हैं। वे अब भी गा रहे हैं, बस हमने सुनना छोड़ दिया है। आइए, फिर से सुनना शुरू करें। अपनी बाल्कनी से नहीं, अपने मन की खिड़की से।

"राणा की रगों में चिंगारी थी"

– डॉ० सत्यवान सौरभ

पग-पग पर जंजीरें थीं, पर आँखों में अंगारे थे,
अकेला था रणभूमि में, पर लाखों पर वो भारी थे।
स्वाभिमान की चट्टानों पर, जहाँ सिर कभी न झुके,
महाराणा प्रताप थे वो, जिनसे दुश्मन भी थर्राए थे।

हल्दीघाटी की उस धरा पर, लहू में आग थी जलती,
छोटा-सा एक चेतक भी, विजयों की कथा थी पलती।
न धन का लोभ, न ताज का मोह,
बस मातृभूमि प्यारी थी,
राणा की रगों में जो बहती,
वो सिर्फ़ लहू नहीं चिंगारी थी।

अकबर ने भेजे प्रस्ताव कई,
राणा ने सब ठुकरा डाले,
"झुकना मरना से बदतर है",
ये बोल अमर थे, निराले।
झोपड़ी में चूल्हा बुझा था, पर आत्मा भूखी न थी,
जिसने जंगल रखा लिए पत्थर,
वो प्रताप महाराणा थे।

ना झुके, ना बिके, ना रुके,
इतिहास को राह दिखा दी,
राजा थे पर राज नहीं चाहा, बलिदानों की मिसाल बना दी।
माटी से जो रिश्ता जोड़ा, तलवारों से निभाया,
राणा ने ख़ुद को नहीं, पर भारत को अमर बनाया।

जय महाराणा प्रताप!

कुर्सी नहीं, जिम्मेदारी निभाई है – मोदी सरकार ने किसानों की बात बनाई है

जब देश के करोड़ों किसानों की आंखों में भरोसे की लौ जलती है और उनके होंठों पर मुस्कान खिलती है, तो समझिए कि देश की बागडोर उन हाथों में है जो सिर्फ कुर्सी नहीं, जिम्मेदारी संभालते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया है कि 'किसान कल्याण' उनके लिए महज एक नारा नहीं, बल्कि एक पवित्र संकल्प है, जिसे वे हर सांस के साथ निभा रहे हैं। हाल ही में केंद्रीय कैबिनेट की बैठक में लिए गए फैसले न केवल किसानों के लिए एक तोहफा हैं, बल्कि भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का एक साहसिक दस्तावेज हैं। 2025-26 के खरीफ विपणन सत्र के लिए 14 फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में 50 फीसदी तक की अभूतपूर्व वृद्धि और ब्याज सहायता योजना की निरंतरता ने यह साबित कर दिया है कि मोदी सरकार का हर कदम किसानों के सम्मान और उनकी समृद्धि के लिए है। यह लेख उस ऐतिहासिक प्रयास को नमन है, जो भारत के खेत-खलिहानों को आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण का नया सूरज दिखा रहा है।

मोदी सरकार ने खरीफ विपणन सत्र 2025-26 के लिए 14 प्रमुख फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में भारी वृद्धि को मंजूरी दी है, जिसका अनुमानित वित्तीय प्रभाव 2.07 लाख करोड़ रुपये है। यह कोई साधारण फैसला नहीं, बल्कि भारत के कृषि क्षेत्र को नई दिशा देने वाला एक क्रांतिकारी कदम है। धान, जो भारत की रसोई का आधार है, इसका एमएसपी 3 प्रतिशत बढ़ाकर 2,369 प्रति क्विंटल (सामान्य धान) और 2,389 प्रति क्विंटल (ग्रेड-ए धान) कर दिया गया है। यह वृद्धि पिछले वर्ष की तुलना में 69 प्रति क्विंटल की है, जो किसानों को उनकी मेहनत का उचित मूल्य दिलाने का एक ठोस प्रयास है।

दालों और तिलहन की खेती को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने विशेष ध्यान दिया है। अरहर का एमएसपी 450 की बढ़ोतरी के साथ 8,000 प्रति क्विंटल, उड़द का 400 की वृद्धि के साथ 7,800 प्रति क्विंटल, और मूंग का 86 की बढ़त के साथ 8,768 प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। इसके अलावा, नाइजरसीड, रागी, कपास और तिल जैसी फसलों के एमएसपी में सबसे अधिक वृद्धि देखी गई है, जो सरकार की उस नीति को दर्शाता है जो दालों, तिलहन और पोषक अनाजों को प्रोत्साहन दे रही है। यह केवल आंकड़ों की बात नहीं, बल्कि उन लाखों किसानों के आत्मसम्मान की कहानी है, जिनके लिए खेती सिर्फ आजीविका नहीं, बल्कि जीवन का आधार है।

यह वृद्धि केंद्रीय बजट 2018-19 के उस ऐतिहासिक वादे का परिणाम है, जिसमें सरकार ने एमएसपी को उत्पादन लागत का कम से कम 1.5 गुना करने का संकल्प लिया था। बाजरा (63%), मक्का और तुअर (59%), और उड़द (53%) जैसी फसलों के लिए लागत पर उच्च मार्जिन सुनिश्चित करना इस बात का प्रमाण है कि मोदी सरकार न केवल वादे करती है, बल्कि उन्हें हकीकत में बदलने का जज्बा भी रखती है। यह नीति न केवल आर्थिक लाभ देगी, बल्कि फसल विविधीकरण को बढ़ावा देकर भारत को तिलहन और दालों में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक मजबूत कदम है।

मोदी सरकार की दूरदर्शिता केवल एमएसपी तक सीमित नहीं है। खेती के लिए पूंजी की आवश्यकता को समझते हुए सरकार ने संशोधित ब्याज सहायता योजना (एमआईएसएस) को 2025-26 तक जारी रखने का फैसला किया है। इस योजना के तहत, किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) के माध्यम से किसानों को 7% की रियायती ब्याज दर पर 3 लाख तक का अल्पकालिक ऋण उपलब्ध कराया जाएगा। समय पर ऋण चुकाने वाले किसानों को 3% अतिरिक्त ब्याज छूट मिलेगी, जिससे प्रभावी ब्याज दर मात्र 4% रह जाएगी। पशुपालन और मत्स्य पालन जैसे संबद्ध क्षेत्रों के लिए 2 लाख तक के ऋण पर भी यह लाभ लागू है।

इस योजना पर 15,640 करोड़ रुपये का निवेश दर्शाता है कि सरकार किसानों की आर्थिक जरूरतों के प्रति कितनी संवेदनशील है। देश में 7.75 करोड़ से अधिक केसीसी खातों के साथ, यह योजना लाखों किसानों के लिए वित्तीय सुरक्षा का कवच बन रही है। यह केवल ऋण देना नहीं, बल्कि किसानों को आत्मनिर्भर बनाने का एक मिशन है। समय पर ऋण चुकाने की प्रोत्साहन राशि न केवल वित्तीय अनुशासन को बढ़ावा देती है, बल्कि किसानों के बीच विश्वास भी जगाती है कि सरकार उनके साथ हर कदम पर खड़ी है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नेतृत्व एक ऐसी मशाल है, जो न केवल रास्ता दिखाती है, बल्कि उस रास्ते पर चलने की हिम्मत भी देती है। उनकी सरकार ने बार-बार साबित किया है कि किसान उनके लिए केवल मतदाता नहीं, बल्कि देश की प्रगति का आधार हैं। चाहे वह एमएसपी में ऐतिहासिक वृद्धि हो, ब्याज सहायता योजना हो, या फिर किसान सम्मान निधि जैसे कदम, हर नीति में किसानों के प्रति एक गहरी प्रतिबद्धता झलकती है।

यह सरकार वह नहीं जो सिर्फ घोषणाएं करती हो; यह वह सरकार है जो खेतों की मिट्टी में विश्वास बोती है और किसानों के चेहरों पर मुस्कान लाती है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने ठीक ही कहा, "पिछले 10-11 वर्षों में खरीफ फसलों के एमएसपी में भारी बढ़ोतरी की गई है।" यह एक दशक का वह सुनहरा सफर है, जिसमें किसानों की आय दोगुनी करने का सपना हकीकत की ओर बढ़ रहा है।

मोदी सरकार के इन फैसलों का असर केवल आर्थिक आंकड़ों तक सीमित नहीं है। यह भारत के उस किसान की कहानी है, जो अब अपने श्रम का उचित मूल्य पाकर गर्व महसूस करता है। यह उस ग्रामीण अर्थव्यवस्था की कहानी है, जो अब सिर्फ जीवित नहीं रह रही, बल्कि फल-फूल रही है। यह उस नए भारत की कहानी है, जहां खेतों से लेकर कारखानों तक, हर क्षेत्र में प्रगति की लहर दौड़ रही है।

जब एक किसान अपने खेत में हल चलाता है, तो वह सिर्फ फसल नहीं बोता, वह देश की प्रगति का बीज बोता है। मोदी सरकार ने उस बीज को पनपने का अवसर दिया है — उचित मूल्य, सस्ता ऋण, और अटूट विश्वास के साथ। यह केवल नीतियां नहीं, बल्कि एक नया भारत बनाने का संकल्प है। एक सलाम उस नेतृत्व को आज जब देश का किसान अपनी मेहनत का सही मूल्य पाता है, तो उसकी आंखों में भरोसा और होंठों पर मुस्कान होती है। यह भरोसा और यह मुस्कान ही मोदी सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि है। यह नेतृत्व नायाब है, अद्वितीय है, और भारत की आत्मा से गहराई से जुड़ा हुआ है। यह वह सरकार है जो न केवल शासन करती है, बल्कि देशवासियों के सपनों को जीती है। भारत का किसान आज गर्व से कह सकता है — "मेरी मेहनत का मोल अब देश की नींव है।" और इस नींव को मजबूत करने के लिए, नरेंद्र मोदी और उनकी सरकार को देश का सलाम।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और आज का युवा, करियर की संभावनाएं

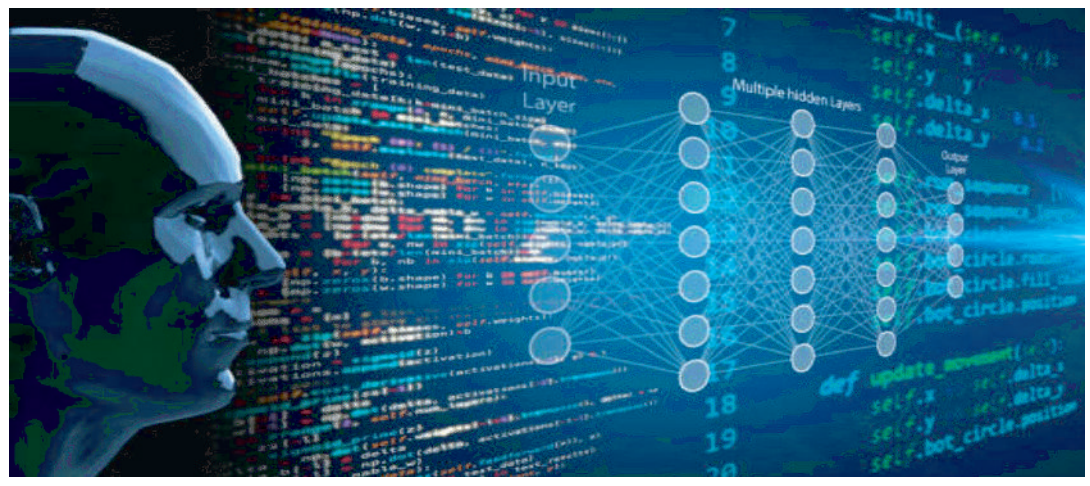

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) आज भारत सहित पूरी दुनिया में तकनीकी क्रांति ला रहा है। यह सिर्फ IT सेक्टर तक सीमित नहीं है, बल्कि हेल्थकेयर, एजुकेशन, मैन्युफैक्चरिंग, एग्रीकल्चर, बिजनेस आदि हर क्षेत्र में अपनी जगह बना चुका है। AI के बढ़ते इस्तेमाल से युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर तेजी से खुल रहे हैं।

AI में युवाओं के लिए कई आकर्षक और उच्च वेतन वाले करियर ऑप्शन उपलब्ध हैं, जैसेः

डेटा साइंटिस्ट
मशीन लर्निंग इंजीनियर
बिजनेस इंटेलिजेंस डेवलपर
AI सॉफ्टवेयर इंजीनियर
डेटा एनालिस्ट
रोबोटिक्स इंजीनियर
AI रिसर्च साइंटिस्ट
AI एथिक्स ऑफिसर

इनमें से कई प्रोफाइल्स में शुरुआती सैलरी 50-60 हजार से लेकर 1 लाख रुपये प्रतिमाह या उससे अधिक हो सकती है, खासकर मल्टीनेशनल कंपनियों में।

AI में करियर बनाने के लिए कंप्यूटर प्रोग्रामिंग (Python, R, Java), गणित, स्टैटिस्टिक्स, डेटा एनालिसिस, मशीन लर्निंग, और AI टूल्स की जानकारी जरूरी है। 12वीं के बाद AI, रोबोटिक्स या कंप्यूटर साइंस में डिग्री या सर्टिफिकेट कोर्स कर सकते हैं।

भारत में डिजिटलाइजेशन, स्टार्टअप कल्चर, और विदेशी निवेश के कारण AI सेक्टर में नौकरियों की मांग तेजी से बढ़ रही है। रिपोर्ट्स के अनुसार, आने वाले 5-10 साल में AI से जुड़े क्षेत्रों में लाखों नई नौकरियां बनेंगी, खासकर IT हब्स जैसे बेंगलुरु, हैदराबाद, पुणे में।

हालांकि, ऑटोमेशन के कारण कुछ पारंपरिक नौकरियां कम हो सकती हैं, लेकिन AI, डेटा साइंस, और टेक्नोलॉजी में स्किल्ड युवाओं के लिए अवसर कई गुना बढ़ेंगे।

AI में करियर के लिए लगातार स्किल अपग्रेड करना जरूरी है।

स्किल गैप को कम करने के लिए कोर्स, इंटर्नशिप और प्रैक्टिकल प्रोजेक्ट्स पर फोकस करें।

AI युवाओं के लिए एक सुनहरा भविष्य लेकर आ रहा है। जो युवा समय रहते AI और उससे जुड़े क्षेत्रों में स्किल्स हासिल करेंगे, उनके लिए करियर की संभावनाएं बहुत उज्ज्वल हैं।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह

हिंदी पत्रकारिता उद्भव से लेकर डिजिटल युग तक

संदीप सृजन

हिंदी पत्रकारिता का इतिहास भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिदृश्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। यह न केवल सूचना का माध्यम है, बल्कि समाज को जागरूक करने, विचारों को प्रेरित करने और परिवर्तन की दिशा में एक उत्प्रेरक की भूमिका निभाता है। हिंदी पत्रकारिता ने अपने उद्भव से लेकर आज तक कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। हिंदी पत्रकारिता का सफर संघर्षों और उपलब्धियों से भरा रहा है। 19वीं सदी में अपने उद्भव से लेकर डिजिटल युग तक, इसने समाज को जागरूक करने और परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आर्थिक दबाव, डिजिटल युग की चुनौतियाँ, और पत्रकारों की सुरक्षा जैसे मुद्दों ने इसके सामने कई बाधाएँ खड़ी की हैं। फिर भी, डिजिटल क्रांति, स्थानीय पत्रकारिता, और तकनीकी नवाचारों के साथ हिंदी पत्रकारिता का भविष्य उज्ज्वल है।

हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत 19वीं सदी में हुई, जब भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन अपने चरम पर था। इस दौर में हिंदी पत्रकारिता ने न केवल सूचना प्रसार का कार्य किया, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पहला हिंदी समाचार पत्र ₹उदंत मार्तंड₹ 30 मई, 1826 को पंडित जुगल किशोर शुक्ल द्वारा कोलकाता से प्रकाशित किया गया। हालांकि, आर्थिक तंगी और अन्य संसाधनों की कमी के कारण यह पत्र केवल डेढ़ साल तक चल सका। यह हिंदी पत्रकारिता के शुरुआती संघर्ष का एक उदाहरण है। उस दौर में हिंदी पत्रकारिता को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। ब्रिटिश सरकार की सेंसरशिप, सीमित पाठक वर्ग, और तकनीकी संसाधनों की कमी ने पत्रकारों के लिए काम को और कठिन बना दिया। इसके बावजूद भारतेंदु हरिश्चंद्र, बाल गंगाधर तिलक, और महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे दिग्गजों ने हिंदी पत्रकारिता को एक मजबूत आधार प्रदान किया। भारतेंदु हरिश्चंद्र की पत्रिका कवि वचन सुधा और हरिश्चंद्र मैगजीन ने हिंदी साहित्य और पत्रकारिता को एक नई दिशा दी। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी पत्रकारिता ने जनजागरण का महत्वपूर्ण कार्य किया। स्वदेश, कर्मवीर और प्रताप जैसे समाचार पत्रों ने लोगों को स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया। इस दौरान पत्रकारों को जेल, उत्पीड़न, और आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। फिर भी, हिंदी पत्रकारिता ने अपनी आवाज को दबने नहीं दिया।

स्वतंत्रता के बाद हिंदी पत्रकारिता ने नए आयाम हासिल किए। 1950 और 1960 के दशक में हिंदी समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई। हिंदुस्तान, नवभारत टाइम्स, धर्मयुग और साप्ताहिक हिंदुस्तान जैसे प्रकाशनों ने हिंदी पत्रकारिता को लोकप्रिय बनाया। इस दौरान हिंदी पत्रकारिता ने शिक्षा, सामाजिक सुधार, और राष्ट्रीय एकता जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया।

हालांकि, इस दौर में भी हिंदी पत्रकारिता को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। हिंदी भाषी क्षेत्रों में साक्षरता दर कम होने के कारण पाठक वर्ग सीमित था। इसके अलावा, अंग्रेजी पत्रकारिता के मुकाबले हिंदी पत्रकारिता को कम गंभीरता से लिया जाता था। फिर भी, हिंदी पत्रकारिता ने अपनी पहुंच और प्रभाव को बढ़ाने के लिए लगातार प्रयास किए।

आज के दौर में हिंदी पत्रकारिता एक ओर जहां तकनीकी प्रगति और डिजिटल क्रांति के साथ कदमताल कर रही है, वहीं इसे कई नई और पुरानी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। हिंदी पत्रकारिता पर कॉर्पोरेट और विज्ञापनदाताओं का प्रभाव बढ़ रहा है। बड़े मीडिया हाउस विज्ञापन राजस्व पर निर्भर हैं, जिसके कारण कई बार पत्रकारिता की निष्पक्षता प्रभावित होती है। पेड न्यूज और प्रायोजित सामग्री ने पत्रकारिता की विश्वसनीयता पर सवाल उठाए हैं। छोटे और स्वतंत्र हिंदी समाचार पत्रों को बड़े मीडिया समूहों के साथ प्रतिस्पर्धा करना मुश्किल हो रहा है, जिसके कारण कई प्रकाशन बंद हो चुके हैं।

डिजिटल युग ने हिंदी पत्रकारिता को नई संभावनाएँ दी हैं, लेकिन इसके साथ ही कई चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर फेक न्यूज और मिसइन्फॉर्मेशन का प्रसार एक बड़ी समस्या है। हिंदी समाचार वेबसाइट्स और यूट्यूब चैनल्स की बाढ़ ने गुणवत्तापूर्ण पत्रकारिता को प्रभावित किया है। कई डिजिटल प्लेटफॉर्म सनसनीखेज और भ्रामक खबरों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिससे पत्रकारिता की विश्वसनीयता पर असर पड़ता है। हिंदी पत्रकारों को अक्सर खतरनाक परिस्थितियों में काम करना पड़ता है। खोजी पत्रकारिता करने वाले पत्रकारों को धमकियाँ, हमले, और यहाँ तक कि हत्या का

सामना करना पड़ता है। ग्रामीण और छोटे शहरों में काम करने वाले पत्रकारों को स्थानीय नेताओं और अपराधियों से खतरा रहता है। पत्रकारों की सुरक्षा के लिए ठोस कानूनी और सामाजिक ढाँचा अभी भी अपर्याप्त है।

हिंदी पत्रकारिता में प्रशिक्षित और कुशल पत्रकारों की कमी एक बड़ी चुनौती है। कई युवा पत्रकार अंग्रेजी मीडिया की ओर आकर्षित होते हैं, क्योंकि इसे अधिक प्रतिष्ठित और आर्थिक रूप से लाभकारी माना जाता है। इसके अलावा, हिंदी पत्रकारिता में नई तकनीकों और डेटा पत्रकारिता जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण की कमी है। हिंदी पत्रकारिता को सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की चुनौती का सामना करना पड़ता है। जातिगत, धार्मिक, और क्षेत्रीय संवेदनशीलताओं के कारण कई बार पत्रकारों को अपनी बात कहने में सावधानी बरतनी पड़ती है। इसके अलावा, हिंदी पत्रकारिता को अक्सर पिछड़ा या क्षेत्रीय माना जाता है, जो इसकी छवि को प्रभावित करता है। हिंदी भाषा की मानकता और शुद्धता को लेकर भी बहस चलती रहती है। डिजिटल युग में हिंदी में तकनीकी शब्दावली और आधुनिक भाषा का अभाव एक समस्या है। साथ ही, हिंदी पत्रकारिता को अंग्रेजी और अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं के साथ प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है, जो वैश्विक स्तर पर अधिक स्वीकार्य हैं।

हिंदी पत्रकारिता का भविष्य आशावादी होने के साथ-साथ चुनौतियों से भरा हुआ है। डिजिटल क्रांति और तकनीकी प्रगति ने हिंदी पत्रकारिता के लिए नए अवसर खोले हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने हिंदी पत्रकारिता को व्यापक दर्शकों तक पहुँचाने में मदद की है। द वायर हिंदी, क्विंट हिंदी, बीबीसी हिंदी और न्यूज़लॉन्ड्री जैसे डिजिटल मीडिया हाउस ने हिंदी पत्रकारिता को एक नया आयाम दिया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे ट्विटर, फेसबुक, और यूट्यूब ने हिंदी समाचारों को तेजी से प्रसारित करने में मदद की है। भविष्य में, डिजिटल पत्रकारिता हिंदी भाषी क्षेत्रों में और अधिक लोकप्रिय होगी, क्योंकि इंटरनेट की पहुँच ग्रामीण क्षेत्रों तक बढ़ रही है।

हिंदी पत्रकारिता में खोजी और डेटा पत्रकारिता का विकास एक सकारात्मक संकेत है। डेटा-आधारित पत्रकारिता से न केवल खबरों की विश्वसनीयता बढ़ती है, बल्कि यह जटिल मुद्दों को सरलता से समझाने में भी मदद करती है। भविष्य में, डेटा पत्रकारिता और विश्लेषणात्मक लेखन हिंदी पत्रकारिता का महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकते हैं।

हिंदी भाषी क्षेत्रों में स्थानीय और ग्रामीण पत्रकारिता का महत्व बढ़ रहा है। ख़बर लहरिया जैसे स्वतंत्र मीडिया संगठनों ने ग्रामीण भारत की समस्याओं को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर लाने का काम किया है। भविष्य में, स्थानीय मुद्दों पर केंद्रित पत्रकारिता हिंदी भाषी समुदायों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, और डेटा एनालिटिक्स जैसे तकनीकी नवाचार हिंदी पत्रकारिता को और अधिक प्रभावी बना सकते हैं। AI आधारित उपकरण समाचारों के अनुवाद, विश्लेषण, और प्रसार में मदद कर सकते हैं। इसके अलावा, पॉडकास्ट और वीडियो सामग्री जैसे नए प्रारूप हिंदी पत्रकारिता को और अधिक आकर्षक बना रहे हैं।

हिंदी पत्रकारिता के भविष्य के लिए पत्रकारों का प्रशिक्षण और शिक्षा महत्वपूर्ण है। पत्रकारिता संस्थानों को हिंदी पत्रकारों के लिए विशेष पाठ्यक्रम शुरू करने चाहिए, जिसमें डिजिटल पत्रकारिता, खोजी पत्रकारिता, और डेटा विश्लेषण जैसे विषय शामिल हों। इससे हिंदी पत्रकारिता में गुणवत्ता और पेशेवरता बढ़ेगी।

हिंदी पत्रकारिता के भविष्य की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह कितनी निष्पक्ष और विश्वसनीय रह पाती है। पाठकों का भरोसा जीतने के लिए हिंदी मीडिया को पेड न्यूज, सनसनीखेज खबरों, और पक्षपात से बचना होगा। स्वतंत्र और निष्पक्ष पत्रकारिता ही हिंदी पत्रकारिता को दीर्घकालिक सफलता दिला सकती है। हिंदी पत्रकारिता को अपने मूल्यों निष्पक्षता, विश्वसनीयता, और सामाजिक जिम्मेदारी को बनाए रखते हुए आगे बढ़ना होगा। पत्रकारों, मीडिया संगठनों, और पाठकों को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि हिंदी पत्रकारिता न केवल जीवित रहे, बल्कि समाज के लिए एक सकारात्मक बदलाव का माध्यम बने। यदि हिंदी पत्रकारिता अपनी चुनौतियों का सामना कर पाए और नई संभावनाओं को अपनाए, तो यह निश्चित रूप से भारत के लोकतांत्रिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार और स्तम्भकार हैं)

30 मई 1826: अभिव्यक्ति की आज़ादी का पहला अध्याय

[उदन्त मार्तण्ड से डिजिटल युग तक: पत्रकारिता की यात्रा]

जब विचारों की अभिव्यक्ति पर पहरे हों, जब जनमानस को भ्रम और भय में बाँधा जा रहा हो, तब शब्दों की ताक़त एक क्रांति बन जाती है। यह ताक़त, यह जुनून, और यह साहस 30 मई 1826 को उस ऐतिहासिक क्षण में प्रकट हुआ, जब हिन्दी भाषा में पहला समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' ने जन्म लिया। यह दिन केवल एक समाचार पत्र के प्रकाशन की कहानी नहीं, बल्कि हिन्दी पत्रकारिता की नींव, भारतीय जनमानस की आवाज़ और स्वतंत्रता की भावना को मूर्त रूप देने की गाथा है। पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने उस दौर में, जब हिन्दी भाषी समाज अपनी ही भाषा में सूचना से वंचित था, एक ऐसी मशाल जलाई, जो आज भी हिन्दी पत्रकारिता के मार्ग को आलोकित करती है।

उस समय का भारत अंग्रेज़ी शासन के अधीन था। समाज में सामाजिक कुरीतियाँ, अज्ञानता और शोषण का बोलबाला था। अंग्रेज़ी और बांग्ला में समाचार पत्र तो थे, लेकिन हिन्दी, जो करोड़ों लोगों की भाषा थी, पत्रकारिता के मंच से लगभग अनुपस्थित थी। ऐसे में पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने कोलकाता से 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन शुरू किया। यह साप्ताहिक पत्र हर मंगलवार को खड़ी बोली हिन्दी में छपता था, जिसमें संस्कृतनिष्ठ शब्दों की मिठास और जनसामान्य की सहजता का संगम था। इस पत्र का उद्देश्य केवल समाचार देना नहीं था, बल्कि जनता को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना, सामाजिक बुराइयों पर प्रहार करना और ब्रिटिश शासन की नीतियों की आलोचना करना भी था। यह पत्रकारिता का वह दौर था, जब हर शब्द एक विद्रोह था, हर लेख एक जोखिम।

'उदन्त मार्तण्ड' का सफर लंबा नहीं रहा। केवल 79 अंक प्रकाशित होने के बाद, आर्थिक तंगी, सरकारी समर्थन की कमी और सीमित प्रचार-प्रसार के कारण इसे बंद करना पड़ा। लेकिन इस अल्पकालिक प्रयास ने हिन्दी पत्रकारिता की ऐसी नींव रखी, जिस पर आज का विशाल भवन खड़ा है। यह पत्र केवल कागज़ और स्याही का मेल नहीं था, बल्कि यह एक विचार था, एक आंदोलन था, जो हिन्दी भाषा को सम्मान, स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति का मंच देने के लिए शुरू हुआ। इसकी चिंगारी ने आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, क्योंकि हिन्दी पत्रकारिता ने जनता को न केवल सूचना दी, बल्कि उन्हें एकजुट होने और अपने हक़ के लिए लड़ने की प्रेरणा भी दी।

हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास केवल 'उदन्त मार्तण्ड' तक सीमित नहीं रहा। इसके बाद 'बनारस अखबार', 'सुधाकर', और 'हिन्दी प्रदीप' जैसे समाचार पत्रों ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिन्दी पत्रकारिता ने गांधी, तिलक और अन्य नेताओं के विचारों को जन-जन तक पहुँचाया। 'प्रताप', 'कर्मवीर' और 'आज' जैसे अखबारों ने न केवल ब्रिटिश शासन को चुनौती दी, बल्कि सामाजिक सुधारों को भी बढ़ावा दिया। आपातकाल के दौर में, जब अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर ताले लग गए थे, तब भी हिन्दी पत्रकारिता ने साहस के साथ सत्ता से सवाल पूछे। यह पत्रकारिता कभी केवल समाचारों का माध्यम नहीं रही; यह समाज का दर्पण थी, जनता की आवाज़ थी, और बदलाव की प्रेरणा थी।

आज का दौर डिजिटल क्रांति का है। हिन्दी समाचार पत्रों की संख्या हज़ारों में है, टी.वी. चैनल, वेब पोर्टल और सोशल मीडिया मंचों पर

हिन्दी पत्रकारिता की गूंज है। लेकिन इस चकाचौंध के बीच हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह विस्तार उस एक बीज से शुरू हुआ, जो 1826 में बोया गया था। आज हिन्दी पत्रकारिता विश्व की सबसे बड़ी भाषाई पत्रकारिताओं में से एक है, लेकिन इसके सामने चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। बाज़ारवाद, टी.आर.पी. की दौड़, सनसनीखेज़ खबरें और राजनीतिक दबाव ने कई बार पत्रकारिता की निष्पक्षता और गरिमा पर सवाल उठाए हैं। फेक न्यूज़ और प्रायोजित खबरों का दौर हिन्दी पत्रकारिता की विश्वसनीयता को चुनौती दे रहा है। ऐसे में हिन्दी पत्रकारिता दिवस हमें आत्ममंथन का अवसर देता है – क्या हम उस साहस, निष्पक्षता और सामाजिक उत्तरदायित्व को बरकरार रख पा रहे हैं, जो 'उदन्त मार्तण्ड' की आत्मा थी?

पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है, और हिन्दी पत्रकारिता इस स्तंभ की रीढ़ है। यह केवल सूचना देने का साधन नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने, अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाने और सत्य को उजागर करने का ज़िम्मा है। आज जब सूचना का प्रवाह इतना तीव्र है, तब पत्रकारिता की ज़िम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। गलत सूचनाओं को रोकना, तथ्यों को परखना और जनता तक सही जानकारी पहुँचाना पत्रकारिता का धर्म है। 'उदन्त मार्तण्ड' का सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है – पत्रकारिता का उद्देश्य केवल व्यापार नहीं, बल्कि समाज का उत्थान और सशक्तिकरण है।

हिन्दी पत्रकारिता दिवस हमें उस ऐतिहासिक क्षण की याद दिलाता है, जब एक व्यक्ति ने असंभव को संभव करने का साहस दिखाया। पंडित जुगल किशोर शुक्ल का योगदान केवल एक समाचार पत्र तक सीमित नहीं था; यह एक भाषा, एक संस्कृति और एक समाज को आवाज़ देने का प्रयास था। उनकी वह मशाल आज भी जल रही है – हर उस पत्रकार के लेखन में, हर उस संपादकीय में, जो सत्य और न्याय के लिए लिखा जाता है। इस दिन हमें यह संकल्प लेना होगा कि हम इस मशाल को बुझने नहीं देंगे। हमें पत्रकारिता को उसकी मूल भावना – निष्पक्षता, साहस और सामाजिक उत्तरदायित्व – के साथ जीवित रखना होगा।

आज हिन्दी पत्रकारिता केवल भारत तक सीमित नहीं है। यह वैश्विक मंचों पर भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। हिन्दी भाषी प्रवासी समुदायों के बीच, डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर, और अंतरराष्ट्रीय चर्चाओं में हिन्दी पत्रकारिता की धमक सुनाई देती है। लेकिन इसकी सार्थकता तभी है, जब यह जनता के हितों को सर्वोपरि रखे, सत्ता से सवाल पूछे, और समाज के कमज़ोर वर्गों की आवाज़ बने। हिन्दी पत्रकारिता दिवस साहस, सच्चाई और संकल्प का एक उत्सव है, लेकिन यह एक ज़िम्मेदारी भी है। यह हमें याद दिलाता है कि शब्दों में वह ताक़त है, जो इतिहास बदल सकती है। जब हिन्दी बोलती है, तो वह केवल एक भाषा नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों की आकांक्षाओं, सपनों और संघर्षों की आवाज़ बन जाती है। इस दिन हम उस पहले पत्रकार को नमन करें, जिन्होंने हिन्दी पत्रकारिता की नींव रखी। हम उस ज्योति को और प्रज्वलित करें, जो 30 मई 1826 को जली थी। क्योंकि जब शब्द जागते हैं, तो वे न केवल इतिहास रचते हैं, बल्कि भविष्य को भी संवारते हैं।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

स्वदेशी निर्मित बी.एफ.एस ने भरा हैं दम...!

आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उठा हैं एक बड़ा कदम,
अभी स्वदेशी निर्मित बी.एफ.एस ने भरा हैं दम।
उन पाँच महिला विज्ञानियों ने विकसित किया है,
मौसम पूर्वानुमान प्रणाली को नया जन्म दिया हैं।
स्थानीय स्तरों मौसम की सटीक माहिती मिलेगी,
कोई नुकसान नहीं होगा हँसी चेहरों पर खिलेगी।

आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उठा हैं एक बड़ा कदम,
अभी स्वदेशी निर्मित बी.एफ.एस ने भरा हैं दम।
छः किलोमीटर के दायरे में मौसम के पूर्वानुमान,
क्षमता हासिल कर भारत दुनिया का पहला देश!
अब बदल जाएगा हर एक शहर का भी परिवेश,
मौसम पूर्वानुमान प्रणाली में अग्रणी हो समावेश।

आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उठा हैं एक बड़ा कदम,
अभी स्वदेशी निर्मित बी.एफ.एस ने भरा हैं दम।
पिछले तीन वर्षों से इस पर चल रहा था ये काम,
भा.उ.क.मौसम विज्ञान संस्थान देते हैं परिणाम।
अभी देशभर में 40 डॉप्लर मौसम रडारों नेटवर्क,
भविष्य में रडारों की संख्या सौ होगी करेंगे वर्क।

आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उठा हैं एक बड़ा कदम,
अभी स्वदेशी निर्मित बी.एफ.एस ने भरा हैं दम।
ये मानसून ट्रैकिंग, उड्डयन, चक्रवात की निगरानी,
आपदा प्रबंध, कृषि, जलमार्ग, रक्षा, बाढ़ न हानि।
बी.एफ.एस से आंधी, तूफान, बारिश की कहानी,
हाँ होंगे सतर्क मिलेगी खूब मदद बरतें सावधानी।
(संदर्भ : पुणे स्थित आइआइटीएम यानी भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान ने यह प्रणाली विकसित की है.)

संजय एम तराणेकर

ह्यूमन राइट्स के चैंपियन एडवोकेट रजत कल्सन पिछले 16 सालों से भारत में जातिवादी मानसिकता और साम्प्रदायिक ताकतों के खिलाफ जंग में संघर्ष कर रहे हैं.

रजत कल्सन

अधिवक्ता रजत कल्सन मानव अधिकारों की सुरक्षा और बचाव के लिए जाने जाते हैं. रजत कल्सन एससी एसटी एक्ट के और समाज से बहिष्कृत किए गए लोगों की अग्रणीय लड़ाई लड़ रहे हैं.

इनके अलावा वकील रजत कल्सन हरियाणा में बहुजन समाज की महिलाओं के खिलाफ हो रहे यौन हिंसा के मामलों में पीड़ित महिलाओं की तरफ से बढ़-चढ़कर पैरवी करते हैं.

रजत कल्सन ने अपने जारी सफर में सैकड़ों मुकदमें लड़े, जिनमें उन्होंने बहुजन समाज की ओर से मजबूत पैरवी कर अपराधियों को जेल की सलाखों के पीछे डाला.

डॉ अंबेडकर के उद्देश और कार्यों को आगे बढ़ा रहीं कई मैग्जीन, अख़बारों, सोशल मीडिया साइट्स, और यूट्यूब चैनलों ने इन्हें अपना आइकॉन के रूप में जगह देते हैं.

रजत कलसन बहुजन समाज के लिए सड़क से लेकर कोर्ट कचहरी और सरकारों के आमने-सामने तक लड़ने भिड़ने को तैय्यार रहते हैं.

इसलिए बहुजन समाज इन्हें अपना हीरो मानता है. रजत कलसन के बेमिसाल संघर्ष के लिए कई राष्ट्रीय पुरस्कार और दिल्ली में इन्हें त्रिरत्न अवॉर्ड से सम्मानित किया गया.

इतना ही नहीं, 2022 में सोशल मीडिया साइट्स पर एक पोस्टर वायरल में इन्हें भारत के अगले डॉ अम्बेडकर से संबोधित किया गया था. जिससे करोड़ों लोगों ने देखा.

रजत कल्सन वही वकील हैं, जिन्होंने मुनमुन दत्ता जैसी बड़ी बॉलीवुड स्टार से लेकर क्रिकेट खिलाड़ी युवराज सिंह जैसी कई बड़ी हस्तियों तक को कोर्ट के चक्कर लगवाए.

मिर्चपुर कांड इनके जीवन का अब तक का सबसे बड़ा केस रहा. जिसमें बहुजन समाज के एक परिवार के घर में हमला कर आग लगा दी थी.

इस क्रूर घटना से परिवार में एक विकलांग लड़की और उसके पिता की मौत हो गई. इस घटना ने पूरे देश को झकझोर दिया.

रजत कल्सन के अथक संघर्ष और आंदोलन से पीड़ितों को न्याय मिला. 12 अपराधियों को जेल की सलाखों के पीछे डाला और यह घटना हिस्ट्री बनी.

रजत कलसन समाज में फैली गैर-बराबरी की जहरीली विचारधारा के खिलाफ़ एक लंबी लड़ाई लड़ रहे हैं.

रजत कल्सन के दमदार जोशीले प्रयास को जातिवादी लोगों का निशाना बना दिया है. आज रजत को जेल के अंदर और बाहर जान से मारने की साज़िश रची जा रही है.

जिसकी ख़बर हरियाणा पुलिस प्रशासन, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग, न्यायालय, पुलिस अधीक्षकों, हिसार रेंज के महानिरीक्षक, हरियाणा के डीजीपी व एडीजीपी, सीआईडी और तमाम एजेंसियों को है. बड़ा सवाल है आख़िर रजत कल्सन को सुरक्षा क्यों नहीं दी जा रही.

बहुजन समाज की सरकार से माँग है, सामाजिक, मानव अधिकार के ऐसे कार्यकर्ता को बिना देरी किए तत्काल सुरक्षा मुहैया करवाई जाए. निवेदन मूक दर्शक ना बने मिलकर आपनी आवाज़ को बुलंद करो.

संघर्ष वो मजबूत आवाज़ है जिसने सिद्ध किया है कि एक व्यक्ति भी समाज में हो रहे अत्याचारों के खिलाफ़ खड़ा हो सकता है, और क्रांति का बिगुल बजा सकता है.

रजत कल्सन
अधिवक्ता एवं दलित मानवाधिकार कार्यकर्ता

अच्छे स्वास्थ्य के लिए तम्बाकू का सेवन छोड़ने का समय

विश्व स्तर पर हर साल 31 मई को तम्बाकू निषेध दिवस मनाया जाता है।

मुख्य उद्देश्य इसके सेवन में शामिल समाज को तम्बाकू के दुष्प्रभावों से अवगत कराना और उन्हें इसके प्रति जागरूक करना तथा इससे दूर रहने के लिए प्रेरित करना है। फ्रेंच फेडरेशन ऑफ कार्डियोलॉजी के एक शोध के अनुसार, 45 या 46 वर्ष की आयु के हृदयाघात के 80 प्रतिशत रोगी तम्बाकू सेवन करने वाले होते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, तम्बाकू उत्पादों के सेवन से हृदय रोग, रक्तचाप और कैंसर जैसी कई तरह की बीमारियाँ होती हैं।

स्वास्थ्य पर प्रभाव:

अंतर्राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण संगठन के अनुसार, तम्बाकू सेवन से होने वाली बीमारियों के कारण दुनिया में हर साल आठ मिलियन लोग मरते हैं और इसके बढ़ते दुष्प्रभावों को देखते हुए, 2030 तक यह मृत्यु दर आठ मिलियन से अधिक होने की उम्मीद है। इसका अधिक मात्रा में सेवन करने वाले लोग उच्च रक्तचाप, हृदय रोग और श्वसन संबंधी बीमारियों से पीड़ित होकर मौत के रास्ते पर चल पड़ते हैं।

विकासशील देशों की स्थिति:

विकासशील देशों में तंबाकू जैसे पदार्थों का सेवन बड़ी मात्रा में किया जाता है। जिसके कारण बड़ी संख्या में लोग तंबाकू के कारण कैंसर से मरते हैं। जिसमें मुंह के कैंसर के सबसे अधिक मामले तंबाकू के कारण होते हैं। राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान के अनुसार, तंबाकू के सेवन से बचना बहुत जरूरी है क्योंकि इससे कैंसर जैसी बीमारियां होती हैं।

दुनिया में तंबाकू का उपयोग:

दुनिया में तंबाकू का उपयोग बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। चीन दुनिया का ऐसा देश है जहां तंबाकू का उपयोग सबसे ज्यादा होता है। इसके बाद भारत का नंबर आता है। हाल के दिनों में युवा पीढ़ी भी इस दौड़ में शामिल हो रही है। हमें तंबाकू के सेवन से दूर रहना चाहिए, यह स्वास्थ्य के लिए अच्छा पदार्थ नहीं है।

विश्व तंबाकू निषेध दिवस 2025 की थीम है:

"अपील को उजागर करना: तंबाकू और निकोटीन उत्पादों पर उद्योग की रणनीतियों को उजागर करना"। यह थीम इस बात पर केंद्रित है कि कैसे तंबाकू और निकोटीन उद्योग नए उपयोगकर्ताओं, विशेष रूप से युवाओं को आकर्षित करने और मौजूदा उपयोगकर्ताओं को आदी बनाए रखने के लिए जोड़-तोड़ वाली रणनीतियों का उपयोग करते हैं। इन रणनीतियों में आकर्षक उत्पाद डिजाइन, आकर्षक स्वाद और ग्लैमराइज्ड मार्केटिंग शामिल हैं। अक्सर हम सोशल मीडिया, फिल्मों आदि में देखते हैं कि लोग तनाव कम करने और अपने जीवन को नष्ट करने के लिए बीड़ी, सिगरेट पीते हैं। तंबाकू के सेवन से मुंह, फेफड़े और पेट के कैंसर के मामलों में वृद्धि हुई है।

हृदय रोगों का सबसे बड़ा कारण:

तंबाकू का सेवन हृदय रोगों का सबसे बड़ा कारण है। तंबाकू के लगातार सेवन से हृदय की धमनियां संकरी हो जाती हैं, जिससे रक्त का प्रवाह ठीक से नहीं हो पाता। जिससे हर अटैक के साथ मौत भी हो जाती है। तंबाकू में निकोटीन के साथ-साथ उत्तेजक पदार्थ अधिक होते हैं। धूम्रपान से अच्छे कोलेस्ट्रॉल की मात्रा कम हो जाती है। खराब कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ना स्वाभाविक है। जो हृदय की कार्यप्रणाली में बाधा डालता है, हृदय रोगों का कारण बनता है। इसके अलावा अनिद्रा, गैस की समस्या भी होती है।

तंबाकू के सेवन को लेकर चेतावनी:

माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने तंबाकू निर्माण उद्योग को निर्देश देते हुए आदेश जारी किया है कि इसके पैकेट पर इसके हानिकारक प्रभावों को मोटे अक्षरों में लिखा जाए। स्कूल, कॉलेज व अन्य शिक्षण संस्थानों की सीमा के बाहर इसकी बिक्री पर रोक लगाई गई है। शिक्षण संस्थानों के 500 मीटर के दायरे में तंबाकू मुक्त क्षेत्र घोषित किया गया है। नाबालिगों को तंबाकू बेचना पूरी तरह प्रतिबंधित है। पंजाब शिक्षा विभाग ने सिख संस्थानों को तंबाकू मुक्त बनाने के लिए विशेष तौर पर नाकुर अधिकारी नियुक्त किया है। इस संबंध में नाकुर अधिकारी ऋषि कुमार ने बताया कि विद्यार्थियों को समय-समय पर तंबाकू के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक किया जाता है। तंबाकू से बचने के घरेलू उपाय: अगर व्यक्ति में इच्छाशक्ति है तो वह तंबाकू से छुटकारा पा सकता है। युवाओं व विद्यार्थियों को इससे दूर रहना चाहिए। हमें सामाजिक, शैक्षणिक, धार्मिक संस्थानों व सरकार का भी सहयोग करना होगा। इससे छुटकारा पाने के लिए हर संभव प्रयास करना जरूरी है। इसके लिए कुछ घरेलू उपाय किए जा सकते हैं। तंबाकू से छुटकारा पाने के लिए 50 ग्राम सौंफ, 50 ग्राम अजवाइन लेकर उसे तवे पर भून लें। इसमें थोड़ा नींबू का रस व काला नमक मिलाकर इसकी डिब्बी में डालकर रख लें। जब भी सिगरेट या तंबाकू की तलब लगे तो इसके कुछ दाने मुंह में डाल लें। इससे बहुत लाभ होगा। अगर समस्या बढ़ जाए तो डॉक्टर की सलाह लें और काम के लिए देर रात तक जागने के लिए तंबाकू का सेवन न करें। आइये स्वस्थ रहें और स्वास्थ्य के विकास के लिए सजग रहें।

तंबाकू से दोस्ती मौत की सवारी है
तंबाकू नहीं, जीवन के लिए हाँ।

जय हिंद

मा. अवनीस लोंगोवाल
जिला बरनाला (पंजाब)

धान का एमएसपी 3000 रुपये होगा: समाजवादी पार्टी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर,: हमेशा की तरह एक बार फिर केंद्र सरकार ने धान के एमएसपी में महज कुछ रुपये की बढ़ोतरी कर ओडिशा जैसे कृषि प्रधान राज्य को लॉलीपॉप दिया है। बुधवार को 25-26 खरीफ सीजन के लिए धान समेत 14 कृषि जिंसों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एसएसपी) में बढ़ोतरी की गई। ज्वार, कपास, बाजरा और ज्वार जैसी फसलों के एसएसपी में जहां उल्लेखनीय बढ़ोतरी की गई है, वहीं धान के न्यूनतम समर्थन मूल्य में महज 69 रुपये प्रति बिंतल की बढ़ोतरी की गई है, जिस पर समाजवादी पार्टी ओडिशा के प्रदेश अध्यक्ष ने नाराजगी जताई है।

उन्होंने कहा कि ओडिशा पिछले 8 वर्षों से धान का एएसपी कम से कम 2930 रुपये करने की मांग कर रहा है। इस संबंध में राज्य विधानसभा में सर्वदलीय प्रस्ताव भी पारित कर केंद्र सरकार को सौंपा जा चुका है। लेकिन केंद्र सरकार ओडिशा की इस मांग को नहीं सुन रही है।

राज्य सरकार ने पिछले खरीफ सीजन से धान के एसएसपी के लिए 3100 रुपये प्रति हेक्टेयर का भुगतान करना शुरू किया है। इसमें से धान के एमएसपी के लिए 2300 रुपये और इनपुट समर्थन के लिए 800 रुपये का भुगतान किया जा रहा है। नतीजतन, ओडिशा के खजाने पर इसके लिए लगभग 5862 करोड़ रुपये का अतिरिक्त बोझ पड़ा है। अगर केंद्र सरकार धान के एमएसपी में 100 रुपये की बढ़ोतरी करती, तो राज्य सरकार को इनपुट समर्थन के लिए जो अतिरिक्त बोझ उठाना पड़ रहा है, उससे काफी हद तक राहत मिलती। गौरतलब है कि 25 मार्च 2017 को ओडिशा विधानसभा में धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य बढ़ाकर 2930 रुपये करने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया था। भाजपा ने भी इस पर अपनी सहमति जताई है। अब केंद्र सरकार ने कालेधन पर 820 रुपये, कपास पर 589 रुपये की बढ़ोतरी की है; लेकिन जब धान की बात आती है, तो सरकार ने किसानों को धोखा दिया। दूसरी ओर, सरकार ने धान के अलावा अन्य खरीफ फसलों के एमएसपी में भी बढ़ोतरी की है। काले चने के एमएसपी में जहां 820 रुपये प्रति किलोग्राम की बढ़ोतरी की गई है, वहीं कपास में 589 रुपये, तिस्स में 579 रुपये,

मंडिया में 596 रुपये, चाइना बादाम में 480 रुपये, सूरजमुखी में 441 रुपये, सोयाबीन में 436 रुपये, हरड़ में 450 रुपये, बीड़ी में 400 रुपये आदि की बढ़ोतरी की गई है। लेकिन धान के प्रति इतनी उदासीनता क्यों है, समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष शिव हाथी ने पूछा। हर साल मजदूरी के साथ पेट्रोल, डीजल और खाद, कीटनाशक के दाम बढ़ रहे हैं। लेकिन धान के न्यूनतम समर्थन मूल्य में उस हिसाब से बढ़ोतरी नहीं की जा रही है। जो किसानों के साथ मजाक है। शिव हाथी यादव ने सरकार से पुरजोर मांग की है कि धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य बोनस के साथ कम से कम 3000 रुपये किया जाए, लघु एवं सीमांत किसानों के कृषि ऋण माफ किए जाएं, किसानों को आवश्यक कृषि इनपुट जैसे एफक्यू गुणवत्ता वाले बीज, खाद, कीटनाशक अनुदानित मूल्य पर उपलब्ध कराए जाएं तथा अब धान खरीद सीजन में कम दबाव की बारिश और मानसून के आगमन के कारण धान की फसलों को काफी नुकसान हो रहा है। इसलिए सरकार द्वारा तय एफक्यू के 16 प्रतिशत मानक को कम करके किसानों का सारा धान बिना किसी विवाद के खरीदा जाए तथा क्षतिग्रस्त फसलों की क्षति एवं नुकसान का आकलन कर उचित मुआवजा व्यवस्था में तेजी लाई जाए।

बदलते मौसम की मार: क्या हम तैयार हैं? (बदलता मौसम, बढ़ता ख़तरा: जागरूकता ही बचाव है)

बदलते मौसम की दस्तक हमारे जीवन में केवल हवा, तापमान, या बारिश के रूप में नहीं आती, बल्कि यह अपने साथ ऐसी चुनौतियाँ भी लाती है, जो हमारी सेहत को चुपके से प्रभावित कर सकती हैं। गर्मी की तपिश, बरसात की उमस, या सर्दी की ठिठुरन—हर मौसम अपने साथ बीमारियों का एक नया काफिला लाता है। डेंगू, मलेरिया, फ्लू, निमोनिया, और त्वचा संबंधी रोग मौसम के बदलते मिजाज के साथ हमारे जीवन में दबे पांव प्रवेश करते हैं। ये बीमारियाँ न उम्र देखती हैं, न अमीर-गरीब का भेद। सवाल यह नहीं कि मौसम बदल रहे हैं; सवाल यह है कि क्या हम इनके साथ आने वाली स्वास्थ्य चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार हैं? या फिर हम बीमारी के दरवाजा खटखटाने का इंतजार करते हैं, ताकि बाद में इलाज के लिए भागदौड़ करें?

गर्मी का मौसम आते ही लू, डिहाइड्रेशन, फूड पॉइजनिंग, और त्वचा के संक्रमण आम हो जाते हैं। तेज धूप और पसीने के कारण शरीर में पानी की कमी हो जाती है, जिससे थकान, चक्कर, और गंभीर मामलों में किडनी संबंधी समस्याएँ तक हो सकती हैं। गर्मियों में खाने-पीने की चीजें जल्दी खराब हो जाती हैं, जिससे पेट की बीमारियाँ बढ़ती हैं। बरसात का मौसम मच्छरों के लिए स्वर्ग बन जाता है, जिससे डेंगू, मलेरिया, और चिकनगुनिया जैसी बीमारियाँ चरम पर होती हैं। उमस भरे माहौल और गीले कपड़ों के कारण फंगल इन्फेक्शन और त्वचा की एलर्जी तेजी से फैलती हैं। सर्दियों में ठंडी हवाएँ जुकाम, खांसी, वायरल बुखार, और निमोनिया को न्योता देती हैं। अस्थमा और हृदय रोगों से पीड़ित लोगों के लिए यह मौसम खासा जोखिम भरा होता है। बदलता तापमान और हवा में नमी का स्तर हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर करता है, जिससे हम वायरस और बैक्टीरिया के प्रति ज्यादा संवेदनशील हो जाते हैं।

दुखद है कि हम में से अधिकांश लोग इन मौसमी बीमारियों को गंभीरता से नहीं लेते। मौसम बदलते ही हम कपड़ों में हल्का बदलाव या खानपान में थोड़ा परहेज कर लेते हैं, लेकिन स्वास्थ्य के प्रति दीर्घकालिक सजगता की कमी साफ दिखती है। एक साधारण जुकाम को हम "मौसम का असर" कहकर टाल देते हैं, लेकिन यही लापरवाही कई बार गंभीर बीमारियों का रूप ले लेती है। कोविड-19 महामारी ने हमें सिखाया कि छोटी

सी लापरवाही भी बड़े स्वास्थ्य संकट का कारण बन सकती है। फिर भी, हमारी आदतें नहीं बदलतीं। कितने लोग मौसम बदलने से पहले मच्छरों से बचाव की व्यवस्था करते हैं? कितने लोग गर्मी में पर्याप्त पानी या सर्दी में गर्म कपड़ों जैसे बुनियादी कदम उठाते हैं? यह लापरवाही न केवल हमें, बल्कि हमारे परिवार और समुदाय को भी खतरे में डालती है।

अब समय है कि हम मौसमी बीमारियों के प्रति अपनी सोच बदलें। यह प्रतिक्रियात्मक रवैये का नहीं, बल्कि पूर्व-तैयारी का समय है। हमें अपनी जीवनशैली में बदलाव लाने होंगे जो हमें हर मौसम के लिए तैयार रखें। संतुलित आहार, जिसमें मौसमी फल, सब्जियाँ, और प्रोटीन शामिल हों, नियमित व्यायाम, पर्याप्त नींद, और तनाव से दूरी—ये हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता के आधारस्तंभ हैं। गर्मियों में नारियल पानी, नींबू पानी, और मौसमी फल शरीर को हाइड्रेट रखते हैं। सर्दियों में गर्म सूप, अदरक, और तुलसी शरीर को गर्मी और ताकत देते हैं। बरसात में साफ-सफाई, उबला पानी, और मच्छरों से बचाव के उपाय जरूरी हैं। ये छोटे कदम हमें बीमारियों से बचाने में बड़ा काम करते हैं।

जागरूकता इस दिशा में महत्वपूर्ण है। लोगों को यह जानना जरूरी है कि किस मौसम में कौन सी बीमारियाँ फैलती हैं और उनसे बचने के उपाय क्या हैं। बरसात में पानी जमा न होने देना, मच्छरदानी का उपयोग, और कीटनाशकों का छिड़काव डेंगू और मलेरिया से बचाव में कारगर है। गर्मियों में धूप से बचने के लिए छाता, टोपी, और हल्के रंग के कपड़े पहनने चाहिए। सर्दियों में बच्चों और बुजुर्गों को फ्लू वैक्सीन देना जरूरी है। स्कूलों, कॉलेजों, और कार्यस्थलों पर जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, जहाँ स्वास्थ्य सुविधाएँ सीमित हैं, ऐसी जानकारी जीवन रक्षक हो सकती है।

सरकार और स्वास्थ्य संस्थानों की जिम्मेदारी भी महत्वपूर्ण है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को मौसमी बीमारियों से निपटने के लिए सुसज्जित करना होगा। आवश्यक दवाइयाँ, जांच सुविधाएँ, और प्रशिक्षित डॉक्टरों की उपलब्धता सुनिश्चित होनी चाहिए। जागरूकता अभियान गाँव-गाँव और शहर-शहर तक पहुँचने चाहिए। रेडियो, टीवी, सोशल मीडिया, और पोस्टरों के जरिए सही जानकारी दी जा सकती है। कोविड-19 के दौरान दिखाई गई तत्परता मौसमी बीमारियों के लिए भी दिखानी होगी। शुरुआती पहचान और इलाज से न केवल मरीज की जान बच सकती है, बल्कि स्वास्थ्य सेवाओं पर आर्थिक बोझ भी कम होगा।

मौसम का बदलना प्राकृतिक है, लेकिन जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम के पैटर्न अनिश्चित हो गए हैं। बेमौसम बारिश और असामान्य गर्मी नई बीमारियों को जन्म दे रही हैं। ऐसे में हमारी तैयारी दीर्घकालिक होनी चाहिए। स्वच्छ पानी, साफ-सफाई, और नियमित स्वास्थ्य जांच जैसी आदतें हमें हर मौसम में सुरक्षित रखेंगी। यह हम सबकी जिम्मेदारी है कि हम खुद को, अपने परिवार, और समुदाय को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करें। मौसम का बदलना उसका स्वभाव है, लेकिन बीमारियों से जूझना हमारा स्वभाव नहीं होना चाहिए। सही समय पर सही कदम और मौसम के अनुकूल जीवनशैली हमें इन चुनौतियों से बचा सकती है। मौसम को रोकना हमारे बस में नहीं, लेकिन उसकी मार से बचना हमारे हाथ में है। लापरवाही को अलविदा कहकर सजगता अपनाएँ। अगर हम तैयार हैं, तो कोई मौसम हमें हरा नहीं सकता। यह तैयारी हमारी सबसे बड़ी ताकत है, और यही आज की सबसे बड़ी जरूरत।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023